संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री; तथा सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विजय गोयल): डिप्टी चेयरमैन सर, एक्सटर्नल अफेयर्स मिनिस्टर, सुषमा स्वराज जी का एक बिल है, for leave to withdraw a Bill to amend the Nalanda University Act, तो वह पहले ले लिया जाए।

श्री उपसभापति: ठीक है। माननीया मंत्री जी।

GOVERNMENT BILLS

The Nalanda University (Amendment) Bill, 2013

विदेश मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज): महोदय, मैं प्रस्ताव करती हूं:

कि नालंदा विश्वविद्यालय अधिनियम, 2010 का संशोधन करने वाले विधेयक को वापस लेने की अनुमति दी जाए।

The question was put and the motion was adopted.

श्रीमती सुषमा स्वराज: महोदय, मैं विधेयक को वापस लेती हूं।

STATUTORY RESOLUTION*

Proclamation issued by the President on 19th December, 2018 under Article 356 of the Constitution of India in relation to the State of Jammu and Kashmir — *Contd.*

श्री उपसभापति: कल माननीय गृह मंत्री जी के Statutory Resolution पर जम्मू-कश्मीर पर जो बहस हो रही थी, उस पर आज माननीय नेता विरोधी दल बहस को आगे बढ़ाएंगे।

विपक्ष के नेता (श्री गुलाम नबी आज़ाद): माननीय डिप्टी चेयरमैन साहब, सबसे पहले मैं AIADMK और DMK के माननीय सदस्यों का आभार प्रकट करता हूं। उन्होंने कश्मीर जैसे सेंसेटिव इश्यू और बॉर्डर स्टेट के लोगों की भावनाओं को दिमाग में रखते हुए यह निर्णय लिया कि जब तक इस सदन में कश्मीर पर बहस होगी, तब तक वे जेल में नहीं आएंगे, इसके लिए मैं उनका धन्यवाद करता हूं।

सर, जब भी हम कश्मीर के किसी मुद्दे पर बात करें, तो उसका इतिहास जानना बहुत जरूरी है और जब तक इतिहास नहीं जानेंगे, तो वे सरकारें हमेशा गलती करेंगी, जो इतिहास से जुड़ी नहीं हैं। आप, या कोई भी दूसरी सरकारें, जो बीच में आईं, वर्ष 1947 से लेकर आज तक, उनको

* Further discussion on the following Resolution moved by Shri Rajnath Singh, Minister of Home Affairs on the 2nd of January, 2019 Continued.

शायद कश्मीर के इतिहास के बारे में ज्यादा जानकारी नहीं थी, पहले आपको यह देखना होगा कि कश्मीरियों का रोल क्या रहा। सबसे बड़ा मुद्दा, जो वर्ष 1946 में उठा था और जिसने असली शक्ल 1947 में ली, वह था — Two-Nations Theory. उस वक्त, कौन-सा ऐसा स्टेट था, जिसमें मुस्लिम majority थी? आज वह वहां 70 परसेंट है, उस वक्त वहां यह 90 परसेंट थी, क्योंकि उस वक्त PoK भी जम्मू-कश्मीर का हिस्सा था। जिस प्रांत में 90 प्रतिशत आबादी हो, वह हिन्दुस्तान के साथ रहना चाहे और पाकिस्तान न जाना चाहे, क्या यह बहुत अद्भुत बात नहीं है, अपने आप में बहुत बड़ी बात नहीं है? लेकिन, इसकी तरफ ध्यान नहीं दिया जाता। जब महाराजा और गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के बीच यह तय हुआ, Instrument of Accession हुआ, तो कितनी बड़ी फौज, एक छोटी-सी टुकड़ी वहां जा पाई। जहाज ही कितना बड़ा था! एक 50-सीटर वाला छोटा जहाज वहां जा सकता था। उसमें कितनी फौज जा सकती थी और उस फौज के पास कितने बड़े हथियार हो सकते थे? जहां पर कश्मीर एयरपोर्ट है, वहां पर पाकिस्तान की फौज सिविल ड्रेस में पहुंच गई थी। उन्होंने वह PoK वाला हिस्सा तो ले ही लिया था, लेकिन वे बारामूला, कुपवाड़ा तथा श्रीनगर होते हुए बडगाँव डिस्ट्रिक्ट, जहां एयरपोर्ट है, वहां तक पहुंच गए थे। लेकिन उन फौजियों के साथ मिलकर किसने उन पाकिस्तानी फौज को, रज़ाकार कहिए, Volunteers कहें या जो भी कहें, किसने किसको खदेड़ा? कश्मीर की जनता ने खदेड़ा। किसी के पास हथियार था, किसी के पास तलवार थी और किसी के पास डंडा था, क्योंकि उस तरफ भी ज्यादा हथियार नहीं थे और आर्मी से कई गुना ज्यादा कश्मीरी लोगों ने मिलकर उनको खदेड़ लिया, वैली से खदेड़ दिया। वैली के बाहर पीओके नहीं जा पाए, क्योंकि terrain बहुत डिफिकल्ट है। जो स्टेट मुश्लिम मेजॉरिटी है, पॉपुलेशन है, जब लोगों ने उसको पूरा अधिकार दिया कि कहीं भी जा सकते हो तो वे हिन्दुस्तान के साथ रहे। अगर वहां के लोग आज हमसे नाराज़ हैं तो कहीं न कहीं हम सब की, हम सब हिन्दुस्तानियों की, मैं पार्टी की बात नहीं करूंगा, बीजपी और कांग्रेस की बात नही करूंगा, हम जो 130 करोड़ की आबादी हैं। कहीं न कहीं हमसे गलतियां हुई हैं, कमियां हुई हैं और कमज़ोरियां हुई हैं तो क्या हम उनको ठीक नहीं करेंगे? उसके लिए प्रयास करना ज़रूरी है और सबसे ज्यादा प्रयास यह हो सकता है। प्रयास वही करेगा जिसके अंदर दिल हो। वह धड़कना चाहिए। वह अगर एक धर्म के लिए धड़केगा तो आप इंसाफ नहीं दे पाएंगे, वह दिल सिर्फ अपनी पार्टी के लिए धड़केगा तो आप इंसाफ नहीं दे पाएंगे, अपने एक रीजन के लिए धड़केगा तो आप इंसाफ नहीं दे पाएंगे। वह दिल हर देशवासी के लिए धड़कना चाहिए। उसकी तकलीफ़ को अपनी तकलीफ़ समझना चाहिए, उसके दुख और उसकी पीड़ा को अपना दुख और अपनी पीड़ा समझना चाहिए। मुझे खुशी है कि हमारी पार्टी इस पीड़ा और दुख को समझती थी। नेहरू जी के ज़माने से भी और इंदिरा जी के ज़माने से हम दुख और पीड़ा को समझते थे, जिसको आप appeasement कहते हैं, आपके शब्दों में वह appeasement है, हमारे शब्दों में अपने देशवासियों की पीड़ा और दुख को समझना है। अब समझ-समझ की बात है। किसको वह appeasement नज़र आता है, किसको उसकी आंखों में आंसू नज़र आते हैं और किसको उसका दुख और पीड़ा नज़र आती है? यहां से मतभेद शुरू हो जाता है, क्योंकि कश्मीर के दूर जाने के लिए आपकी पार्टी के दुष्प्रचार ने भी काम किया है, 70 साल से निरंतर आग में तेल डालने का काम किया है। उसमें कोई

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

कमी नहीं रही है, बल्कि आपने जो देश की empire बनायी, यह कश्मीर को गालियां और कश्मीरियों को गालियां देकर आपका नेशनल लेवल पर अब यह empire बनी। यह कोई डिवलेपमेंट, विकास के नाम पर नहीं बनी थी, एक नफरत के आधार पर बनी थी, लेकिन उसके बावजूद कश्मीर की जनता और कश्मीर के लोग हिन्दुस्तान को अपना देश मानते थे और अभी भी majority मानती है। हमने, हमारी सक्सेसिव गवर्नमेंट ने प्रयास किया, इंदिरा गांधी जी ने शेख अब्दुल्ला के साथ accord किया। वर्ष 1975 में कांग्रेस की 3/4 majority थी, लेकिन शेख अब्दुल्ला साहब को, जो उस वक्त के सबसे tallest leader थे, sub-continent में मुसलमानों के सबसे बड़े लीडर थे और कश्मीर के भी थे, उनको national mainstream में लाने के लिए और कश्मीर का समाधान, क्योंकि कश्मीर के लोग उनको चाहते थे, लीडर्स चाहते थे, उनके हवाले सरकार की और पूरी गवर्नमेट को कहा कि आप छोड़ दो, यहां तक कि नेशनल कॉन्फ्रेंस के लीडर्स, क्योंकि वह एमएलए-एमएलसी नहीं थे, उनके लिए अपने एमएलएज़ और एमएलसीज़ को कहा कि उनके लिए जगह खाली करो और unopposed चुन कर लाओ। यह होता है देश के लिए कुर्बानी देना और देश के लोगों की पीड़ा सुनना और उसका समाधान निकालना। उसके बाद राजीव गांधी जी ने 1986 में Rajiv Gandhi-Farooq Accord किया और वह डेवलपमेंट के आधार पर था। कश्मीर के लोगों को अपने साथ रखने के लिए सिर्फ सेंटीमेंट्स काफी नहीं हैं, वहां डेवलपमेंट भी होना चाहिए, वहां इम्प्लॉयमेंट भी होना चाहिए, वहां बिजली के प्रोजेक्ट्स भी होने चाहिए और वहां सड़कें भी होनी चाहिए। मैं उस मीटिंग में मौजूद था। मैं उनके साथ यहां से गया था। ये तमाम चीज़ें हुई। दुर्भाग्य से वर्ष 1989 के नवंबर में मिलिटेंसी जम्मू-कश्मीर में शुरू हुई और स्टेट में भी शुरू हुई। जम्मू के कुछ डिस्ट्रिक्टस में भी कश्मीर से कम मिलिटेंसी नहीं थी और सबसे बुरे जो दो परिणाम हुए हैं - एक तो वर्ष 1990 में हमारे कश्मीरी पंडित भाई डर से, खौफ से, दहशत से वैली से निकले। **(व्यवधान)**

†

قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی آزاد) : مانئے ڈپٹی چیئرمین صاحب، سب سے پہلے میں اے.آئی.ڈی.ایم.کے. اور ڈی.ایم.کے. کے مانئے سدسیوں کا آبھار پرکٹ کرتا ہوں۔ انہوں نے کشمیر جیسے سینسٹو ایشو اور بارڈر اسٹیٹ کے لوگوں کی بھاوناؤں کو دماغ میں رکھتے ہوئے یہ فیصلہ لیا کہ جب تک اس سدن میں کشمیر پر بحث ہوگی، تب تک وہ ویل میں نہیں آئیں گے، اس کے لئے میں ان کا دھنیواد کرتا ہوں۔

†Transliteration in Urdu script.

سر، جب بھی ہم کشمیر کے کسی مدّعے پر بات کریں، تو اس کا اتہاس جاننا بہت ضروری ہے اور جب تک اتہاس نہیں جانیں گے، تو وہ سرکاریں ہمیشہ غلطی کریں گی، جو اتہاس سے جڑی نہیں ہیں۔ یہ ضرورت نہیں ہے کہ آپ، کوئی بھی دوسری سرکاریں، جو بیچ میں آئیں، جن کو شاید کشمیر کے اتہاس کے بارے میں زیادہ جانکاری نہیں تھی، سال 1947 سے لے کر آج تک، پہلے آپ کو یہ دیکھنا ہوگا کہ کشمیریوں کا رول کیا رہا۔ سب سے بڑا مدّعا، جو سال 1946 میں اٹھا تھا اور جس نے اصلی شکل 1947 میں لی، وہ تھا ٹو-نیشن-تھیوری۔ اس وقت، کون سا ایسا اسٹیٹ تھا، جس میں مسلم میجورٹی تھی؟ آج یہ، وہاں ستّر فیصد ہے، اس وقت وہاں یہ نوّے فیصد تھی، کیوں کہ اس وقت پی.او.کے. بھی جموں-کشمیر کا حصہ تھا۔ جس پرانت میں نوّے فیصد آبادی ہو، وہ ہندوستان کے ساتھ رہنا چاہے اور پاکستان نہ جانا چاہے، کیا یہ بہت تعجّب کی بات نہیں ہے، اپنے آپ میں بہت بڑی بات نہیں ہے؟ لیکن، اس کی طرف دھیان نہیں دیا جاتا۔ جب مہاراجہ اور گوورنمینٹ آف انڈیا کے بیچ یہ طے ہوا، Instrument of Accession ہوا، تو کتنی بڑی فوج، ایک چھوٹی سی ٹکڑی وہاں جا پائی۔ جہاز ہی کتنا بڑا تھا! ایک پچاس-سیٹر والا چھوٹا جہاز وہاں جا سکتا تھا۔ اس میں کتنی فوج جا سکتی تھی اور اس فوج کے پاس کتنے بڑے ہتھیار ہو سکتے تھے؟ جہاں پر کشمیر ایئرپورٹ ہے، وہاں تک پاکستان کی فوج سول ڈریس میں پہنچ گئی تھی۔ انہوں نے یہ پی.او.کے. والا حصہ تو لے ہی لیا تھا، لیکن وہ بارہمولہ، کپواڑاہ و سرینگر

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

ہوتے ہوئے بڈگاؤں ڈسٹرکٹ، جہاں ایئرپورٹ ہے، وہاں تک پہنچ گئے تھے۔ لیکن ان فوجیوں کے ساتھ مل کر کس نے ان پاکستانی فوج کو، رضاکار کہئے، وولنٹئیرکہیں یا جو بھی کہیں، کس نے ان کو کھدیڑا؟ کشمیر کی جنتا نے کھدیڑا۔ کسی کے پاس ہتھیار تھا، کسی کے پاس تلوار تھی اور کسی کے پاس ڈنڈا تھا، کیوں کہ اس طرف بھی زیادہ ہتھیار نہیں تھے اور آرمی سے کئی گنا زیادہ کشمیری لوگوں نے مل کر ان کو کھدیڑ لیا، ویلی سے کھدیڑ دیا۔ ویلی سے باہر پی۔او۔کے۔ نہیں جا پائے، کیوں terrain بہت ڈفیکلٹ ہے۔ جو اسٹیٹ مسلم میجورٹی ہے، پاپولیشن ہے، جب لوگوں نے اس کو پورا ادھیکار دیا کہ کہیں بھی جا سکتے ہو تو وہ ہندوستان کے ساتھ رہے۔ اگر وہاں کے لوگ آج ہم سے ناراض ہیں تو کہیں نہ کہیں ہم سب کی، ہم سب ہندوستانیوں کی، میں پارٹی کی بات نہیں کروں گا، بی۔جے۔پی۔ اور کانگریس کی بات نہیں کروں گا، ہم جو 130 کروڑ کی آبادی ہیں۔ کہیں نہ کہیں ہم سے غلطیاں ہوئی ہیں، کمیاں ہوئی ہیں اور کمزوریاں ہوئی ہیں تو کیا ہم ان کو ٹھیک نہیں کریں گے؟ اس کے لئے کوشش کرنا ضروری ہے اور سب سے زیادہ کوشش یہ ہو سکتی ہے، کوشش وہی کرے گا جس کے اندر دل ہو۔ وہ دھڑکنا چاہئے۔ وہ اگر ایک دھرم کے لئے دھڑکے گا تو آپ انصاف نہیں دے پائیں گے، وہ دل صرف اپنی پارٹی کے لئے دھڑکے گا تو آپ انصاف نہیں دے پائیں گے، اپنے ایک ریجن کے لئے دھڑکے گا تو آپ انصاف نہیں دے پائیں گے۔ وہ دل ہر دیش واسی کے لئے دھڑکنا چاہئے۔ اس کی تکلیف کو اپنی تکلف سمجھنا چاہئے، اس کے دکھ اور اس کی پیڑا کو اپنا دکھ اور اپنی پیڑا سمجھنا

چاہئے۔ مجھے خوشی ہے کہ ہماری پارٹی اس پیڑا اور اس دکھ کو سمجھتی تھی۔ نہرو جی کے زمانے سے بھی اور اندرا جی کے زمانے سے ہم دکھ اور پیڑا کو سمجھتے تھے، جس کو آپ appeasement کہتے ہیں، آپ کے شبدوں میں وہ appeasement ہے، ہمارے شبدوں میں اپنے دیش واسیوں کی پیڑا اور دکھ کو سمجھنا ہے۔ اب سمجھ سمجھ کی بات ہے۔ کس کو وہ appeasement نظر آتا ہے، کس کو اس کی آنکھوں میں آنسو نظر آتے ہیں اور کس کو اس کا دکھ اور پیڑا نظر آتا ہے؟ یہاں سے مدبھید شروع ہو جاتا ہے، کیوں کہ کشمیر کے دور جانے کے لئے آپ کی پارٹی کے دشپرچار نے بھی کا کیا ہے، ستر سال سے لگاتار آگ میں تیل ڈالنے کا کام کیا ہے۔ اس میں کوئی کمی نہیں رہی ہے، بلکہ آپ نے جو دیش کی امپائر بنائی، وہ کشمیر کو گالیاں اور کشمیریوں کو گالیاں دے کر آپ کا نیشنل لیول پر اب یہ ایمپائر بنا۔ یہ کوئی ڈیولپمینٹ، وکاس کے نام پر بنی ہے، ایک نفرت کے آدھار پر بنی تھی، لیکن اس کے باوجود کشمیر کی جنتا اور کشمیر کے لوگ ہندوستان کو اپنا دیش مانتے تھے، اور ابھی بھی میجورٹی مانتی ہے۔ ہم نے، ہماری سکمیسو گوورنمینٹ نے پریاس کیا، اندرا گاندھی جی نے شیخ عبداللہ کے ساتھ ایکورڈ کیا۔ سال 1975 میں کانگریس کی ⅔ میجورٹی تھی، لیکن شیخ عبداللہ صاحب کو، جو اس وقت کے سب سے ٹالیسٹ لیڈر تھے، sub-continent میں مسلمانوں کے سب سے بڑے لیڈر تھے اور کشمیر کے بھی تھے۔ ان کو نیشنل مین اسٹریم میں لانے کے لئے اور کشمیر کا سمادھان، کیوں کہ کشمیر کے لوگ ان کو چاہتے تھے، لیڈرس چاہتے تھے، ان کے

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

حوالے سرکار کی اور پوری گوورنمینٹ نے کہا کہ آپ چھوڑ دو، یہاں تک کہ نیشنل کانفرنس کے لیڈرس، کیوں کہ وہ ایم.ایل.اے، ایم.ایل.سی نہیں تھے، ان کے لیے اپنے ایم.ایل.ایز. اور ایم.ایل.سیز. کو کہا کہ ان کے لئے جگہ خالی کرو اور unopposed چناکر لاؤ. یہ ہوتا ہے دیش کے لئے قربانی دینا اور دیش کے لوگوں کی پیڑا سننا اور اس کا سمادھان نکالنا. اس کے بعد راجیو گاندھی جی نے 1986 میں راجیو گاندھی-فاروق ایکورڈ کیا اور وہ ڈیولپمینٹ کے آدھار پر تھا. کشمیر کے لوگوں کو اپنے ساتھ رکھنے کے لئے صرف سینٹیمینٹس کافی نہیں ہیں، وہاں ڈیولپمینٹ بھی ہونا چاہئے، وہاں امپلائمینٹ بھی ہونا چاہئے. وہاں بجلی کے پروجیکٹس بھی ہونے چاہئیں اور وہاں سڑکیں بھی ہونی چاہئیں.

میں اس میٹنگ میں موجود تھا. میں ان کے ساتھ یہاں سے گیا تھا. یہ تمام چیزیں ہوئی. بدقسمتی سے سال 1989 کے نومبر میں ملیٹینسی جموں کشمیر میں شروع ہوئی اور اسٹیٹ میں بھی شروع ہوئی. جموں کے کچھ ڈسٹرکٹس میں بھی کشمیر سے کم ملیٹینسی نہیں تھی اور اس کے سب سے برے جو دو نتیجے ہوئے ہیں — ایک تو سال 1990 میں ہمارے کشمیری پنڈت بھائی ڈر سے، خوف سے، دہشت سے ویلی سے نکلے ...(مداخلت)...

श्री शमशेर सिंह मन्हास (जम्मू-कश्मीर) : सर, मैं इसको ...**(व्यवधान)**...

श्री गुलाम नबी आज़ाद: आप अपनी स्पीच ...**(व्यवधान)**... आप अपनी स्पीच में बोलिए। ...**(व्यवधान)**... मैं आपको रोक नहीं रहा हूं।

† **جناب غلام نبی آزاد :** سر آپ اپنی اسپیچ۔۔(مداخلت)۔۔ آپ اپنی اسپیچ میں بولنے ۔۔(مداخلت)۔۔ میں آپ کو نہیں رہا ہوں۔

श्री उपसभापति: कृपया आप बैठें। ...**(व्यवधान)**... प्लीज़ ...**(व्यवधान)**... प्लीज़ ...**(व्यवधान)**... माननीय नेता विपक्ष के अलावा कोई हस्तक्षेप करेगा, तो ...(व्यवधान)... उनकी बात रिकॉर्ड में नहीं जाएगी। ...**(व्यवधान)**...

श्री गुलाम नबी आज़ाद: आप सबको मौका मिलेगा, लेकिन मैं नहीं चाहूंगा कि आप बीच में बोलें। आपको जो कहना है, आप कहिए। आप कहने के लिए फ्री हैं। सबसे बड़ी दुखद चीज़ यह हुई है कि कश्मीरी मुसलमान और कश्मीरी पंडित एक खून हैं, उनकी एक ज़ुबान है, एक भाषा है, एक खाना-पीना है और जब मैं खून कहता हूं, तो मैं ज़रा इसको हिस्ट्री में 600 साल पहले ले जाता हूं। कश्मीर में इस्लाम सिर्फ 600 साल पहले आया, तो उसका मतलब है, हमारा एक खून है, वह अलग हो गया। आप सियासत करें, लेकिन हम उसको अपना खून समझते हैं। वह हमसे अलग चला गया। वह दूसरी बात है, मैं उसमें नहीं जाना चाहता हूं। बड़ी तल्ख़ी होगी। उनको किसने exploit किया, मैं उसमें नहीं जाना चाहता हूं। हम उस दिन के लिए इंतज़ार कर रहे हैं। कश्मीर, कश्मीरी-पंडितों के बगैर incomplete है और कश्मीर की हिस्ट्री incomplete है, यह मैं आपको बताना चाहता हूं, चाहे आप कुछ भी राजनीति करें। यह भी सच है कि लाखों मुसलमान भी दहशतगर्दी की वजह से वैली को छोड़कर हिंदुस्तान के दूसरे हिस्सों में और गल्फ में भी चले गए। लेकिन एक en bloc बड़ी संख्या में चला गया, यह सबसे बड़ी दुखद बात है। सरकार आई और वर्ष 19991 से लेकन 1996 तक हम सब लोग मंत्रिमंडल में थे और जूझ रहे थे। वह एक समय था कि कश्मीर में कोई जाना नहीं चाहता था, यानी तकरीबन 90 परसेंट पोलिटिकल लीडर्स वहां से छोड़कर जम्मू में आ गए थे, दिल्ली में आ गए थे। मैं एक दल नहीं, सभी दलों की बात करना चाहता हूं। सभी वहां से भागे। वहां पर 6-7 साल तक इलेक्शन नहीं हुए। वहां पर गवर्नर रूल लागू हुआ। वहां पर पार्लियामेंट के इलेक्शन नहीं हुए, विधान सभा के इलेक्शन नहीं हुए। वह एक ऐसा समय था, एक तरीके से जिसको हम कहेंगे, आर-पार की लड़ाई, क्योंकि पाकिस्तान ने अपनी पूरी ताकत, शक्ति, जितनी भी उसके पास पैसे की शक्ति थी, फौज की शक्ति थी, उसके सिविलियंस भी शक्ति थी, उसके रज़ाकार की शक्ति थी, उसके दूसरे infiltrators की शक्ति थी, उसका उसने पूरा इस्तेमाल किया। लेकिन हमारी गवर्नमेंट ने वर्ष 1996 में पूरे प्रयास के बाद वहां पर इलेक्शन की तैयारी की। उस वक्त चाहे इलेक्शन चार महीने बाद देवेगौड़ा जी की सरकार में हुए हों but it was Congress Government when एक प्लेटफॉर्म हम सब लोगों ने तैयार रखा, तो फिर हमें वर्ष 1996 में reconstruction and development को ज़ीरो से शुरू करना पड़ा। उसके बाद भी अटल बिहारी वाजपेयी जी आए। अटल जी ने कुछ प्रयास किया, हम उसका स्वागत करते हैं। हम गलत बात नहीं बताते हैं कि अटल जी बीजेपी के नेता थे, तो उन्होंने कोई भी काम नहीं किया। उन्होंने प्रयास किया और कश्मीर के लोगों ने उन पर यकीन करना शुरू किया। वे बस में पाकिस्तान तक चले गए। वहां की गवर्नमेंट ने भी उन पर यकीन करना शुरू कर दिया, लेकिन यह आपकी internal contradiction है। अटल जी ऊपर जाना चाहते थे, आप उन्हें नीचे खींचते थे। क्योंकि जैसा मैंने बताया कि उनका दुख समझना था। वे कश्मीरियों का दुख समझते थे, लेकिन दुर्भाग्य से उनके साथी नहीं समझते थे। वरना, यदि अटल जी को अपनी पार्टी का पूरा समर्थन मिला होता, तो शायद श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी कश्मीर का समधान निकाल पाते। लेकिन नहीं निकाल पाए, आपस की खींचा-तानी की वजह से ऐसा नहीं हो पाया। डा. मनमोहन सिंह जी के नेतृत्व में यूपीए गवर्नमेंट आ गयी तो डेवलपमेंट का सबसे ज्यादा प्रयास हुआ

†Transliteration in Urdu script.

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

क्योंकि सब कुछ बिखरा हुआ था। यह एक ऐसा era था जिसको मैं जम्मू-कश्मीर के लिए golden period कहता हूं - देश के लिए तो कहता ही हूं। ठीक है, हम publicty नहीं कर पाए, वह हमारी कमज़ोरी है। हमें arm-twisting नहीं आती, वह हमारी कमज़ोरी है। जिनको arm-twisting आती है, वे बगैर किए भी प्रचार करते हैं, लेकिन हम इतना करके भी स्टेट लेवल पर और नेशनल लेवल पर फेल हो गए क्योंकि हमें प्रचार करना नहीं आता। पहली दफा ट्रेन Valley में गयी। दो दफा डा. मनमोहन सिंह जी और सोनिया गांधी जी वहां आए। पूरी Valley में आज ट्रेन जाती है। कश्मीर के लोगों के लिए ट्रेन में चढ़ना एक historical event था। आज भी वह चल रही है। खैर, वह दूसरी बात है कि उसमें दूसरा डिब्बा आप पांच साल में भी नहीं लगा पाए। सड़कें - सिर्फ महाराजा के ज़माने में कश्मीर तक सड़क बनी थी, लेकिन अंदरूनी सड़कें नहीं थीं। PMGSY के अंतर्गत कितनी सड़कें बनीं, उनसे देश को तो लाभ हुआ, लेकिन जम्मू-कश्मीर में 90 परसेंट hilly terrain area है, पहाड़ी एरिया है - जम्मू में भी और कश्मीर में भी, उस पहाड़ी एरिया में सड़कें नहीं थीं। जब मैं चीफ मिनिस्टर था और उसके बाद भी, PMGSY के अंतर्गत स्टेट गवर्नमेंट को सड़कों के लिए ज़मीन देनी होती थी, लेकिन जम्मू-कश्मीर के पास पैसा नहीं था जिससे हम ज़मीन लें और सड़कें बनाएं। मैं डा. मनमोहन सिंह जी का धन्यवाद करता हूं कि दोनों दफा दिल्ली में कैबिनेट की मीटिंग हुई - एक वक्त मुफ्ती साहब चीफ मिनिस्टर थे और दूसरी दफा मैं चीफ मिनिस्टर था या उमर साहब चीफ मिनिस्टर थे, दोनों दफा PMGSY के अंतर्गत ज़मीन खरीदने के लिए पैसे दिये गए, ताकि हम internal roads बना सकें। लेकिन आज उन roads का क्या हुआ? Roads तीन फेज़ में बनती हैं। पहला earthwork होता है, उसके बाद consolidation होती है और उसके बाद blacktop होता है, लेकिन साढ़े तीन साल में - हमने तो तकरीबन 90 परसेंट सड़कें खोद दीं, लेकिन आपने उनको second and third phase के लिए पैसा नहीं दिया और वे सड़कें, जो कच्ची सड़कें थीं - summer में बरसात होती है, winter में बर्फ गिरती है - जहां से हमने शुरू की थी, वहीं पहुंच गयीं क्योंकि आपको जानकारी नहीं है, आपको मालूम नहीं है। इसी तरह से hospitals हैं, उनके district hospitals, तहसील अस्पताल हैं, power generation है, वहां पॉवर प्रोजेक्ट्स बने। कितने का आपने उद्घाटन किया, माननीय प्रेज़ेंट प्रधान मंत्री जी ने तीन प्रोजेक्ट्स का उद्घाटन किया, जो कि उनकी गवर्नमेंट में आने से तीन साल पहले ही बनने शुरू हो चुके थे, लेकिन चूंकि वे चल रहे थे, इसलिए हमने उनका उद्घाटन नहीं किया। एक बार प्रोजेक्ट चलता है तो उसका उद्घाटन करना अच्छा नहीं लगता। चलिए, आपने तीन साल बाद ही उनका उद्घाटन किया, लेकिन वे हमारे वक्त में बन रहे थे। हमने गवर्नमेंट ऑफ इंडिया के साथ - यहां जयराम रमेश जी बैठे हैं, ये पावर मिनिस्टर थे, मैं चीफ मिनिस्टर था, क्योंकि हमारी power generation की शक्ति नहीं थी, हमने, स्टेट गवर्नमेंट ने NHPC के साथ एग्रीमेंट किया - हमने NHPC के साथ पांच एग्रीमेंट किए। हमने कई प्रोजेक्ट्स शुरू किए, आपके वक्त में वे प्रोजेक्ट्स गए और वे दस परसेंट काम करने के बाद निकल भी गए। इसी प्रकार tourism है। हमारे यहां tourism पूरे climax पर था। इसी प्रकार employment generation है, handicrafts हैं। जम्मू-कश्मीर का सबसे ज्यादा employment का ज़रिया handicrafts और tourism है। यह एक ऐसी जगह है जैसी देश भर में अन्य कहीं नहीं है, जहां winter और summer, सब किस्म का tourism आपको मिलता है। जहां घोड़े वाले से लेकर, शिकारा, टैक्सी वाला, दुकानदार educated, uneducted और less educated - सबको रोज़गार मिलता है। अब tourism बंद हो गया। हमारे वक्त में tourism था, हमारे वक्त में यात्रा करने के लिए 6-6 लाख लोग जाते थे। लेकिन अब यात्रा करने वालों की संख्या दो लाख में पहुंच गई। यह भी एक tourism का ज़रिया है, उससे हजारों लोगों को मजदूरी मिलती है। आपके वक्त में वह tourism खत्म हुआ, employment खत्म हुआ। आपने unemployment generate किया और employment खत्म हो गया।

†**جناب غلام نبی آزاد :** آپ سب کو موقع ملے گا، لیکن میں نہیں چاہوں گا کہ آپ بیچ میں بولیں۔ آپ کو جو کہنا ہے، آپ کہیے۔ آپ کہنے کے لئے فری ہیں۔ سب سے بڑی دکھد چیز یہ ہوئی ہے کہ کشمیری مسلمان اور کشمیری پنڈت ایک خون ہیں، ان کی ایک زبان ہے، ایک بھاشا ہے، ایک کھانا پینا ہے اور جب میں خون کہتا ہوں، تو میں ذرا اس کو ہسٹری میں 600 سال پہلے لے جاتا ہوں۔ کشمیر میں اسلام 600 سال پہلے آیا، تو اس کا مطلب ہے، ہمارا ایک خون ہے، وہ الگ ہو گیا۔ آپ سیاست کریں، لیکن ہم اس کو اپنا خون سمجھتے ہیں۔ وہ ہم سے الگ چلا گیا۔ وہ دوسری بات ہے، میں اس میں نہیں جانا چاہتا ہوں۔ بڑی تلخی ہوگی ۔ ان کے کس نے ایکسپلائٹ کیا، میں اس میں نہیں جانا چاہتا ہوں۔ ہم اس دن کے لئے انتظار کر رہے ہیں۔ کشمیر، کشمیری پنڈتوں کے بغیر نامکمل ہیں اور کشمیر کی ہسٹری نامکمل ہے، یہ میں آپ کو بتانا چاہتا ہوں، چاہے آپ کچھ بھی سیاست کریں۔ یہ بھی سچ ہے کہ لاکھوں مسلمان بھی دہشت گردی کی وجہ سے ویلی کو چھوڑ کر ہندوستان کے دوسرے حصوں میں اور گلف میں بھی چلے گئے۔ لیکن ایک *en bloc* بڑی تعداد میں چلا گیا، یہ سب سے بڑی دکھد بات ہے۔ سرکار آئی اور سال 1991 سے لے کر 1996 تک ہم سب لوگ منتری منڈل میں تھے اور جوجھ رہے تھے۔ وہ ایک وقت تھا کہ کشمیر میں کوئی جانا نہیں چاہتا تھا، یعنی تقریبا نوّے فیصد پولیٹکل لیڈرس وہاں سے چھوڑ کر جموں میں آ گئے تھے، دہلی میں آ گئے تھے۔ میں ایک دل نہیں، سبھی دل کی بات کرنا چاہتا ہوں۔ سبھی وہاں سے بھاگے۔ وہاں پر چھہ-سات سال تک الیکشن نہیں ہوئے۔ وہاں پر گورنر رول لاگو ہوا۔ وہاں پر پارلیمنٹ کے الیکشن نہیں ہوئے، ودھان سبھا کے الیکشن نہیں ہوئے۔ وہ ایک ایسا وقت تھا، ایک طریقے سے جن کو ہم کہیں گے، آر پار کی لڑائی، اس کو پکڑ کر رکھنا، کیوں کہ پاکستان نے اپنی پوری طاقت، شکتی، جتنی بھی اس کے پاس پیسے کی شکتی تھی، فوج کی شکتی تھی، اس کے سویلئنس کی شکتی تھی، اس کے رضاکاروں کی شکتی تھی، اس کے دوسرے انفلٹریٹرس کی شکتی تھی، اس کا اس نے پورا استعمال کیا۔

†Transliteration in Urdu script.

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

لیکن ہماری گوورنمینٹ نے سال 1996 میں پورے پریاس کے بعد وہاں پر الیکشن کی تیاری کی۔ اس وقت چاہے الیکشن چار مہینے بعد دیو گوڑا جی کی سرکار میں ہوئے ہوں، 'بٹ اٹ واز کانگریس گوورنمینٹ وہین' ایک پلیٹ فارم ہم سب لوگوں نے تیار رکھا، تر پھر ہمیں سال 1996 میں ری-کنسٹرکشن اینڈ ڈیولپمینٹ کو زیرو سے شروع کرنا پڑا۔ اس کے بعد شری اٹل بہاری واجپئی جی آئے۔ اٹل جی نے کچھہ پریاس کیا، ہم اس کا سواگت کرتے ہیں۔ ہم غلط بات نہیں بتاتے ہیں کہ اٹل جی بی-جے-پی۔ کے تھے، تو انہوں نے کوئی بھی کام نہیں کیا۔ انہوں نے پریاس کیا اور کشمیر کے لوگوں نے ان پر یقین کرنا شروع کیا۔ وہ بس میں پاکستان تک چلے گئے۔ وہاں کی گوورنمینٹ نے بھی ان پر یقین کرنا شروع کر دیا، لیکن یہ آپ کی انٹرنل کونٹراڈکشن ہے۔ اٹل جی اوپر جانا چاہتے تھے، آپ انہیں نیچے کھینچتے تھے۔ کیوں کہ جیسا میں نے بتایا کہ ان کا دکھہ سمجھنا تھا۔ وہ کشمیریوں کا دکھہ سمجھتے تھے، لیکن بدقسمتی سے ان کے ساتھی نہیں سمجھتے تھے۔ ورنہ، اگر اٹل جی کو اپنی پارٹی کا پورا سمرتھن ملا ہوتا، تو شاید شری اٹل بہاری واجپئی جی کشمیر کا سمادھان نکال پاتے ۔

لیکن نہیں نکال پائے، آپس کی کھینچا تانی کی وجہ سے ایسا نہیں ہو پایا۔ ڈاکٹر منموہن سنگھہ جی کی قیادت میں یو-پی-اے۔ گوورنمینٹ آ گئی تو ڈیولپمینٹ کا سب سے زیادہ پریاس ہوا کیوں کہ کہ سب کچھہ بکھرا ہوا تھا۔ یہ ایک ایسا ایرا تھا جس کو میں جموں-کشمیر کے لئے گولڈن پیریڈ کہتا ہوں، دیش کے لئے کہتا ہی ہوں۔ ٹھیک ہے، ہم پبلسٹی نہیں کر پائے، وہ ہماری

کمزوری ہے۔ ہمیں آرم-ٹوئسٹنگ نہیں آتی، وہ ہماری کمزوری ہے۔ جن کو آرم-ٹوئسٹنگ آتی ہے، وہ بغیر کئے بھی پرچار کرتے ہیں، لیکن ہم اتنا کرکے بھی اسٹیٹ لیول پر اور نیشنل لیول پر فیل ہو گئے کیوں کہ ہمیں پرچار کرنا نہیں آتا۔ پہلی دفعہ ٹرین ویلی میں گئی۔ دو دفعہ منموہن سنگھہ جی اور سونیا گاندھی جی وہاں آئے۔ پوری ویلی میں آج ٹرین جاتی ہے۔ کشمیر کے لوگوں کے لئے ٹرین میں چڑھنا ایک تاریخی واقعہ تھا۔ آج بھی وہ چل رہی ہے۔ خیر، وہ دوسری بات ہے کہ اس میں دوسرا ڈبہ آپ پانچ سال میں بھی نہیں لگا پائے۔ سڑکیں — صرف مہاراجہ کے زمانے میں کشمیر تک سڑک بنی تھک، لیکن اندرونی سڑکیں نہیں تھیں۔ پی۔ایم۔جی۔ایس۔وائی۔ کے انترگت کتنی سڑکیں بنیں، ان سے دیش کو تو فائدہ ہوا، لیکن جموں-کشمیر کے نوّے فیصد ٹیرین ایریا ہے، پہاڑی ایریا ہے — جموں میں بھی اور کشمیر میں بھی، اس پہاڑی ایریا میں سڑکیں نہیں تھیں۔ جب میں چیف منسٹر تھا اور اس کے بعد بھی، پی۔ایم۔جی۔ایس۔وائی۔ کے انترگت اسٹیٹ گوورنمینٹ کو سڑکوں کے لئے زمین دینی ہوتی تھی، لیکن جموں کشمیر کے پاس پیسہ نہیں تھا جس سے ہم زمین لیں اور سڑکیں بنائیں۔ میں ڈاکٹر منموہن سنگھہ جی کا دھنیواد کرتا ہوں کہ دونوں دفعہ دہلی میں کیبنیٹ کی میٹنگ ہوئی — ایک وقت مفتی صاحب چیف منسٹر تھے اور دوسری دفعہ میں چیف منسٹر تھا یا عمر صاحب چیف منسٹر تھے، دونوں دفعہ پی۔ایم۔جی۔ایس۔وائی۔ کے انترگت زمین خریدنے کے لئے پیسے دئے گئے، تاکہ ہم انٹرنل روڈس بنا سکیں۔ لیکن آج ہم روڈس کا کیا ہوا؟

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

روڈس تین فیز میں بنتی ہیں۔ پہلا ارتھ-ورک ہوتا ہے، اس کے بعد کنسولیڈیشن ہوتی ہے اور اس کے بعد بلیک-ٹوپ ہوتا ہے، لیکن ساڑھے چار سال میں ہم نے تو تقریبا نوّے فیصد سڑکیں کھود دیں، لیکن آپ نے ان کو سیکنڈ اینڈ تھرڈ فیز کے لئے پیسہ نہیں دیا اور وہ سڑکیں، جو کچی سڑکیں تھیں، سمر میں برسات ہوتی ہے، ونٹر میں برف گرتی ہے، جہاں سے ہم نے شروع کی تھیں، وہیں پہنچ گئیں کیوں کہ آپ کو جانکاری نہیں ہے، آپ کو معلوم نہیں ہے۔ اسی طرح سے ہاسپٹلس ہیں، ان کے ڈسٹرکٹ ہاسپٹلس، تحصیل اسپتال ہیں، پاور جنریشن ہے، وہاں پاور پروجیکٹس بنے۔ کتنے کا آپ نے ادگھاٹن کیا، مانئے حالیہ پردھان منتری جی نے تین پروجیکٹس کا ادگھاٹن کیا، جو کہ ان کی گوورنمینٹ میں آنے سے تین سال پہلے ہی بننے شروع ہو چکے تھے، لیکن چونکہ وہ چل رہے تھے، اس لئے وہ ہمارے وقت میں بن رہے تھے۔ ہم نے گوورنمینٹ اف انڈیا کے ساتھہ — یہاں جے رام رمیش جی بیٹھے ہیں، یہ پاور منسٹر تھے، میں چیف منسٹر تھا، کیوں کہ ہماری پاور جنریشن کی شکتی نہیں تھی، ہم نے، اسٹیٹ گوورنمینٹ میں این۔ایچ۔پی۔سی۔ کے ساتھہ ایگریمینٹ کیا۔ ہم نے این۔ایچ۔پی۔سی۔ کے ساتھہ پانچ ایگریمنٹ کئے، ہم نے کئی پروجیکٹس شروع کئے، آپ کے وقت میں وہ پروجیکٹس گئے اور وہ دس فیصد کام کرنے کے بعد نکل بھی گئے۔ اسی طرح ٹورزم ہے۔ ہمارے یہاں ٹورزم پورے کلائمیکس پر تھا۔ اسی طرح ایمپلائمینٹ جنریشن ہے، ہینڈی کرافٹ ہیں۔ جموں — کشمیر کا سب سے زیادہ ایمپلائیمنٹ کا ذریعہ ہینڈی کرافٹ اور ٹورزم ہے۔ یہ ایک ایسی جگہ ہے جیسی دیش بھر

میں دوسری کہیں نہیں ہے، جہاں ونٹر اور سمر، سب قسم کا ٹورزم آپ کو ملتا ہے۔ جہاں گھوڑے والے سے لیکر، شکارا، ٹیکسی والا، دوکاندار، ایجوکیٹڈ، ان-ایجوکیٹڈ اور لیس-ایجوکیٹڈ — سب کو روزگار ملتا ہے۔

اب ٹورزم بند ہو گیا۔ ہمارے وقت میں ٹورزم تھا، ہمارے وقت میں یاترا کرنے کے لئے چھہ چھہ لاکھہ لوگ جاتے تھے۔ لیکن اب یاترا کرنے والوں کی تعداد دو لاکھہ تک پہنچ گئی۔ یہ بھی ایک ٹورزم کا ذریعہ ہے، اس سے ہزاروں لوگوں کو مزدوری ملتی ہے۔ آپ کے وقت میں وہ ٹورزم ختم ہوا، ایمپلائمینٹ ختم ہوا۔ آپ نے ان-ایمپلائمینٹ جنریٹ کیا اور ایمپلائمینٹ ختم ہو گیا۔

श्री उपसभापति: माननीय गुलाम नबी जी, कश्मीर समेत अन्य चीज़ों पर आपका बड़ा व्यापक अनुभव है, लेकिन आपकी पार्टी का समय 25 मिनट है, जिसमें से आप 18 मिनट का उपयोग कर चुके हैं। ...(**व्यवधान**)...

श्री आनन्द शर्मा (हिमाचल प्रदेश): LoP को कभी कहीं रोका जाता है ...(**व्यवधान**)...

श्री उपसभापति: प्लीज़, आप बैठ जाइए। समय की व्यवस्था के बारे में कहना मेरा फर्ज़ है।

श्री गुलाम नबी आज़ाद: सर, सबसे पहले तो हम Business Advisory Committee में टाइम निर्धारित करते हैं और Business Advisory Committee मिली नहीं और हमने टाइम निर्धारित नहीं किया।

جناب غلام نبی آزاد : سر، سب سے پہلے تو ہم بزنس ایڈوائزری کمیٹی میں ٹائم نردھارت کرتے ہیں اور بزنس ایڈوائزری کمیٹی ملی نہیں اور ہم نے ٹائم نردھارت نہیں کیا۔

श्री आनन्द शर्मा: LoP के लिए नहीं होता है।

SHRI GHULAM NABI AZAD: Not only that, the point is that the Business Advisory Committee decides the time.

संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विजय गोयल): इसके लिए दो घंटे का टाइम तय किया था।

†Transliteration in Urdu script.

श्री गुलाम नबी आजाद: हमने नहीं किया है, आपने खुद किया है।

†جناب غلام نبی آزاد : ہم نے نہیں کیا ہے، آپ نے خود کیا ہے۔

श्री विजय गोयल: नहीं, ऐसा नहीं है।

श्री गुलाम नबी आज़ाद: Parliamentary Affairs Minister ने किया है and not Business Advisory Committee. The Business Advisory Committee has not met and has not decided the time. So, the Government cannot decide the time. 'हिमायत' skill development की एक स्कीम थी। 'उम्मीद' Self-Help Groups की स्कीम थी और 'उड़ान' education of youth की स्कीम थी। हमने different parts of the country में 20 हज़ार लोगों को placement दी। जयराम रमेश जी 'हिमायत', 'उम्मीद' और 'उड़ान' के in-charge थे। हम लोगों ने Entrepreneurship Development Institute बनाया। Militancy की वजह से उसे उड़ा दिया गया और फिर बाद में किसी ने उसे बनाया ही नहीं। ये तमाम चीज़ें हुई हैं। उसके बाद में 25 फरवरी, 2015 को याद करता हूं। मैं यहां से बोल रहा था और माननीय Leader of the House के साथ माननीय प्रधान मंत्री जी बैठे थे। मैंने जो सवाल उठाया था, उसका जवाब प्रधान मंत्री जी ने नहीं दिया, माननीय वित्त मंत्री, Leader of the House ने ही उस पर कहा था। उन दिनों parleys चल रहे थे, PDP और Government of India के बीच में। मैंने उस दिन यहीं पर बता दिया था कि आप सरकार मत बनाओ, Bhartiya Janta Party is a red rag for Kashmir and Kashmiris. ये शब्द मैंने कहे थे। यह मैंने दुबारा अपनी स्पीच से निकाला, word 'red rag' और आपने उसे स्पीच में भी उल्लेख किया और दो-तीन चीज़ें बताईं हैं, मैं उनका उल्लेख नहीं करता हूं। वह 'red rag' prove हो गया कि वह 'red rag' था। So, I was not wrong. I would like to tell the hon. Leader of the House that I was correct. It was a 'red rag' क्योंकि 70 साल आप उनको गालियां देते थे और बाद में कहते हैं कि हम तुम पर हुकूमत करेंगे। तो उसका परिणाम क्या हुआ, उसका परिणाम यह हुआ कि militancy बढ़ गई। हमने बिल्कुल ज़ीरो प्वाइंट पर पहुंचाई और आपने फिर शुरू की। Infiltration बढ़ गया, Security Forces killing बढ़ गई। मेरे पास आंकड़े हैं, क्योंकि आपने समय नहीं दिया और माननीय गृह मंत्री जी आंकड़े पढ़ेंगे, तो मैंने अपने पास भी खुद आंकड़े रखे हुए हैं। मुझे मालूम है कि सरकार कहेगी कि 237 militants हमारे वक्त में मारे गए हैं। मेरे पास आंकड़े हैं कि हमारे वक्त में 1750 आदमी भी एक साल में मारे गए थे, 1312 आदमी भी मारे गए, 1100 आदमी भी एक साल में मारे गए। आप तो ढाई सौ गिनते हो। मेरे पास वे आंकड़े हैं और मैं दूंगा। हमारे वक्त में, जब हम सरकार में थे, तो per year 1700 तक militants को मारते थे। लेकिन सवाल है कि हमने 2014 में कहां छोड़ा, वह cut-off date होगी कि 2014 में militancy कहां थी। आज कश्मीर में क्या situation है? Policemen, Security Forces को यह हिदायत है कि अगर वे लीव पर जाएं तो घर पर न रहें। क्या पिछले 30 सालों में ऐसी कोई advisory थी? Government of India में, मनमोहन सिंह जी के वक्त में या नरसिम्हा राव जी के वक्त में, जब हम Government में थे, तब क्या इस तरह की कोई advisory थी कि पुलिस वाला घर नहीं जाएगा? पुलिस ने एडवाइज़री जारी की है कि वे अपन घर न जाएं। वे अपने घर पर न जाएं, तो किसके घर जाएं? Where will they go? ऐसी situation आपकी गवर्नमेंट वहां पर लायी

†Transliteration in Urdu script.

है कि पुलिस वाला भी अपने घर नहीं जा सकता है, लीडर भी नहीं जा सकता है, हिट-लिस्ट वाला भी नहीं जा सकता है। अब तो हमें कोई और नई जगह पुलिस के लिए बनानी पड़ेगी। पुलिस अभी तक तो लीडर्स को प्रोटेक्शन देने के लिए थी, अब पुलिस को भी प्रोटेक्शन देनी पड़ेगी। यह स्थिति आपने हमको दी है, ऐसा कश्मीर आपने हमारे हवाले किया। आज security situation worst है, जैसी 1990 में security situation थी, जैसा 1990 में आतंकवाद था, आज उसी तरह का आतंकवाद है। Tourism is at its lowest, कोई टूरिज्म नहीं है। कुछ तो militants की वजह से और कुछ हमारे दो-तीन channels हैं, उनकी मेहरबानी से, जो सुबह से anti-Kashmir propaganda शुरू कर देते हैं, जिस कश्मीरी को जाना भी होता है, वह भी भाग जाता है, बाहर वाला तो जाएगा ही नहीं। अब मुझे नहीं मालूम कि किसका agenda वे चलाते हैं, लेकिन वे चलाते हैं और सरकार उनको नहीं कहती है अपना agenda चलाने के लिए तो भी वे 24 घंटे खड़े रहते हैं, लेकिन जो देश के खिलाफ एजेन्डा चलाते हैं, उनके खिलाफ आपके मुंह से जुबान नहीं निकलती है कि आप ऐसा एजेंडा क्यों चलाते हो? जो नफरत का एजेंडा है उससे पाकिस्तान को फायदा मिलता है, हमारे देश को फायदा नहीं मिलता है और इससे वहां tourism खत्म हो जाता है।

वहां पर economic activity zero है, nil है, handicraft industry nil है। हमारे वक्त में विदेश में मेले लगते थे, उनको आपने बंद कर दिया है, अब देश में भी मेले नहीं लगते हैं। वहां पर employment zero है, political situation ऐसी है कि alienation total है। कभी alienation नहीं हुआ। एक रोशनी की किरण कश्मीर के लोगों को, कश्मीर के नौजवानों को नज़र आती थी कि आज नहीं होगा, तो कल होगा। अब कश्मीर के नौजवान पढ़े-लिखे हैं, वे डिग्रियां हासिल करते हैं और अब उनको अंधेरा नजर आता है और जब वे दूसरी बड़ी यूनिवर्सिटीज़ में पढ़ने के लिए जाते हैं, तो वहां उनके साथ क्या सलूक किया जाता है, यह तो सबको पता है। वे क्या खाते हैं, क्या पीते हैं, कहां जाते हैं, कहां आते हैं, उन स्टूडेंट्स को भी तंग किया जाता है। वहां पर militancy में recruitment तकरीबन-तकरीबन खत्म हो गयी है। जो नये लोगों का recruitment मिलिटेंसी में होता था, this was the thing of past. अब दस-बीस कहीं गलती से भूले-भटके पैसे देकर जाते थे, लेकिन अब यह संख्या सैंकड़ों में पहुंच गयी। वर्ष 2018 में यह सौ से सवा सौ तक को क्रॉस कर गयी है। तब की recruitment में और आज की recruitment में फ़र्क है। कौन होता था, Javed Nalka बहुत बड़ा लीडर माना जाता था, वहां नलका ठीक करने वाला, झाडू मारने वाला लीडर बन जाता था। माननीय गृह मंत्री जी, आपको मालूम है कि आज PhD वाले जा रहे हैं। एक डॉक्टर नौकरी छोड़कर चला गया। आज डॉक्टरी के लिए कितने पैसे देने पड़ते हैं, 50 लाख, एक करोड़ देने पड़ते हैं और उसके बाद वह नौकरी छोड़कर militant बन जाए, engineering छोड़कर militant बन जाए, law graduates, post graduates, PhD candidates militancy-there is something wrong with the Government of India. There is something wrong with the functioning of the Government of India. There is something wrong with the working of the Government of India and with the thinking of the Government of India. Let me clearly tell you this. Who is responsible for this alienation? Alienation of educated people, not only educated people but also employed people! इन चार सालों में सबसे ज्यादा infiltration हुयी है, इन चार सालों में सबसे ज्यादा cease-fire violations हुए हैं। मैं हर cease-fire violation के बाद जम्मू, कठुआ और सांबा गया हूं। जब

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

cease-fire violation होता है, यह बात ठीक है कि militancy से कश्मीर में ज्यादा नुकसान होता है। मैं आपकी इत्तिला के लिए बताना चाहता हूं कि ceasefire violation से जम्मू में ज्यादा नुकसान होता है, क्योंकि international border जम्मू में है और जम्मू शहर तथा सियालकोट, almost twin cities हैं। बीच में एक दीवार है, उसके पार सियालकोट है और इधर जम्मू शहर है। जब कठुआ, साम्बा या जम्मू में गोली आती है, तो वहां के शहरी मरते हैं। इन तीन-चार सालों में वहां सबसे ज्यादा citizens मारे गए हैं। पहले कभी भी जम्मू, कठुआ और साम्बा में शहरी नहीं मारे जाते थे, लेकिन इस ceasefire violation में पहली बार ऐसा देखा गया। पहले कभी भी ceasefire violation में जानवर मरते नहीं देखे थे, लेकिन अब ceasefire violation में हमने भैंसे, गायें और बकरियां भी मरती देखीं। हमने कभी पाकिस्तान की शैलिंग से घरों को बर्बाद होते नहीं देखा, लेकिन अब ऐसा हो रहा है। मैं भी स्टूडेंट लाइफ से पोलिटिक्स में रहा हूं और आज तक पोलिटिक्स में हूं, लेकिन मैंने सिर्फ आपके वक्त में ऐसा देखा है कि पाकिस्तान की शैलिंग से घर भी टूटे, जानवर भी मारे गए और इंसान भी मारे गए।

महोदय, हमने आपको एक ऐसा कश्मीर और देश आपके हवाले किया था, जो प्रगतिशील देशों में माना जाता था, जो विकास के लिए माना जाता था, जो अपनी भाई-बिरादरी, भाईचारे और दोस्ती के लिए जाना जाता था। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, unity के लिए और amity के लिए माना जाता था और आज साढ़े चार साल से वह देश नहीं है। इसे आप भी देख रहे हैं और हम भी देख रहे हैं। हमने जो कश्मीर आपको दिया था, वह कश्मीर आज नहीं है। मैं वहां पढ़ा हूं और वहीं से राजनीति भी शुरू की है। जम्मू में हमें मालूम नहीं था कि हिन्दू कौन है और मुसलमान कौन है। मैं जम्मू की बात करता हूं। जम्मू में 60 परसेंट हिन्दू और 40 परसेंट मुस्लिम हैं। चार डिस्ट्रिक्ट्स में हिन्दू मेजॉरिटी है और छः डिस्ट्रिक्ट्स में मुस्लिम मेजॉरिटी है, लेकिन overall proportion 60:40 का है। मुझे यह मालूम नहीं था कि कौन हिन्दू और कौन मुस्लिम है, क्योंकि हम अपने हिन्दू दोस्त की मां को भी मां ही कहते थे। उसकी बहन को बहन और भाभी को भाभी ही कहते थे, लेकिन आज वह माहौल नहीं है। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि आप लोगों ने एक सबसे बड़ा गिफ्ट दिया कि वहां 70 साल से अब हिन्दू, हिन्दू से पहचाना जाता है और मुसलमान, मुसलमान से पहचाना जाता है। यह काम यहां की गवर्नमेंट ने नहीं, वहां की गवर्नमेंट ने किया।

महोदय, जब हम वहां नौकरियां देते थे, तो मुझे इस बात को कहते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है कि जितने भी चीफ मिनिस्टर्स बने हैं, मेरे ख्याल से महबूबा मुफ्ती से लेकर, गुलाम नबी आजाद से लेकर शेख अब्दुल्ला तक, हमारे पर्सनल स्टाफ में ऑलमोस्ट 90 परसेंट हिन्दू होते थे। हमारे चीफ सेक्रेटरीज़, डीजीपीज़, डीजीज और आईजीज़ 80 परसेंट हिन्दू हुआ करते थे। यह किसी को मालूम नहीं होता था कि कश्मीर में हिन्दू क्यों चीफ सेक्रेटरी लगाया गया है या डी.जी. हिन्दू क्यों लगाया गया है। इस बात को कोई नहीं पूछता है और I must tell you even हुर्रयत में भी कभी, जिसे हम एंटी-कश्मीर कहेंगे या हिन्दुस्तान के फेवर में नहीं है, उसने भी कभी यह नहीं लिखा कि यहां मुसलमान ही डीजी होना चाहिए या मुसलमान ही चीफ सेक्रेटरी होना चाहिए। यह बात हमारे में नहीं थी। आपने यह बीमारी भी दहेज में जम्मू-कश्मीर की सरकार को दे दी। यह आपको ही मुबारक हो।

महोदय, जब आप हर फ्रंट पर फेल हो गए, बड़े fanfare के साथ आपने वहां गवर्नमेंट बनाई, लेकिन जब आप हर फ्रंट पर फेल हो गए, economic front, political front, tourism front, सब

alienation कंप्लीट हो गया और उसके बाद आपने वहां कह दिया कि हम तो चले, अपना कटोरा लेकर, अब तुम जानो, अब हम सरकार नहीं चलाएंगे। मैंने ऐसा कभी नहीं देखा है कि Government of India खुद withdraw करे। हमारी गवर्नमेंट का भी सपोर्ट withdraw किया था, लेकिन वह रीजनल पार्टी ने किया था, लेकिन यहां Government of India withdraw कर रही है। The Government of India यानी, भारतीय जनता पार्टी ने कहा कि हम withdraw करते हैं।

महोदय, मैं कहना चाहता हूं कि आपने वहां की गवर्नमेंट से सपोर्ट withdraw किया, लेकिन फिर चार-पांच महीने वहां की एसेम्बली को suspended animation में क्यों रखा? जब आपने withdraw किया, तो इलेक्शन होना चाहिए। उस समय अच्छा मौसम था। उस समय climate बहुत अच्छा था और इलेक्शन हो जाता, लेकिन आपकी नजर थी कि हम कहीं जोड़-तोड़ करें। चार महीने आप तोड़ने और जोड़ने में लगे रहे। पीडीपी और कांग्रेस को तोड़ने में लगे रहे। मुझे अपने MLAs ने बताया कि तोड़ने की क्या-क्या शरारतें थीं। मैं उन सब बातों का यहां उल्लेख नहीं करना चाहता हूं। उसके बाद N.C. को तोड़ने में लगे रहे। इन सबने, उमर अब्दुल्ला के वक्त में, फारुख अब्दुल्ला के वक्त में, हमारे वक्त में बहुत काम हुआ। मैं श्री फारुख अब्दुल्ला को भी बधाई देता हूं कि उन्होंने 1996 में सबसे बड़ा इलेक्शन सम्भाला। उसके बाद, हमारे और उमर अब्दुल्ला के वक्त से विकास अपने आसमाँ पर पहुंचा, लेकिन ये तमाम चीज़ें नीचे दब गईं। आप इन्हीं पार्टीज़ को तोड़ रहे हैं, आप नेशनल कॉफ्रेंस को तोड़ रहे हैं, आप कांग्रेस को तोड़ रहे हैं।

सर, जब मैं चीफ मिनिस्टर था, तब एक गवर्नर थ, वे हमारी सोच के नहीं थे। भगवान उनकी आत्मा को शांति दे। उन्होंने मुझे बताया कि मैं आपकी सोच का नहीं हूं। लेकिन कश्मीर में मुझे आपकी सोच के लोगों की जरूरत है, जो नेशनलिस्ट हैं। जो हमारे लॉ मिनिस्टर हैं, वे उन्हें जानते हैं, जिनका मैं उल्लेख कर रहा हूं। कहा मैं आपको कमजोर नहीं करूंगा? क्योंकि हमें आपसे फायदा होगा, हमें national forces चाहिए, आपकी सोच में पहला शब्द उन्होंने बताया, इसलिए मेरी तरफ से आपको हंड्रेड परसेंट सपोर्ट है। माननीय गृह मंत्री जी, यह सोच नहीं रखोगे। जो आपके पिलर्स हैं, वहां नेशनल कॉफ्रेंस और कांग्रेस प्रो इंडिया हैं, secular forces हैं। वे लड़ते हैं, वे कश्मीर को देश के साथ रखना चाहते हैं, लेकिन आप उन्हीं को साफ करते हो, आप उन्हीं की टांगें काटते हो। आपने सबसे पहले उन्हीं की सिक्युरिटी विदड्रॉ की। जम्मू-कश्मीर में सिक्युरिटी विदड्रॉ करने का मतलब है सॉफ्ट टारगेट। ख़ैर, वे इसलिए बच गए, क्योंकि उनको लगा कि अब बीजेपी ने सिक्युरिटी विदड्रॉ की, शायद वे उन बेचारे बच्चों को मरवाना ही चाहते थे, इसलिए मत छेड़ो, ये भी यतीन हैं। यह आपकी क्रेडिबिलिटी हो गई। जब सब कुछ खत्म हो गया, आपने तब हवाले किया। तीन-चार महीने के बाद कुछ सोच आ गई। माननीय महोदय, मैं उसमें नहीं था, माननीय लीडर ऑफ दि हाउस को मालूम है, लेकिन नेशनल कॉफ्रेंस, पीडीपी और कुछ हमारे लीडर्स सोच रहे थे कि हालांकि तनख्वाह तो हमें मिल रही है, लेकिन इस गवर्नर रूल से कोई फायदा नहीं हो रहा है, बल्कि लोगों को नुकसान ही हो रहा है एनिमेटेड सस्पेंशन में भी तनख्वाह तो मिल रही थी, लेकिन लोगों को फायदा नहीं हो रहा था। उन्होंने सोचा हम मिलकर गवर्नमेंट बनाएं। यह जो गवर्नमेंट बनती थी, यह almost two-third मेजॉरिटी की बनती थी। यह individuals के बीच में समझौता नहीं था।

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

जिस तरह की individuals की सरकार भारतीय जनता पार्टी बनाना चाहती थी कि दो हमारे लिए, दो उसके लिए, दो उसके लिए, वैसा वे नहीं चाहते थे। यहां पोलिटिकल पार्टीज़ खुद सरकार बना रही थीं। खुद नेशनल कॉफ्रेंस, खुड पीडीपी। उन्होंने खुद ही कांग्रेस पार्टी को भी convince करने की कोशिश की थी कि आप भी रहो। अगर हम जाते तो as पार्टी जाते, as individual नहीं जाते। एक फैक्स भी गवर्नर के पास पहुंच जाए कि कल हम अपना support देंगे और ज्यों ही गवर्नमेंट को मालूम पड़ा कि कल यहां गवर्नमेंट बनेगी, त्यों ही एक घंटे के अंदर विधान सभा भंग हो गई। माननीय गृह मंत्री जी और लीडर ऑफ दि हाउस, अगर हमारी गवर्नमेंट होती और हम सरकार नहीं चला पाते, तो हम उनके पाँव पकड़ते की रीज़नल पार्टीज़ एक हो जाओ और सरकार बनाओ। हम उनको facilitate करते, क्योंकि जम्मू-कश्मीर में आपको facilitate करना होता है, मदद करनी पड़ती है। आपको रीज़नल, सेक्युलर, नेशनलिस्ट पार्टीज़ को spoon feeding करनी पड़ती है, उनकी टांगें लगानी पड़ती हैं, उनकी टांगें काटनी नहीं होती हैं। आपको उनको मजबूत करना होता है, उनको सुरक्षा देनी होती है, उनकी सुरक्षा छीननी नहीं होती। जब तक आप यह नहीं समझेंगे, तब तक आप कश्मीर के साथ न्याय नहीं करेंगे। आप गवर्नर रूल लाए, स्वाभाविक है कि गवर्नर रूल - मुझे नहीं मालूम कि यहां कितने लोगों को मालूम है कि गवर्नर रूल जम्मू-कश्मीर में सबसे सख्त होता है? अगर सेंट्रल गवर्नमेंट सही सोच वाली हो, तो उसका मिसयूज़ नहीं करती, लेकिन अगर आपके जैसी सेंट्रल गवर्नमेंट हो तो उसका भयंकर मिसयूज़ करती हैं। क्योंकि जम्मू-कश्मीर एक ही स्टेट है, जहां गवर्नर की, under the J&K Constitution, both executive and legislative पावर है। मैं आपको बताना चाहता हूं कि आपके इस गवर्नर रूल में, लॉज़ में 55 amendments आए हैं। क्या यह उचित है? क्या यह उचित है कि एक ऐसे sensitive स्टेट में, जम्मू-कश्मीर में गवर्नर अलग-अलग laws में 55 amendments करे? किसको खुश करने के लिए किए हैं? किससे विचार करके किए हैं? अब नई गवर्नमेंट क्या करेगी, because it is a legislative power. Executive और Assembly की तमाम powers उनके पास हैं। उनका उपयोग करके वे कानून बदल दें, अब यह कानून कोन बदलेगा? इसलिए मैं समझता हूं कि आपको मालूम नहीं है, जानकारी नहीं है, sensitivity के बारे में मालूम नहीं है, दिल नहीं है, वरना आप एक amendment नहीं करने देते और आप कहते कि इलेक्शन हो जाएगा। इसलिए आप अपनी सोच के हिसाब से जो मर्ज़ी है, amendment कराते जाओ और जहां जो जला है, उस पर तेल डालते जाओ। हमें तो इसको मंजूर करने के अलावा कोई चारा नहीं है। एक जिम्मेदार पार्टी के तौर पर हम इसका समर्थन करेंगे, लेकिन आप यह जो सब कुछ कर रहे हैं, अब गरमा-गरमी बहुत हो गई, आख़र में एक शेर से मैं अपनी बात खत्म करना चाहता हूं।

"सब कुछ लुटा कर होश में आए, तो क्या किया -
दिन में अगर चिराग जलाए, तो क्या किया।"

आप दिन में चिराग जलाने वाले हैं।

माननीय डिप्टी चेयरमैन सर, बहुत-बहुत धन्यवाद।

Parliamentary Affairs Minister نے کیا ہے and not جناب غلام نبی آزاد †Business Advisory Committee. The Business Advisory Committee has not met and has not decided the time. So, the Government cannot decide the time.

†Transliteration in Urdu script.

'حمایت' اسکل ڈیولپمینٹ کی ایک اسکیم تھی۔ 'امید' سیلف، ہیلپ گروپس کی اسکیم تھی اور 'اڑان' ایجوکیشن آف یوتھ کی اسکیم تھی۔ ہم نے ملک کے مختلف حصوں میں بیس ہزار لوگوں کو پلیسمینٹ دی۔ جے رام رمیش جی 'حمایت'، 'امید' اور اڑان کے انچارج تھے۔ ہم لوگوں نے اینٹرپرینرشپ ڈیولپمینٹ انسٹی ٹیوٹ بنایا۔ ملیٹینسی کی وجہ سے اسے اڑا دیا گیا اور پھر بعد میں کسی نے اسے بنایا ہی نہیں۔ یہ تمام چیزیں ہوئی ہیں۔ اس کے بعد میں 25 فروری، 2015 کو یاد کرتا ہوں۔ میں یہاں سے بول رہا تھا اور مانّئے لیڈر آف دی ہاؤس کے ساتھ مانّئے پردھان منتری جی بیٹھے تھے۔ میں نے جو سوال اٹھایا تھا، اس کا جواب پردھان منتری جی نے نہیں دیا، مانّئے فائنینس منتری، لیڈر آف دی ہاؤس نے ہی اس پر کہا تھا۔ ان دنوں پارلیز چل رہے تھے، پی ڈی پی۔ اور گوورنمینٹ آف انڈیا کے بیچ میں۔ میں نے اس دن یہیں پر بتا دیا تھا کہ آپ سرکار مت بناؤ۔ بھارتیہ جنتا پارٹی از اے ریڈ ریگ فور کشمیر اینڈ کشمیریز۔ یہ شبد میں نے کہے تھے۔ یہ میں نے دوبارہ اپنی اسپیچ سے نکالا، لفظ 'ریڈ ریگ' اور آپ نے اسے اسپیچ میں بھی اُلّیکھ کیا اور دو تین چیزیں بتائی ہیں، میں ان کا اُلّیکھ نہیں کرتا ہوں، وہ 'ریڈ ریگ' پروو ہو گیا کہ وہ 'ریڈ ریگ' تھا۔ So, I was not wrong. I would like to tell the hon. Leader of the House that I was correct. It was a 'red rag' کیوں کہ ستّر سال آپ ان کو گالیاں دیتے تھے اور بعد میں کہتے ہیں کہ ہم تم پر حکومت کریں گے۔ تو اس کا انجام کیا ہوا، اس کا انجام یہ ہوا کہ ملیٹینسی بڑھ گئی۔ ہم نے بالکل زیرو پوائنٹ پر پہنچائی اور آپ نے پھر شروع کی۔ انفلٹریشن بڑھ گیا، سیکورٹی فورسیز کلنگ بڑھ گئی۔ میرے پاس آنکڑے ہیں، کیوں کہ آپ نے وقت نہیں دیا اور مانّئے گرہ منتری جی آنکڑے پڑھیں گے، تو میں نے اپنے پاس بھی خود آنکڑے رکھے ہوئے ہیں۔ مجھے معلوم ہے کہ سرکار کہے گی کہ 237 آدمی ہمارے وقت میں مارے گئے ہیں۔ میرے پاس آنکڑے ہیں کہ ہمارے وقت میں

†Transliteration in Urdu script.

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

1750 آدمی بھی ایک سال میں مارے گئے تھے، 1312 آدمی بھی مارے گئے، 1100 آدمی بھی ایک سال میں مارے گئے۔ آپ تو ڈھائی سو گنتے ہو۔ میرے پاس وہ آنکڑے ہیں اور میں دونگا۔ ہمارے وقت میں، جب ہم سرکار میں تھے، تو ہر سال 1700 تک ملیٹینٹس کو مارتے تھے۔ لیکن سوال ہے کہ ہم نے 2014 میں کہاں چھوڑا، وہ کٹ-آف ڈیٹ ہوگی کہ 2014 میں ملیٹینسی کہاں تھی۔ آج کشمیر میں کیا حالت ہے؟ پولیس مین، سیکورٹی فورسیز کو یہ ہدایت ہے کہ اگر وہ لیو پر جائیں تو گھر پر نہ رہیں۔ کیا پچھلے تیس سالوں میں ایسی کوئی ایڈوائزری تھی؟ گوورنمینٹ آف انڈیا میں، منموہن سنگھ جی کے وقت میں یا نرسمہاراؤ جی کے وقت میں، جب ہم گوورنمینٹ میں تھے، تب کیا اس طرح کی کوئی ایڈوائزری تھی کہ پولیس والا گھر نہیں جائے گا؟

پولیس نے ایڈوائزری جاری کی ہے کہ وہ اپنے گھر نہ جائیں۔ وہ اپنے گھر نہ جائیں، تو کس کے گھر جائیں؟ Where will they go? ایسی سچویشن آپ کی گورنمنٹ وہاں پر لائی ہے کہ پولیس والا بھی اپنے گھر نہیں جاسکتا ہے، لیڈر بھی نہیں جاسکتا ہے، ہٹ لسٹ والا بھی نہیں جاسکتا ہے۔ اب تو ہمیں کوئی اور نئی جگہ پولیس کے لیے بنانی پڑیگی۔ پولیس ابھی تک تو لیڈرس کو پروٹیکشن دینے کے لیے تھی، اب پولیس کو بھی پروٹیکشن دینی پڑیگی۔ یہ استھتی آپ نے ہم کو دی ہے، ایسا کشمیر آپ نے ہمارے حوالے کیا۔ آج سیکورٹی سچویشن وورسٹ ہے، جیسی 1990 میں سیکورٹی سچویشن تھی، جیسا 1990 میں آتنک واد تھا، آج اسی طرح کا آتنک واد ہے۔ Tourism is at its lowest, کوئی ٹورزم نہیں ہے۔ کچھ تو ملیٹینٹس کی وجہ سے اور کچھ ہمارے دو تین چینلس ہیں، ان کی مہربانی سے،

جو صبح سے اینٹی کشمیر پروپگینڈا شروع کردیتے ہیں، جس کشمیری کو جانا بھی ہوتا ہے، وہ بھی بھاگ جاتا ہے، باہر والا تو جائے گا ہی نہیں۔ اب مجھے نہیں معلوم کہ کس کا ایجنڈا وہ چلاتے ہیں، لیکن وہ چلاتے ہیں اور سرکار ان کو نہیں کہتی ہے اپنا ایجنڈا چلانے کے لیے تو بھی وہ چوبیس گھنٹے کھڑے رہتے ہیں، لیکن جو دیش کے خلاف ایجنڈا چلاتے ہیں، ان کے خلاف آپ کے منہہ سے زبان نہیں نکلتی ہے کہ آپ ایسا ایجنڈا کیوں چلاتے ہو؟ جو نفرت کا ایجنڈا ہے اس سے پاکستان کو فائدہ ملتا ہے، ہمارے دیش کو فائدہ نہیں ملتا ہے اور اس سے وہاں ٹورزم ختم ہوجاتا ہے۔

وہاں پر اکانامک ایکٹیویٹی زیرو ہے، نِل ہے، ہینڈی کرافٹس انڈسٹری نِل ہے۔ ہمارے وقت میں ودیش میں میلے لگتے تھے، ان کو آپ نے بند کردیا ہے، اب دیش میں بھی میلے نہیں لگتے ہیں۔ وہاں پر امپلائمینٹ زیرو ہے، پالیٹیکل سچویشن ایسی ہے کہ alienation total ہے۔ کبھی alienation نہیں ہوا۔ ایک روشنی کی کرن کشمیر کے لوگوں کو، کشمیر کے نوجوانوں کو نظر آتی تھی کہ آج نہیں ہوگا، تو کل ہوگا۔ اب کشمیر کے نوجوان پڑھے لکھے ہیں، وہ ڈگریاں حاصل کرتے ہیں اور اب ان کو اندھیرا نظر آتا ہے اور جب وہ دوسری بڑی یونیورسٹیز میں پڑھنے کے لیے جاتے ہیں، تو وہاں ان کے ساتھ کیا سلوک کیا جات اہے، یہ تو سب کو پتہ ہے۔ وہ کیا کھاتے ہیں، کیا پیتے ہیں، کہاں جاتے ہیں کہاں آتے ہیں، ان اسٹوڈینٹس کو بھی تنگ کیا جات اہے۔ وہاں پر ریکروٹمنٹ تقریباً تقریباً ختم ہوگئی ہے۔ جو نئے لوگوں کا ریکروٹمینٹ ملیٹینسی میں ہوتا تھا، this was the thing of past. اب دس بیس کہیں غلطی سے بھولے بھٹکے پیسے دیکر جاتے تھے، لیکن اب یہ سنکھیا سیکڑوں میں پہنچ گئی۔ سال 2018 میں یہ سو سے سوا سو تک کو کراس

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

کر گئی ہے۔ تب کی ریکروٹمنٹ میں اور آج کی ریکروٹمنٹ میں فرق ہے۔ کون کہتا
تھا، Javed Nalka بہت بڑا لیڈر مانا جاتا تھا، وہاں نلکہ ٹھیک کرنے والا،
جھاڑو مارنے والا لیڈر بن جاتا تھا۔ مانیئے گرہ منتری جی، آپ کو بھی معلوم ہے
کہ آج PhD والے جارہے ہیں۔ ایک ڈاکٹر نوکری چھوڑکر چلا گیا۔ آج ڈاکٹری کے
لیے کتنے پیسے دینے پڑتے ہیں، پچاس لاکھ، ایک کروڑ دینے پڑتے ہیں اور اس
کے بعد وہ نوکری چھوڑ کر ملیٹینٹ بن جائے، انجنیرنگ چھوڑ کر ملیٹینٹ بن
جائے، law graduates, post graduates, PhD candidates militancy میں
there is something wrong with the Government of India. There is something wrong with the functioning of the Government of India. There is something wrong with the working of the Government of India and with the thinking of the Government of India. Let me clearly tell you this. Who is responsible for this alienation? Alienation of educated people, not only educated people but also employed people! ان چار
سالوں میں سب سے زیادہ infiltration ہوئی ہے۔ ان چار سالوں میں سب سے زیادہ
cease-fire violations ہوئے ہیں میں ہر cease-fire violations کے بعد جموں،
کٹھوا اور سانبا گیا ہوں۔ جب cease-fire violations ہوتا ہے، یہ بات ٹھیک ہے کہ
ملیٹینسی سے کشمیر میں زیادہ نقصان ہوتا ہے۔

میں آپ کی اطلاع کے لیے بتانا چاہتا ہوں کہ ceasefire violation سے
جموں میں زیادہ نقصان ہوتا ہے، کیوں کہ international border جموں میں ہے
اور جموں شہر تتھا سیالکوٹ، almost twin cities ہیں۔ بیچ میں ایک دیوار ہے،
اس کے پار سیالکوٹ ہے اور ادھر جموں شہر ہے۔ جب کٹھوعہ، سامبا یا جموں
میں گولی آتی ہے، تو وہاں کے شہری مرتے ہیں۔ ان تین چار سالوں میں وہاں سب

سے ذیادہ سٹیزنس مارے گئے ہیں۔ پہلے کبھی بھی جموں، کٹھوعہ اور سامبا کے شہری نہیں مارے جاتے تھے، لیکن اس ceasefire violation میں پہلی بار ایسا دیکھا گیا۔ پہلے کبھی بھی ceasefire violation میں جانور مرتے نہیں دیکھے تھے، لیکن اب ceasefire violation میں ہم نے بھینسیں، گائیں اور بکریاں بھی مرتی دیکھیں۔ ہم نے کبھی پاکستان کی شیلنگ سے گھروں کو برباد ہوتے نہیں دیکھا، لیکن اب ایسا ہورہا ہے۔ میں‌بھی اسٹوڈینٹ لائف سے پالیٹکس میں رہا ہوں اور آج تک پالیٹکس میں ہوں، لیکن میں نے صرف آپ کے وقت میں ایسا دیکھا ہے کہ پاکستان کی شیلینگ سے گھر بھی ٹوٹے، جانور بھی مارے گئے اور انسان بھی مارے گئے۔

مہودے، ہم نے آپ کو ایک ایسا کشمیر اور دیش آپ کے حوالے کیا تھا، جو پرگتی شیل دیشوں میں مانا جاتا تھا، جو وکاس کے لیے مانا جاتا تھا، جو اپنی بھائی برادری، بھائی چارے اور دوستی کے لیے جانا جاتا تھا۔ ہندو، مسلم، سکھ، عیسائی، unity کے لیے amity کے لیے مانا جاتا تھا اور آج ساڑھے چار سال سے وہ دیش نہیں ہے۔ اسے آپ بھی دیکھ رہے ہیں اور ہم بھی دیکھ رہے ہیں۔۔۔۔۔ ہم نے جو کشمیر آپ کو دیا تھا، وہ کشمیر آج نہیں ہے۔ میں وہاں پڑھا ہوں اور وہیں سے راجنیتی بھی شروع کی ہے۔ جموں میں ہمیں معلوم نہیں تھا کہ ہندو کون ہے اور مسلمان کون ہے۔ میں جموں کی بات کرتا ہوں۔ جموں میں ساٹھ فیصد ہندو اور چالیس فیصد مسلم ہیں۔ چار ڈسٹرکٹس میں ہندو میجارٹی ہے اور چھ ڈسٹرکٹس میں

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

مسلم میجارٹی ہے، لیکن overall proportion 60:40 کا ہے۔ مجھے یہ معلوم نہیں تھا کہ کون ہندو ہے اور کون مسلم ہے، کیوں کہ ہم اپنے ہندو دوست کی ماں کو بھی ماں ہی کہتے تھے۔ اس کی بہن کو بہن اور بھابھی کو بھابھی ہی کہتے تھے، لیکن آج وہ ماحول نہیں ہے۔ ا س لیے میں کہنا چاہتا ہوں کہ آپ لوگوں نے ایک سب سے بڑا گفٹ دیا کہ وہاں ستّر سال میں اب ہندو، ہندو سے پہچانا جاتا ہے اور مسلمان مسلمان سے پہچانا جاتا ہے۔ یہ کام یہاں کی گورنمنٹ نے نہیں، وہاں کی گورنمنٹ نے کیا۔

مہودے، جب ہم وہاں نوکریاں دیتے تھے، تو مجھے اس بات کو کہتے ہوئے فخر کا انوبھو ہورہا ہے کہ جتنے بھی چیف منسٹرس بنے ہیں، میرے خیال سے محبوبہ مفتی سے لیکر، غلام نبی آزاد سے لیکر شیخ عبداللہ تک، ہمارے پرسنل اسٹاف میں آلموسٹ نوّے فیصد ہندو ہوتے تھے۔ ہمارے چیف سکریٹریز، ڈی جی پیز، ڈی جیز اور آئی جیز اسی فیصد ہندو ہوا کرتے تھے۔ یہ کسی کو معلوم نہیں ہوتا تھا کہ کشمیر میں ہندو کیوں چیف سکریٹری لگایا گیا ہے یا ڈی جی ہندو کیوں لگایا گیا ہے۔ اس با ت کو کوئی نہیں پوچھتا ہے اور I must tell you even حریت میں بھی کبھی، جسے ہم اینٹی کشمیر کہیں گے یا ہندستان کے فیور میں نہیں ہے، اس نےبھی کبھی یہ نہیں لکھا کہ یہاں مسلمان ہی ڈی جی ہونا چاہیئے یا مسلمان ہی چیف سکریٹری ہونا چاہیئے۔ یہ بات ہمارے میں نہیں تھی۔ آپ نے یہ بیماری بھی جہیز میں جموں وکشمیر کی سرکار کو دے دی۔ یہ آپ کو ہی مبارک ہو۔

مہودے، جب اپ ہر فرنٹ پر فیل ہوگئے، بڑے fanfare کے ساتھ آپ نے وہاں گورنمنٹ بنائی، لیکن جب اپ ہر فرنٹ پر فیل ہوگئے، economic front, political front, tourism front, سب alienation کمپلیٹ ہوگیا اور اس کے بعد

آپ نے وہاں کہہ دیا کہ ہم تو چلے، اپنا کٹورا لیکر، اب تم جانو، اب ہم سرکار نہیں چلائیں گے۔ میں نے ایسا کبھی نہیں دیکھا ہے کہ Government of India خود withdraw کرے۔ ہمارے گورنمنٹ کا بھی سپورٹ withdraw کیا تھا، لیکن وہ ریجنل پارٹی نے کیا تھا، لیکن یہاں Government of India withdraw کررہی ہے۔ The Government of India یعنی، بھارتیہ جنتا پارٹی نے کہا کہ ہم withdraw کرتے ہیں۔

مہودے، میں کہنا چاہتا ہوں کہ آپ نے وہاں کی گورنمنٹ سے سپورٹ withdraw کیا، لیکن پھر چار پانچ مہینے وہاں کی اسمبلی کو suspended animation میں کیوں رکھا؟ جب آپ نے withdraw کیا، تو الیکشن ہونا چاہیئے۔ اس وقت اچھا موسم تھا۔ اس وقت climate بہت اچھا تھا اور الیکشن ہوجاتا، لیکن آپ کی نظر تھی کہ ہم کہیں جوڑ توڑ کریں۔ چار مہینے آپ توڑنے اور جوڑنے میں لگے رہے۔ پی ڈی پی اور کانگریس کو توڑنے میں لگے رہے۔ مجھے اپنے ایم ایل ایز نے بتایا کہ توڑنے کی کیا کیا شرائط تھیں۔ میں ان سب باتوں کا یہاں اُلیکھ نہیں کرنا چاہتا ہوں۔ اس کے بعد این سی کو توڑنے میں لگے رہے۔

ان سب نے، عمرعبداللہ کے وقت میں، فاروق عبداللہ کے وقت میں، ہمارے وقت میں بہت کام ہوا۔ میں شری فاروق عبداللہ کو بھی بدھائی دیتا ہوں کہ انہوں نے 1996 میں سب سے بڑا الیکشن سمبھالا۔ اس کے بعد، ہمارے اور عمر عبداللہ کے وقت سے وکاس اپنے آسمان پر پہنچا، لیکن یہ تمام چیزیں نیچے دب گئیں۔ آپ انہی پارٹیز کو توڑ رہے ہیں، آپ نیشنل کانفرنس کو توڑ رہے ہیں، آپ کانگریس کو توڑ رہے ہیں۔

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

سر، جب میں چیف منسٹر تھا، تب ایک گورنر تھے، وہ ہماری سوچ کے نہیں تھے۔ بھگوان ان کی آتما کو شانتی دے۔ انہوں نےمجھے بتایا کہ میں آپ کی سوچ کا نہیں ہوں۔ لیکن کشمیر میں مجھے آپ کی سوچ کے لوگوں کی ضرورت ہے، جو نیشنلسٹ ہیں۔ جو ہمارے لا منسٹر ہیں، وہ انہیں جانتے ہیں، جنکا میں اُلیکھ کررہا ہوں۔ کیا میں آپ کو کمزور نہیں کرونگا؟ کیوں کہ ہمیں آپ سے فائدہ ہوگا، ہمیں نیشنلسٹ فورسیز چاہیئے، آپ کی سوچ میں پہلا شبد انہوں نے بتایا، اس لیے میری طرف سے آپ کو ہنڈریڈ پرسینٹ سپورٹ ہے۔ مانیئے گرہ منتری جی، یہ سوچ نہیں رکھوگے۔ جو آپ کے پلرز ہیں، وہاں نیشنل کانفرنس اور کانگریس اور کانگریس پرو انڈیا ہیں، سیکولر فورسیز ہیں۔ وہ لڑتے ہیں۔ وہ کشمیر کو دیش کے ساتھ رکھنا چاہتے ہیں، لیکن آپ انہیں کو صاف کرتے ہو، آپ انہیں کی ٹانگیں کاٹتے ہو۔ آپ نے سب سے پہلے انہی کی سیکورٹی وِدڈرا کی۔ جموں وکشمیر میں سیکورٹی وِدڈرا کرنے کا مطلب ہے سافٹ ٹارگیٹ. خیر، وہ اس لیے بچ گئے، کیوں کہ ان کو لگا کہ اب بی جی پی نے سکیورٹی وِدڈرا کی، شاید وہ ان بےچارے بچوں کو مروانا ہی چاہتے تھے، اس لیے مت چھیڑو، یہ بھبی یتیم ہیں۔ یہ آپ کی کریڈیبلیٹی ہوگئی۔ جب سب کچھ ختم ہوگیا، آپ نے تب حوالے کیا۔ تین چار مہینے کے بعد کچھ سوچ آگئی۔ مانیئے مہودے، میں اس میں نہیں تھا، مانیئے لیڈر آف دی ہاؤس کو معلوم ہے، لیکن نیشنل کانفرنس، پی ڈی پی اور کچھ ہمارے لیڈرس سوچ رہے تھے کہ حالانکہ تنخواہ تو ہمیں مل رہی ہے، لیکن اس گورنر رول سے کوئی فائدہ نہیں ہورہا ہے۔ بلکہ لوگوں کو نقصان ہی ہورہا ہے اپنی میٹیڈ سسپینشن میں بھی تنخواہ تو مل رہی تھی، لیکن لوگوں کو فائدہ نہیں ہورہا تھا۔ انہوں نے سوچا ہم ملکر سرکار بنائیں۔ یہ جو سرکار بنتی تھی، آلموسٹ ٹو تھرڈس میجارٹی کی بنتی تھی۔ یہ انڈیویجولس کے بیچ میں سمجھوتہ نہیں تھا۔ جس طرح کی انڈیویجولس کی

سرکار بھارتیہ جنتا پارٹی بنانا چاہتی تھی کہ دو ہمارے لیے، دو اس کے لیے، دو اس کے لیے، ویسا وہ نہیں چاہتے تھے۔ یہاں پالیٹیکل پارٹیز خود سرکار بنارہی تھیں۔ خود نیشنل کانفرنس، خود پی ڈی پی۔ انہوں نے خود ہی کانگریس پارٹی کو بھی convince کرنے کی کوشش کی تھی کہ آپ بھی رہو۔ اگر ہم جاتے تو as پارٹی جاتے، as individual نہیں جاتے، ایک فیکس بھی گورنر کے پاس پہنچ گیا کہ کل ہم اپنا سپورٹ دیں گے اور جیوں ہی گورنمنٹ کو معلوم پڑ کہ کل یہاں گورنمنٹ بنے گی، تیوں ہی ایک گھنٹے کے اندر ودھان سبھا بھنگ ہوگئی۔ مانیئے گرہ منتری جی اور لیڈر آف دی ہاؤس، اگر ہماری گورنمنٹ ہوتی اور ہم سرکار نہیں چلاپاتے، تو ہم ان کے پاؤں پکڑتے کہ ریجنل پارٹیز ایک ہوجاؤ اور سرکار بناؤ۔ ہم ان کا فیسیلیٹیٹ کرتے، کیوں کہ جموں وکشمیر میں آپ کو فیسیلیٹیٹ کرنا ہوتا ہے، مدد کرنی پڑتی ہے۔ آپ کو ریجنل، سیکولر، نیشنلسٹ پارٹیز کو spoon feeding کرنی پڑتی ہے، ان کی ٹانگیں لگانی پڑتی ہیں، ان کی ٹانگیں کاٹنی نہیں ہوتی ہیں۔ آپ کو ان کو مضبوط کرنا ہوتا ہے، ان کو سورکشا دینی ہوتی ہے، ان کی سورکشا چھیننی نہیں ہوتی۔ جب تک آپ یہ نہیں سمجھیں گے، تب تک آپ کشمیر کے ساتھ نیائے نہیں کریں گے۔ آپ گورنر رول لائے، سوبھاوک ہے کہ گورنر رول، مجھے نہیں معلوم کہ یہاں کتنے لوگوں کو معلوم ہے کہ گورنر رول جموں وکشمیر میں سب سے سخت ہوتا ہے؟ اگر سینٹرل گورنمنٹ صحیح سوچ والی ہو، تو اس کا مِس یوز نہیں کرتی، لیکن اگر آپ کے جیسی سینٹرل گورنمنٹ ہو تو اس کا بھینکر مِس یوز کرتی ہے۔ کیوں کہ جموں وکشمیر ایک ہی اسٹیٹ ہے۔ جہاں under the J&K Constitution, both executive and legislative گورنر کو

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

پاور ہے۔ میں آپ کو بتانا چاہتا ہوں کہ آپ کے اس گورنر رول میں، لاز میں 55 amendments آئے ہیں۔

کیا یہ مناسب ہے؟ کیا یہ مناسب ہے کہ ایک ایسے سینسٹیو اسٹیٹ میں، جموں وکشمیر میں گورنر الگ الگ laws میں 55 amendments کرے؟ کس کو خوش کرنے کے لیے کیئے ہیں؟ کس سے وچار کرکے کئیے ہیں؟ اب نئی گورنمنٹ کیا کریگی، Executive because it is a legislative power. اور اسمبلی کی تمام پاورس ان کے پاس ہیں۔ ان کا اپیوگ کرکے وہ قانون بدل دیں، اب یہ قانون کون بدلے گا؟ اس لیے میں سمجھتا ہوں کہ آپ کو معلوم نہیں ہے، جانکاری نہیں ہے، sensitivity کے بارے میں معلوم نہیں ہے، دل نہیں ہے، ورنہ آپ ایک امینڈمینٹ نہیں کرنے دیتے اور آپ کہتے کہ الیکشن ہوجائے گا۔ اس لیے ااپ اپنے سوچ کے حساب سے جو مرضی ہے، امینڈمینٹ کراتے جاؤ اور جہاں جو جلا ہے، اس پر تیل ڈالتے جاؤ۔ ہمیں تو اس کو منظور کرنے کے علاوہ کوئی چارہ نہیں ہے۔ ایک ذمہ دار پارٹی کے طور پر ہم اس کا سمرتھن کریں گے، لیکن آپ یہ جو سب کچھ کررہے ہیں، اب گرماگرمی بہت ہوگئی، آخر میں ایک شعر سے میں اپنی بات ختم کرنا چاہتا ہوں۔

سب کچھ لٹاکر ہوش میں آئے تو کیا کیا
دن میں اگر چراغ جلائے تو کیا کیا

آپ دن میں چراغ جلانے والے ہیں۔ مانئیے ڈپٹی چئیرمین سر، بہت بہت دھنیواد۔

श्री उपसभापति: धन्यवाद। इसके पहले कि मैं माननीय नेता सदन, श्री अरुण जेटली जी को आमंत्रित करूँ, मैं बताना चाहूंगा कि BAC ने 27 दिसम्बर, 2018 को अपनी मीटिंग में इस बहस के लिए दो घंटे तय किए थे। माननीय चेयरमैन के आदेश के अनुसार मुझे समय के अनुसार ही चलना पड़ेगा। माननीय नेता सदन। ...**(व्यवधान)**...

श्री जावेद अली खान (उत्तर प्रदेश): डिप्टी चेयरमैन सर, ...**(व्यवधान)**... बहुत महत्वपूर्ण बहस सदन के अंदर चल रही है

†

جناب جاوید علی خان : ڈپٹی چیئر مین سر، ...(مداخلت)... بہت اہم بحث سدن کے اندر چل رہی ہے۔

श्री उपसभापति: किस नियम के तहत आपका point of order है? ...**(व्यवधान)**... किस नियम के तहत ...**(व्यवधान)**... आपका point of order है? ...**(व्यवधान)**... आप नियम quote करेंगे, तो मैं सुनूँगा।

श्री जावेद अली खान: मान्यवर, मैं अवरोध नहीं कर रहा हूं, आप मेरी बात तो सुन लीजिए। ...**(व्यवधान)**... एक मीटिंग है Joint Committee on Citizenship Amendment Bill ...**(व्यवधान)**... JPC, उसकी 3 बजे मीटिंग है। वह भी गृह मंत्रालय से संबंधित है और बहुत महत्वपूर्ण है, final stage में है। यह विषय भी बहुत महत्वपूर्ण है, जो आज सदन के अन्दर बहस हो रही है। हम इसे भी miss नहीं करना चाहते। मेरा निवेदन यह है कि उस मीटिंग को आज के अलावा कल या परसों तक स्थगित करने के लिए निर्देशित करें। यह मेरा कहना है।

†

جناب جاوید علی خان : مانیور، میں اورودھ نہیں کر رہا ہوں، آپ میری بات تو سن لیئے ...(مداخلت)... ایک میٹنگ ہے، 'جوائنٹ کمیٹی آن سٹیزن شپ امینڈمینٹ بل' ...(مداخلت)... جے‌پی‌سی، اس کی تین بجے میٹنگ ہے۔ وہ بھی گرہ منترالیہ سے سمبندھت ہے اور بہت اہم ہے، فائنل اسٹیج میں ہے۔ وہ وشئے بھی بہت اہم ہے، جو آج سدن کے اندر بحث ہو رہی ہے۔ ہم اسے بھی مس نہیں کرنا چاہتے ۔ میرا نویدن یہ ہے کہ اس میٹنگ کو آج کے علاوہ کل یا پرسوں تک استھگت کرنے کے لئے نردیشت کریں۔ یہ میرا کہنا ہے۔

श्री उपसभापति: यह विषय अलग है। माननीय नेता सदन।

†Transliteration in Urdu script.

सभा के नेता (श्री अरुण जेटली): माननीय उपसभापति जी, मैं यह ईमानदारी से स्वीकार करता हूं कि इस चर्चा में intervene करने का मेरा कोई इरादा नहीं था, लेकिन जब आज़ाद साहब बोल रहे थे, तो मुझे लग रहा था कि जैसे जम्मू-कश्मीर की समस्या केवल पिछले साढ़े चार साल में पैदा हुई हो और 1947 से लेकर 2014 तक बहुत स्वर्णिम इतिहास रहा हो, इतिहास के भी कुछ chapters ऐसे थे, उन्होंने आज उस इतिहास का जो पुनर्लेखन किया, जिसको भूलने का और मिटाने का प्रयास किया और कई स्थानों पर तो उसको re-write करने का भी प्रयास कर डाला। आरम्भ में एक कठिन situation थी, लेकिन यह एकमात्र ऐसा प्रान्त है, जिसका एक-तिहाई हिस्सा हमारे दुश्मनों के पास है। अगर आप उस पूरे इतिहास को पढ़ें और आप तो उस सूबे के हैं, इसलिए जानते होंगे कि अगर इस देश की sovereignty कभी challenge हुई, तो एकमात्र जम्मू-कश्मीर ने खोया। वहां फौज भेजने में देरी करना, वहाँ unilateral ceasefire कर देना, उस वक्त तो उप-प्रधान मंत्री और गृह मंत्री थे, उनको भी बाद में पता चलना, रेडिया पर घोषणा पहले हो जाना और उस वक्त होना, जबकि हमारी सेनाएँ आगे बढ़ रही थीं और बारामूला के आगे जाकर जो retrive करने की कोशिश कर रही थीं, यह इतिहास तक शुरू हुआ था। अब उसकी जिम्मेवारी भी अगर आप राजनाथ सिंह जी पर डालेंगे, तो यह तो इतिहास का मज़ाक बनाना होगा। जब संविधान बना, एक मौलिक विचार में आपके और हमारे मतभेद हैं, हालांकि आज मैं उस चर्चा में ज्यादा नहीं जाऊंगा, केवल दो विषय कहूंगा। जो अलग अस्तित्व की कल्पना थी, उसकी यात्रा, पिछले 70 साल में, या अब तो 71 साल पूरे हो गए, अधिक विलय की तरफ हुई या अलग अस्तित्व से लेकर अलगाववाद की तरफ हुई? कभी न कभी इतिहास इसके ऊपर बहुत कठोर टिप्पणी करेगा, जिन लोगों ने उस कल्पना का निर्माण किया था। ऐतिहासिक दृष्टि से उस वक्त की सरकार ने, उस वक्त के नेतृत्व ने जो एक-एक आकलन किया था, वह गलत था। You put all your eggs in one basket. 1952-53 में एक स्थिति वह आ गई कि जिस एक टोकरी में आपने आपने सारे अंडे डाले थे, वे आपके सामने से कोई उठा कर ले जाने लग पड़ा था, फिर आपको अपनी लाइन रिवर्स करनी पड़ी। जो सारा midnight operation हुआ, शेख साहब को गिरफ्तार किया, उस वक्त कांग्रेस पार्टी ही नेशनल कॉंफ्रेंस सूबे में कांग्रेस पार्टी नहीं होती थी, यह 1966 में बनी। कांग्रेस पार्टी और नेशनल कॉंफ्रेंसव का नेतृत्व, एक ही पार्टी, नेशनल कॉंफ्रेंस के नाम से नाम करता था और ये स्वयं नेशनल कॉंफ्रेंस हो गए। शेख साहब के नेतृत्व में नेशनल कॉंफ्रेंस के कुछ लोग जेल में चले गए और जो बाहर थे, उन लोगों ने Plebiscite Front बना लिया। Plebiscite Front इसलिए बनाया, क्योंकि आपके नेताओं ने पूरे विश्व के सामने वह आश्वासन दे दिया, जिसकी कोई आवश्यकता नहीं थी और जो आश्वासन आपके द्वारा दिया गया, वह गलत था। उसकी कीमत इस देश को कितने दशकों तक अदा करनी पड़ी। It hung around our neck like an albatross. यह आपका दृष्टिकोण था। आप सत्ता में तो आ गए, लेकिन उस इतिहास को भूल गए कि आप सत्ता में चले कैसे? आज़ाद साहब, ईमानदारी से आकलन कर लीजिए, इसके ऊपर तो पुस्तकें और इतिहास लिखा गया है कि 1957, 1962 और 1967 में जम्मू-कश्मीर में चुनाव कैसे हुआ था। हमारे सदन में पीडीपी के कुछ माननीय सदस्य हैं, वे सब इस इतिहास की पुष्टि करेंगे कि कश्मीर घाटी में जो दूसरा प्रमुख विपक्षी राजनैतिक दल था, उसके नेता तो जेल में थे, कस्टडी में थे। वहां कांग्रेस का बहुत सपोर्ट नहीं था, जो था, वह जम्मू में था। उस समय हम तो बहुत छोटे थे और जम्मू में पंडित प्रेमनाथ डोगरा जी के नेतृत्व में, प्रजा परिषद के रूप में काम करते थे। उस इतिहास में हमारा कोई रोल नहीं था, केवल दो रोल थे कि जब अक्तूबर, 1947 में सीमा पार से आक्रमण हो

रहा था, उसके बचाव में प्रजा-परिषद के लोग, पंडित प्रेमनाथ डोगरा जी की प्रेरणा से अपने देश को बचाने के लिए वहां गए थे। 1950 से आपने जो बैरियर्स खड़े कर दिए थे, उनको हटाने के लिए डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने अपनी शहीदी दी थी। उसके अलावा ...**(व्यवधान)**...

श्री आनन्द शर्मा: उन्होंने शहादत कहां दी थी? ...**(व्यवधान)**... He was unwell. ...*(Interruptions)*....

श्री उपसभापति: प्लीज़, आप धैर्य से सुनें। ...**(व्यवधान)**...

श्री आनन्द शर्मा: वे बीमार थे और जेल में नहीं, गेस्ट हाउस में थे। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: नहीं, नहीं, यह गलत है। ...**(व्यवधान)**... प्लीज़, आप शांत रहें। ...(व्यवधान)...

SHRI ARUN JAITLEY: Anand Saheb, it is a very unpleasant chapter of history.

SHRI ANAND SHARMA: Yes, but, let the country not be misled. ...*(Interruptions)*... You don't respect the martyrs, subsequent martyrs including the martyred Prime Minister. ...*(Interruptions)*... Please don't. ...*(Interruptions)*...

श्री उपसभापति: नहीं, नहीं, आनन्द जी, आप प्लीज़ बैठिए। ...**(व्यवधान)**... अरुण जी, आप बोलिए।

SHRI ARUN JAITLEY: I have not said so. We have not said so about any Prime Minister or a former Prime Minister who gave his life for this country. But, don't gloss over the sacrifices made by people. Like, political leaders die in custody without medical aid because some quack gives them an injection which he had a hostility to, in terms of his body, I do not know what to call it. But I think let us keep that debate out because we are discussing some more serious issue. How were the 1957, 1962 and 1967 elections conducted? वे चुनाव कैस हुए थे? शायद इस देश के इतिहास में लोकतंत्र के साथ इतना बड़ा खिलवाड़ किसी ने नहीं किया, जो उस वक्त के कांग्रेस के नेतृत्व ने किया था। कश्मीर घाटी में अब्दुल ख़ालिक नाम के एक डिस्ट्रिक्ट मेजिस्ट्रेट होते थे। आज़ाद साहब उसका नाम सुनते ही मुस्कुरा रहे हैं। एक कानून बना दिया कि पूरी कश्मीर वैली में सारे नॉमिनेशंस केवल एक आदमी के सामने दायर होंगे। All nominations will be before one person.

SHRI GHULAM NABI AZAD: Only in one district. He was a D.C.

श्री अरुण जेटली: जब लोग नॉमिनेशन फाइल करने जाते थे, तो उस वक्त बहुत से जिले नहीं हुआ करते थे, श्रीनगर जिला ही आधे से ज्यादा कश्मीर हुआ करता था। जब लोग नामांकन भरने जाते थे, तो कभी वह गायब हो जाता था, कुछ उसे दे नहीं पाते थे। It had to be given to him in person. वे लोग नॉमिनेशन नहीं लेते थे और जो गलती से उसको दे दिया, उसको वह खारिज कर

[श्री अरुण जेटली]

देता था। कभी 22, तो कभी 25, तो कभी 27 एमएलएज़, जहां आपका वोट नहीं था, ख़ालिक साहब की मेहरबानी से वे निर्दलीय चुन कर आ जाते थे। इसलिए उस तरह के चुनाव से आप लोगों ने वहां हुकूमत की है और आप कहते हैं कि लोग पिछले साढ़े 4 साल में alienate हो गये? अगर लोकतंत्र के साथ इस तरह का खिलवाड़ करोगे, alienation का बीज बोओगे और कश्मीर का मासूम नागरिक कहेगा कि मुझे इस मुल्क से, आज़ाद हिन्दुस्तान से लोकतंत्र भी नहीं मिल सकता, चुनाव लड़ने का अधिकार भी नहीं मिल सकता, केवल सत्ता में रहने के लिए यह राजनीति थी, जो उस वक्त कांग्रेस पार्टी ने की। पूरे कश्मीर के अन्दर मज़ाक चलता था कि कश्मीर में दो तरह के एमएलएज़ हैं, एक ख़ालिक एमएलएज़ हैं और दूसरे जनता एमएलएज़ हैं, एक को ख़ालिक ने चुना है और दूसरे को जनता ने चुना है। उस सरकार ने इतने बेहतरीन काम किये, जिसका पूरा इतिहास आप हम लोगों को बता रहे हैं। कश्मीर में लोग मानते हैं कि जब मोरारजी भाई प्रधान मंत्री बने, तो 1977 का जो चुनाव हुआ, कश्मीर के इतिहास में first free and fair election हुआ था। कांग्रेस के जाने के बाद 1977 was the first free and fair election in the history of the Valley. केवल इतना ही नहीं, आपने शेख साहब को सीट पर बैठाया, फिर उनको गिरफ्तार करना पड़ा, फिर आपने उनको जेल में रखा, कस्टडी में रखा। 1976 में आपने उनके साथ समझौता किया। समझौता करने के कुछ महीनों के अन्दर ही फिर उनसे झगड़ा शुरू हो गया। शेख साहब के बाद जब फारुख साहब चीफ मिनिस्टर बने, यहाँ नेशनल कांफ्रेंस का कोई सदस्य नहीं है, आप बड़ा सीधा आ गये कि हमने फारुख साहब को मुख्य मंत्री बनाया। 1984 में जम्मू-कश्मीर के गवर्नर कौन थे? यह नाम बड़ा महत्वपूर्ण है। इसके राजनीतिक संकेत हैं। 1984 के आरम्भ में जम्मू-कश्मीर के गवर्नर श्री बी.के. नेहरू थे। श्री बी.के. नेहरू कौन थे, किनसे उनका सम्बन्ध था, यह पूरा देश जानता है। जब बी.के. नेहरू साहब को कहा गया कि किन्द्र की योजना बनी है कि फारुख अब्दुल्ला की सरकार को destabilize करना है, तो उन्होंने स्पष्ट रूप से यह कह कर इनकार कर दिया कि you cannot play with fire in the State of Jammu and Kashmir. बी.के. नेहरू साहब ने अपना इस्तीफा दे दिया और वे दिल्ली आ गये। नये गवर्नर साहब को भेज कर overnight coup में आपने श्री गुल मुहम्मद शाह की सरकार बनवा दी। आप हम पर आरोप लगा रहे हो, आप इधर-उधर से एमएलए उठा रहे हो, हमने तो ऐसा कोई प्रयास नहीं किया है। आपने National Conference को तोड़ा, कहीं न कहीं से MLAs उठाए और overnight श्री जी.एम. शाह की सरकार वहां बना दी। बाद में उनके जो बयान आते थे, उनसे पता नहीं लगता था कि वे देश के साथ हैं या देश के साथ नहीं हैं - extremists nature के statements आते थे। जब वह experiment नहीं चला तो फिर 1986 में आपने फारुख साहब से जाकर समझौता किया। वह सरकार आपकी ऐसी चली, ऐसी बेहतरीन सरकार थी कि 1989 तक उस सरकार की वजह से इतना बड़ा alienation आज तक जम्मू-कश्मीर के इतिहास में कभी नहीं हुआ! कोई प्रशासन नाम की चीज़ नहीं बची थी, कोई governance नहीं बची थी। इस देश का कोई sign or symbol नहीं बचा था। अगर State Bank of India की कोई ब्रांच थी तो India शब्द के ऊपर चादर लटका दी जाती थी। केन्द्र सरकार का कोई दफ्तर वहां allow नहीं किया जाता था। यहां तक कि 1990 की 26 जनवरी के दिन जो घटनाएं plan की गईं, वे सब contemporary installments में record की गईं। यह वही period था, जब मुफ्ती साहब के परिवार से उनकी एक बेटी को kidnap कर लिया गया

3.00 P.M.

था। कोई governance नाम की चीज राज्य में नहीं बची थी। 1989 में जब कांग्रेस power से बाहर गई, तो कश्मीर को उस alienation की स्थिति तक छोड़कर आप लोग गए। उसके बाद आपको भी समझ आई और मैं उस समझ से कोई मतभेद नहीं रखता कि जम्मू-कश्मीर में वहां के क्षेत्रीय दलों का भी रोल है। जम्मू-कश्मीर में जो लड़ाई है, वह अलगाववाद के खिलाफ है, आतंकवाद के खिलाफ है। वहां की main stream parties और national parties को इस दृष्टि से कि देश से अलगाववाद और आतंकवाद समाप्त करना है, कहीं-न-कहीं विचारों का मतभेद होते हुए भी convergence करना पड़ा। ऐसे experiments आपने भी किए थे। आप करें तो बहुत अच्छा है और हम करें तो red rag है। इसी red rag की वजह से 4,500 लोग पंचायतों के चुनाव में जीतकर आए हैं। एक नई सोच कश्मीर घाटी के अंदर emerge हो रही है। जिस प्रकार से इस परिस्थिति का वहां की जनता के अंदर effect पड़ा है - आज वहां stone throwing की घटनाएं पिछले 6-साढ़े 6 सालों से कम क्यों हो गईं? इतना ही नहीं, पूरे alienation का एक इतिहास है, नीतियां हैं, जो वहां पर बनाई गईं - चाहे आपकी सरकार थी या हमारी थी। हम उससे मुकाबला करने के लिए जूझते थे। आपने जिसे golden period कह दिया, उसी golden period में तो stone throwing शुरू हुई थी और stone throwing शुरू होने के पीछे कारण बड़ा स्पष्ट था। Stone throwing movement के पीछे कारण यह था कि इस देश की आतंकवादियों से लड़ने की क्षमता सुधर रही थी - चाहे सरकार आपकी रही या हमारी रही। पूरा विश्व कभी भी इस mood में नहीं था कि हम स्वीकार करें कि कोई आतंकवाद के आधार पर कहीं विजय प्राप्त कर ले। Nobody can be allowed to enjoy the fruits of terrorism. That is the global mood today. आतंकवादियों और हुर्रियत में भी यह सोच बदली और वह सोच इस तरह बदली कि किसी प्रकार से हम लोग इसे civil disobedience का रूप दे दें। इसीलिए 2008 में उन्होंने अपनी रणनीति बदली और उस बदली हुई रणनीति के तहत उन्होंने mass upsurge ...**(व्यवधान)**...

SHRI GHULAM NABI AZAD: Stone-throwing was in 2010.

श्री अरुण जेटली: नहीं, 2010 में अमरनाथ यात्रा थी। No, it was in 2008. ...**(व्यवधान)**...

SHRI GHULAM NABI AZAD: No, stone-throwing was in 2010. ...**(व्यवधान)**...

SHRI ARUN JAITLEY: I am sorry. I stand corrected. अच्छा, 2008 में अमरनाथ यात्रा थी। आप उस वक्त मुख्य मंत्री थे।

SHRI GHULAM NABI AZAD: It was 2010.

श्री अरुण जेटली: जब 2010 में यह शुरू हुई थी, उसके पीछे उद्देश्य यह था कि mass-disobedience की जाए। हर व्यक्ति स्कूल के बच्चे से लेकर कॉलेज का विद्यार्थी या कोई आम आदमी बस्ते के अंदर पत्थर लेकर जाए, कोई पांच आदमी सात आदमी की पुलिस या सीआरपीएफ, बीएसएफ की चौकी दिखे, तो उसके ऊपर दस हजार पत्थर बरसा दो। वे तो weapon का काम करते हैं। तब से इसका एक नमूना पैदा होना शुरू हो गया।

आज़ाद साहब ने 2008 का ज़िक्र किया, जब अमरनाथ का मूवमेंट हुआ। इतना बड़ा तीर्थस्थान और विरोध यह था कि वहां पर जो यात्री जाते हैं, उनकी सुविधा के लिए जमीन नहीं दी जाएगी,

[श्री अरुण जेटली]

केवल temporary use के लिए, क्योंकि वह तो केवल कुछ सप्ताह के लिए यात्रा होती है। सोच में बदलाव यहां तक था। इससे बेहतर होगा कि आज़ाद साहब, अगर इतिहास में जाना है, अगर ब्लेम गेम में जाना है, तो मैं केवल आपको इतना कह हूं कि जब इतिहास फैसला करेगा कि कश्मीर के ऊपर डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का दृष्टिकोण सही था या पं. जवाहरलाल नेहरू का सही था, तो शायद बहुत बड़ी तकलीफ आपको होगी। लेकिन अगर आपको स्टेट्समैन बनना है और आपकी पार्टी को बनना है, तो कम से कम हम लोग भविष्य की सोचें और उस भविष्य की सोच में कश्मीर में जो गलतियां हुईं, उनसे बाहर निकल कर, उस ब्लेम गेम से बाहर निकल कर वहां अमन-चैन, विकास, डेवलपमेंट किस प्रकार से हो सकता है, उसकी बात हम लोग सोचें, तो शायद बैटर होगा और केवल अगर आपका प्रयास यह रहेगा कि कोई न कोई हमारी हिस्टोरिकल मिस्टेक्स को व्हाइटवाश कर दे, तो वह तो इतिहास का एक अंग बन चुकी हैं, इस देश का हर नागरिक जानता है, उससे मुक्ति कभी आपको मिल नहीं पाएगी, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री उपसभापति: प्रो. राम गोपाल यादव जी।

प्रो. राम गोपाल यादव (उत्तर प्रदेश): धन्यवाद, श्रीमन्। इस resolution पर माननीय नेता विरोधी दल और नेता सदन, दोनों ने विस्तार से कश्मीर के इतिहास के बारे में, कश्मीर के लोगों के विचार के बारे में बात की। इसमें दो राय नहीं कि कश्मीर बहुत खूबसूरत प्रदेश है और जब हम वहां जाते हैं, तब इस बात पर अफसोस होता है कि इतने अच्छे प्रदेश को देश के विभाजन की वजह से एक त्रासदी झेलनी पड़ी, उसका एक बहुत बड़ा हिस्सा दूसरी तरफ चला गया और आतंकवादी गतिविधियों की वजह से कश्मीर के लोगों के लिए रोजी-रोटी का जो मुख्य जरिया टूरिज्म था, वह इतना adversely प्रभावित हुआ कि धीरे-धीरे लोग निराश होने लगे। यहां पर मैं उस इतिहास में नहीं जाना चाहता हूं कि यह स्थिति क्यों आई? मैं यहां यह भी नहीं कहना चाहता हूं, यहां पहले कह चुका हूं कि आखिर देश का बंटवारा क्यों हुआ? टू नेशन्स थ्योरी अस्तित्व में क्यों आई? इसकी भी चर्चा नहीं करना चाहता हूं। मैं यह जानता हूं कि अगर पुराने घावों को कुरेदा जाएगा, तो उससे खून ही निकलेगा, उससे दर्द ही निकलेगा। जब इस सदन में चर्चा होती है और खास तौर से जब कश्मीर पर चर्चा हो रही होती है, लाइव टेलिकास्ट हो रही होती है, सारे लोग सुन रहे होते हैं, नई पीढ़ी जो कुछ बातें नहीं जानती है, वह भी यहां से उनका बता दी जाती है, इसलिए मैं उस तरह की कोई बात नहीं करूंगा कि वहां के लोगों के sentiments को कोई हर्ट हो। सर, एक बार हमारी पेट्रोलियम कमिटी वहां गई थी। जब हम लोग गुलमर्ग जा रहे थे, तब हमने बीच में कहीं गाड़ी रुकवा ली। इतनी खूबसूरत जगह को देखकर हमारी कमिटी के कई मेम्बर्स इमोशनल हो गए कि कितना दुखद है कि यह इतनी खूबसूरत जगह है, लेकिन लोग उधर से आने वाले आतंतवादियों के भय की वजह से इसे देखने नहीं आ पा रहे हैं। वहां ऐसे तमाम तरह के लोग हैं, यह आज़ाद साहब ने भी बताया, जब वहां टूरिस्ट जाते हैं, इससे उनकी रोज़ी-रोटी चलती है। वे यह काम करते हैं। इसे देख वे सभी दुखी हुए।

महोदय, जिस तरीके से कई बार निर्वाचित सरकरों को हटाया गया, चाहे वह इन्होंने हटाया हो या अबकी बार इन्होंने हटाया हो, उसके रिज़ल्ट कभी अच्छी नहीं आए। सर, जनता जब यह अहसास करती है कि हमारे द्वारा चुने हुए लोगों को बेदखल किया जा रहा है और एक व्यक्ति के

हाथ में सत्ता दी जा रही है, तो उसका रिएक्शन, उसकी प्रतिक्रिया अच्छी नहीं होती है। चाहे वह शेख अब्दुल्ला की गिरफ्तारी रही हो, चाहे जीएम साहब की सरकार की स्थापना और फिर उनको हटाना रहा हो, चाहे बाद की कई सरकारों को हटाना रहा हो, यह कुछ भी अच्छा नहीं था, यह कश्मीर के हित में भी नहीं था और देश के हित में भी नहीं था।

महोदय, यह आप जानते हैं कि जब पड़ोस का मुल्क इस बात पर आमादा हो कि हम पाकिस्तान के विभाजन का बदला हिन्दुस्तान से लेंगे, इसके लिए वहां पर जो भी सरकार होगी, वह हर कीमत पर हमारे देश में अस्थिरता पैदा करने की कोशिश करेगी, तो इसके लिए दिल्ली में जो भी सत्ता में हो, उसे कश्मीर जैसे मुद्दे पर बहुत सावधानी से कदम उठाना चाहिए और अपने दुश्मन को कभी भी कमजोर मत समझिए। आपने सर्जिकल स्ट्राइक की, उसका बहुत propaganda किया, लेकिन आप एक दिन भी उन आतंकवादियों को रोक नहीं पाए। जब हमारे जवान दो लोगों को मार देते हैं, तो अखबार में यह खबर छपती है कि आज दो आतंकवादी मार गिराए और उसके आगे छोटी सी खबर होती है कि इसमें हमारे दो जवान शहीद हो गए। यह रोज़ाना हो रहा है। मैं कहना चाहता हूं कि अगर इस तरह की कार्यवाही करते भी हैं, तो दुनिया को बताते क्यों हैं कि मैंने यह किया। राजनीति का धर्म यह है कि आप कोशिश कीजिए कि जो आप करें, उसके बारे में कोई भी तीसरा देश, दोनों के अलावा कोई भी देश यह न समझें कि भारत अन्याय कर रहा है। ये यही समझें कि सारी गड़बड़ी पाकिस्तान की तरफ से हो रही है। सर्जिकल स्ट्राइक का जितना propaganda किया गया, उसका हमें लाभ नहीं मिला, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय जगत में लोग यह अहसास करने लगे कि हिन्दुस्तान भी इस तरह की हरकतें करता है। यह चीज़ नहीं होनी चाहिए। आप जो भी करें, उसे चुपचाप करें। देश के हित में जो किया जा सकता है, उसके लिए सारे देश की जनता आपके साथ है। आप देश को बचाने के लिए कुछ भी करें, लेकिन कोई एक काम करें, उसको propagate करें, यह ठीक नहीं है।

श्री उपसभापति: प्रो. साहब आपसे एक अनुरोध है कि समय का ध्यान रखें।

प्रो. राम गोपाल यादव: में 2-3 मिनट ही बोलूंगा। मैं किसी की आलोचना नहीं करना चाहता हूं।

श्री उपसभापति: मैं समय के बारे में बात कर रहा हूं।

प्रो. राम गोपाल यादव: आज जो इश्यू है, यह ऐसा सेंसेटिव इश्यू है कि मैं इसके इतिहास में नहीं जाना चाहता हूं। अगर मैं इतिहास में चला जाऊंगा, तो कई लोगों को दु:ख होगा।

श्री उपसभापति: मैं तो महज BAC के द्वारा तय समय की याद दिला रहा था। ...**(व्यवधान)**...

प्रो. राम गोपाल यादव: इसलिए मैं कुछ नहीं कहना चाहता हूं। ...**(व्यवधान)**... मैं तो यह कहना चाहता हूं कि हालांकि आपने पहली बार एक अच्छा काम किया था कि एक राजनैतिक व्यक्ति को वहां का गवर्नर बनाया, लेकिन उस राजनैतिक व्यक्ति को गवर्नर बनाते ही आपने सरकार को भंग करवा दिया, यह ठीक नहीं है। अच्छे काम को आपने खराब कर दिया। हालांकि जम्मू-कश्मीर में लगातार जो ब्यूरोक्रैट्स और सेना के जनरल्स वगैरह रहे, वह ठीक नहीं था, पोलिटिकल लोगों को पोलिटिकल समझ होती है, उनको गवर्नर बनाना अच्छी बात होती है। एक गलती आपने यह की -- हालांकि मैं बहुत छोटा आदमी हूं, लेकिन यहां आपके संरक्षण में यह बात तो कह ही सकता हूं कि

[प्रो. राम गोपाल यादव]

जब चुनाव हुआ तो वे लोग यह कह रहे थे कि हम पूरी वैली इसलिए जीते, क्योंकि जो अलगाववादी ताकतें थीं, उन्होंने हमारा समर्थन किया। वे खुलेआम कह रहे थे या नहीं कह रहे थे? इसके बावजूद, आपको उनके साथ गठबंधन नहीं करना चाहिए था। बीजेपी जैसी पार्टी से यह उम्मीद नहीं की जा सकती थी कि जो यह कहे कि अलगावादियों ने हमें समर्थन दिया, उनके साथ मिलकर आप सरकार बनाएँ! तो यह बेमेल गठबंधन कब तक चल सकता था? उसका हश्र तो यह होना ही था और इसी वजह से आपको यह रिज़ॉल्यूशन लाना पड़ रह है और जब रिज़ॉल्यूशन आया है, तो इसका समर्थन करने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है, लेकिन आइंदा जब आप किसी से समझौता करें, तो यह देखकर कीजिए कि उनके antecedents कैसे हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री उपसभापति: धन्यवाद, प्रोफेसर साहब। श्री ए. नवनीतकृष्णन।

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN (Tamil Nadu): Sir, I would like to draw the kind attention of this Council to Article 356. Subject to correction, I may be permitted to read the opening sentences of Article 356. "if the President, on receipt of report from the Governor of the State or otherwise, is satisfied that a situation has arisen in which the Government of the State cannot be carried on in accordance with the provisions of this Constitution, the President may by Proclamation..." My humble submission would be, this is vague. There are no guidelines. Now, the arbitrary powers have been conferred on the Governor or any individual. So, the satisfaction, whether it is subjective satisfaction or objective satisfaction, is not made clear in this provision. The only check is, subject to correction again, the ratification by both Houses and also of course, the judicial review by the Supreme Court. But in this matter, I think, a writ petition was moved. It was dismissed at the admission stage itself and my humble submission would be, this august House must think and consider to introduce certain guidelines to invoke the President's Rule because the elected Government cannot be dissolved. So, they are reflecting the will of the people. To invoke Article 356, there must be clear cut guidelines. Definitely, I am of the humble opinion -- I have got a little experience as a politician that the political party at the Centre, so far as my knowledge goes, has invoked Article 356 to further their political interest, whether it is the Congress. Whether it is the BJP or, tomorrow, it may be the AIADMK. There is no guarantee. Okay. ...*(Interruptions)*... Tomorrow the AIADMK will come to power at the Centre. Definitely it will happen. Unfortunately, we lost Amma. But, definitely, it would happen. ...*(Interruptions)*... My humble submission is: 'satisfied' is against the concept of rule of law. The States are not able to run Governments freely, because they are afraid of the Central Government.

SHRI P. CHIDAMBARAM (Maharashtra): Are you afraid?

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN: What? I am only expressing the view of all the Governments.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Navaneethakrishnan, please address the Chair. ...*(Interruptions)*...

SHRI P. CHIDAMBARAM: Say you are not afraid. ...*(Interruptions)*...

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN: I am not afraid; I am only afraid of God.

SHRI T.K. RANGARAJAN (Tamil Nadu): We wanted to know whether you are afraid of the Central Government. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Navaneethakrishnan, please address the Chair. ...*(Interruptions)*...

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN: I am only afraid of God. I am not afraid of anybody on earth, irrespective of the result. ...*(Interruptions)*... We are not bothered about it. ...*(Interruptions)*... We are only afraid of God. So, my humble submission would be this. Sir, this Article also contains one sub-clause which says that any such Proclamation may be revoked. So, in spite of ratification of this Resolution by this House and the other House, this Proclamation must be revoked at the earliest point of time. This is my prayer and request.

Thank you.

SHRI DEREK O'BRIEN (West Bengal): Sir, I along with 25 colleague Members of Parliament of mine, belonging to both Lok Sabha and Rajya Sabha, had the good fortune to spend 4-5 days on a Parliamentary Standing Committee Study Tour to Kashmir about four months ago. They made two requests to us. So, I said, 'Next time I ever speak in Parliament, I will try and keep both your requests.' Their first request was, 'Whenever जम्मू-कश्मीर पर चर्चा होती है, लेकिन लद्दाख-लेह का नाम कोई नहीं लेता है। Everyone leave out Ladakh and Leh. So, please keep us in mind.' So, I have kept that first promise.

The second promise, I hope, will also be kept because it is a verbal promise. We have seen that history has been created in Parliament in the last two days. The Defence Minister is sitting down in one House, while the Finance Minister speaks on Defence. The Home Minister is sitting down in this House, while the Finance Minister speaks on Home Affairs! There is a message. Some churning is taking place and all political observers in Kashmir and around the country are watching this very clearly. Since the

[Shri Derek O'Brien]

hon. Finance Minister had handled guest appearance for Defence and guest appearance for Home Affairs, I have got one suggestion. *...(Interruptions)...* We did not disturb anybody; Trinamool does not disturb anybody. So, allow me to speak for 6-7 minutes available with us, because the Congress and the BJP themselves have taken one hour. We are a small party. So, my request, on behalf of the young people, entrepreneurs and tourist operators of Kashmir, to the hon. Finance Minister is relating to his own department. One thing which they all told us is that tourism can be revived. But, to revive tourism, they need a brake on the GST. So, since the hon. Finance Minister is not here, maybe, the hon. Law Minister will convey it to the Defence Minister who, in turn, will convey it to the hon. Finance Minister that this should be done.

Sir, let us come to the Resolution. The two basic issues here are security and environment. Who is responsible for security and environment? We know who is responsible. Our straight request to the hon. Home Minister is this. I am requesting because we are struck with this Proclamation. So, I request the hon. Home Minister and the hon. Finance Minister to give us an assurance that the elections in Jammu and Kashmir will be held either now, or, latest, with the Lok Sabha elections. We need this assurance.

The third point is about the role of the Raj Bhawan. Now, in the History of Jammu and Kashmir a new name has been written which even the experts of Jammu and Kashmir and Ladakh do not know and that name is Alexander Bain. Sir, Alexander Bain ने क्या किया था? उन्होंने डेढ़-सौ साल पीछे फैक्स मशीन इन्वेंट की और फैक्स मशीन को लेकर इतना नाटक हुआ from the Government which talks about digital India cannot operate a fax machine! Sir, the bigger point here is: We have some solid points on Jammu and Kashmir which I wanted to take just one step ahead, because it is also Jammu and Kashmir and the rest of the country. What is happening in these *Raj Bhawans*? Are they becoming branch offices of a Government in power? ... because it is not only the *Raj Bhawan,* it is an institution. We are concerned with all other institutions also. There is not enough time today to discuss all other institutions, but let me at least try and discuss one little institution for one-and-half minutes, that is, the Parliament. The Bills are scrutinized by Select Committees and Standing Committees. During the last two Governments — and, Trinamool Congress was not a party with the last one-and-half Governments — 65 to 75 per cent of the Bills went for parliamentary scrutiny. This Government has set up a new record. It has got only 19 per cent of the Bills scrutinized. We have been killed, as an institution. Four, out of five, bills have been passed without any scrutiny by the Committees. Nine, out of ten, Bills passed on security, Home Affairs, and other important issues like that, have

not gone through parliamentary scrutiny. I can give you more examples. Six Bills have been introduced in this Session only; and, none of them have been scrutinized by the Parliament. Likewise, rupees nine lakh crores have been passed without any discussion on the Railway Budget. It has not happened during the last seventy years. We don't even know where the money has gone.

Sir, the institutions are at stake. The *Raj Bhawan*, with a fax machine, was only one example of an institution at stake. We are discussing in Parliament. It would have been beautiful if — not the BJP Prime Minister or any Prime Minister — our Prime Minister had come and sat here today and had listened to our discussion. Maybe, he would have changed his attitude because if you look at the records of Parliament, he has spent 14 hours in the Lok Sabha and 10 hours in the Rajya Sabha during the last one year. He has spent only 24 hours here. Good! But, 37 hours were spent on giving speeches in Gujarat during the elections. I have got no problem with a mass leader giving speeches. Mamata*ji* also gives speeches all over. But, where is the balance? If we don't look at the institutions like this, then, what will happen? Last time, the President's rule was introduced twenty years ago. I don't want to get into the statistics about telex because these are not about statistics. These are human stories. In 2018, five hundred and eighty-six people have died. Sir, when the House breaks for week end, please go on to the WhatsApp and see those pictures of — they are available there — children, mothers, fathers. They are not terrorists. They are civilians. Through you, the Trinamool Congress and everybody else wish to appeal to this Government that we have to have the local people on board. If we don't get the local people on board, we are not going to solve these issues.

Sir, I want to end because I know there is tendency that the right side gets a lot of time the left side gets a lot of time, but when we, from the parties in the middle, speak everybody looks at the clock. ...*(Interruptions)*...

श्री उपसभापति: श्री देरेक ओब्राईन जी, हमें मालूम है कि आप सवत: ही समय सीमा में रहते हैं।

श्री देरेक ओब्राईन: नहीं सर, नहीं। यह नहीं। ये सभी संस्थाएं बर्बाद हो रही हैं। मेरा यही प्वाइंट है। All the institutions are at stake, whether it is the Parliament or the Select Committees or the Standing Committees or the CBI or the RBI. ...*(Interruptions)*...

Sir, coming back to the issue, nationalism is not a copyright of one party. We don't want to listen to lectures on nationalism from one party. Please don't tell us what the nationalism is; we are from Bengal. I have to say this. When you claim to be a nationalist, then, don't mess around; heal Kashmir, else you pretend to be a nationalist, you pretend to be an ultra-nationalist; while actually, think about it, you may be anti-national.

[Shri Derek O'Brien]

Sir, I have only been, sadly, to Kashmir once for five days. But, I see a lot of films. It's a paradise. I would urge this Government, I would urge everybody here, not to turn it into a hell.

Thank you.

श्रीमती रूपा गांगुली (नाम-निर्देशित): सर, बंगाल में एक औरत को पकड़कर चार आदमी रेप करके छोड़ गए हैं। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: माननीय सदस्यों, मैं आपको यह सूचित करना चाहता हूं कि कश्मीर पर बातचीत दो घंटे के अंदर खत्म करनी है। अनुभव मोहंती जी, आपके पास महज़ तीन मिनट का समय है। ...**(व्यवधान)**...

श्री अनुभव मोहंती (ओडिशा): माननीय डिप्टी चेयरमैन सर, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे इस गंभीर विषय पर बोलने का मौका दिया। सर, पिछले डेढ़ घंटे से मैं इस विषय पर सबकी बात सुन रहा हूं।

श्री नीरज शेखर (उत्तर प्रदेश): सर, सदन में शांति नहीं है।

श्री उपसभापति: आप खुद शांति रखें, शांति हो जाएगी। आप प्लीज़ बैठिए।

श्री नीरज शेखर: सदन में शांति नहीं है। शांति होगी, तभी तो वे बोलेंगे।

श्री उपसभापति: आप प्लीज़ बैठिए। मोहंती जी के अलावा कोई बात रिकार्ड पर नहीं जाएगी। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती रूपा गांगुली: *

श्री नीरज शेखर: *

श्री उपसभापति: जो वे बोलना चाहते हैं, उन्हें बोलने दीजिए। आप फिर पीछे शोर कर रहे हैं। ...**(व्यवधान)**... आप बैठिए। आप भी बैठिए। ...**(व्यवधान)**... अनुभव मोहंती जी के अलावा कोई बात रिकार्ड पर नहीं जाएगी। ...**(व्यवधान)**... अनुभव मोहंती जी, आप बोलिए। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती रूपा गांगुली: *

श्री उपसभापति: आप बैठिए, कोई बात रिकॉर्ड पर नहीं जाएगी। ...**(व्यवधान)**... आपकी कोई बात रिकॉर्ड पर नहीं जाएगी। ...**(व्यवधान)**... अनुभव मोहंती जी, आप बोलिए।

श्री अनुभव मोहंती: सर, हाऊस में शांति नहीं रख रहे हैं, लेकिन कश्मीर में शांति कैसे रहे, उसके बारे में बात कर रहे हैं। सर, पिछले डेढ़ घंटे में मैंने यहां पर बहुत गुणी और ज्ञानी लोगों को सुना। विपक्ष के नेता ने अपनी बात कही, सरकार के यहां पर जो नेता हैं, उन्होंने भी अपनी बात कही। सर, आज पहली बार जब मुझे जम्मू-कश्मीर के बारे में बोलने का मौका मिला है तो एक चीज़

*Not recorded.

जो मुझे समझ में आयी है, वह यह है कि कश्मीरियों के बारे में कोई बोलना नहीं चाहता है। वे क्या चाहते हैं, वे क्या समझते हैं, उनके बारे में कोई बोलना नहीं चाहता। पिछले साढ़े चार साल में क्या हुआ है, इस सरकार ने क्या किया है, कहां-कहां खामियां रहीं, हम वह सुनना चाहते हैं, वह बोलना चाहते हैं। यहां पर तो हद हो गयी है कि 1947 से लेकर 2014 का क्या-क्या इतिहास रहा, वह भी जानने को मिल गया। स्कूलों में हमें इतिहास पढ़ाया जाता था। I was good history student, Sir. आज फिर से history को दोबारा पढ़ने, जानने और सुनने का मौका हमें मिला, लेकिन किसी ने यह नहीं कहा कि कश्मीर का आज का जो वातावरण है, आज की जो situation है, उसका किस तरह से सब मिलकर, इकट्ठे डटकर सामना करें और अपने देश में कैसे अमन और शांति कायम करें, हर आदमी, हर धर्म कैसे मिल-जुलकर आगे बढ़े। I am really surprised and shocked, Sir, anyway, जिसको राजनीति करनी होगी, वे कश्मीरियों को लेकर राजनीति करेंगे। मुझे कश्मीरी भाईयों को लेकर, कश्मीरी बहनों को लेकर, कश्मीरी परिवारों को लेकर कोई राजनीति करने का शौक नहीं है, इसलिए मैं राजनीति नहीं करूंगा, लेकिन संक्षेप में इतना जरूर कहना चाहूंगा कि कुछ महीने पहले मुझे कश्मीर जाने का एक छोटा सा मौका मिला था। मुझे कुछ दिन के लिए वहां जाने का मौका मिला और जैसे देरेक साहब ने भी कहा, अगर सही मायने में हिन्दुस्तान में किसी को जन्नत कहा जाए तो वह कश्मीर है। यह सच है और जब तक हिन्दुस्तान ज़िंदा रहेगा, तब तक कश्मीर हमारा रहेगा, तो आप यहां पर राजनीति न करके, जब गृह मंत्री या सरकार की तरफ से जो कोई भी अपना भाषण रखे, अपना जवाब रखे तो मैं आशा करूंगा, It is a sincere request कि कांग्रेस ने इतने सालों में क्या किया, वह हमें जानने की जरूरत नहीं है, हमें पता है और पिछले साढ़े चार साल में आप लोगों ने क्या किया, यह भी हमें पता है, लेकिन अब क्या होने वाला है, आगे क्या होने वाला है, कश्मीरियों को कैसे शांति मिलेगी, उन्हें कैसे अमन प्राप्त होगा, इस देश को कैसे हम जोड़कर रखेंगे, अगर उस बारे में आप कोई जवाब देंगे तो अच्छा होगा।

सर, आज देश टूट रहा है, आज देश धार्मिक चीज़ों को लेकर बंट रहा है। इसको कैसे बंद किया जाए, इसका कैसे सामना किया जाए, यह सबसे ज्यादा जरूरी है, इसकी अहमियत सबसे ज्यादा है, सबसे ऊंची है। मैं request करूंगा कि कश्मीरी भाईयों और बहनों को हम आतंकवाद की तरफ जाने से रोकने के लिए बोल दें, उतना काफी नहीं है - उन्हें प्यार चाहिए। जब मैं कश्मीर गया था तो वहां पर मुझे कश्मीरी भाईयों ने बोला...

श्री उपसभापति: कृपया समाप्त करें।

SHRI ANUBHAV MOHANTY: I am concluding, Sir. क्योंकि ये emotionally connected चीज़ें हैं तो थोड़ा बोलने का मौका दीजिए। जब मैं कुछ दिनों के लिए कश्मीर गया था तो मैंने उनसे पूछा कि यहां का वातावरण कैसा है? हम लोग तो टीवी पर बहुत कुछ देखते हैं, न्यूज़ में पढ़ते हैं, अखबारों में पढ़ते हैं, लेकिन वास्तव में यहां का वातावरण आपको कैसा लगता है तो उन्होंने कहा, सर, हम सब इकट्ठे अमन और चैन के साथ रहना चाहते हैं। बस, ये हमारे साथ राजनीति कर रहे हैं, वह भी गंदी राजनीति, जिसकी वजह से हम आज अलग हो रहे हैं, जिसकी वजह से हम आतंकवाद की तरफ बढ़ रहे हैं। हम पढ़ना चाहते हैं, हम आगे बढ़ना चाहते हैं, हम भी नौकरी करना चाहते हैं, हम भी व्यवसाय करना चाहते हैं, हम भी अपने देश का नाम आगे ले जाना

[Shri Anubhav Mohanty]

चाहते हैं। सर, मेरी request है, it's an urge to the Government, through you, Sir, that let us not divide Kashmir from us, let us bring unity, love and affection amongst brothers and sisters of Kashmir. It is not a question of politics who did what in past and who did what in the last four-and-a-half years. I am talking about what is going to happen to Kashmir in the coming years. Till India is alive, Kashmir is alive. So, we have to honour Kashmir, we have to honour the Kashmiri brothers and sisters there and Kashmiri families. हम इकट्ठे तब तक रहेंगे, जब तक हम राजनीति को इससे दूर रखेंगे। धन्यवाद, सर।

श्री उपसभापति: धन्यवाद, श्री अनुभव मोहंती जी। Now, Shri T.K. Rangarajan ji. You have three minutes.

SHRI T.K. RANGARAJAN: Now, this Resolution has become here a *fait accompli*.

The action of Jammu and Kashmir Governor, dissolving the Legislative Assembly at the behest of the Centre, in my opinion, is an illegal and unconstitutional step.

The Governor has no business to decide that parties with 'opposing ideologies' cannot form a suitable Government. But by this yardstick, the PDP-BJP Government has got different ideologies. These different-ideologies Government should not have been allowed to be formed after the elections. But somehow or the other, the BJP wanted to capture power. You want to infiltrate in everything. You used that situation. What happened? All that the Governor can do is to ask the leader who is staking claim with a majority support to prove that majority on the floor of the House. You please respect the Supreme Court Judgements. The Bommai Judgement has already given you how to do this job. You have to respect the Assembly.

Sir, the Modi Government has, by taking this authoritarian measure, further complicated and worsened the situation in the State. There is no meaning in blaming this side or that side. The real sufferers are the Kashmiri people. Over 300 civilians have died in the last three years. Unfortunately, no enquiry has been conducted into these deaths and no one responsible has been held accountable. This situation has only led to further alienation of the people.

Sir, the BJP is interested in the continuation of the situation to aid their larger political agenda of communal polarization in view of the General Elections. Here, I request the Home Minister to tell us when you are going to conduct the elections, with the Parliamentary elections or before that. Please tell us the date. Please tell us whether you

are going to conduct an enquiry into the deaths of those who are killed. Innocent people have been killed in the past three years. I want to know whether you would conduct an enquiry with a sitting Supreme Court Judge. Please tell us the fact. There is no political accountability, no responsibility for the mess it has created. The gross mishandling of these issues is hurting India. Our Party is condemning the way you have handled the Kashmir issue.

With this, I request you to conduct the enquiry. Please also tell us when you are going to conduct the elections. Thank you.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you Rangarajan Sahib. Now, Prof. Manoj Kumar Jha. आपके पास अपनी बात रखने के लिए तीन मिनट का समय है।

प्रो. मनोज कुमार झा (बिहार): उपसभापति जी, आपका बहुत-बहुत शुक्रिया। अक्सर दो महत्वपूर्ण राष्ट्रीय दलों के मुकाबले क्षेत्रीय दल को यूं माना जाता है कि राष्ट्रीय मसलों पर उनकी कोई राय हो ही नहीं सकती या उनकी राय मायने नहीं रखती। सर, इस मिथक को तोड़ना होगा। क्षेत्र में रहकर भी हम राष्ट्र के बारे में सोचते हैं। माननीय गृह मंत्री जी का resolution सदन के समक्ष आया। उस पर क्या position लेनी है, उस पर चर्चा की कोई बात नहीं है, वह position stated है और वह लेंगे। माननीय गृह मंत्री जी, आपकी व्यक्तिगत संजीदगी में कोई शक नहीं है, लेकिन इस पूरे मसले पर साढ़े तीन वर्ष में जिस प्रकार के बयान आए और जिनका डोमेन नहीं था, उन्होंने decision लिए। सर, बड़े दुख के साथ यह कहना पड़ता है कि दो परस्पर antithetical विचारधारा के दल अचानक strange bed fellows हो गए। एक व्यक्ति को आर्किटेक्ट बताया गया। उसके जगह-जगह इंटरव्यूज़ छपने लगे, आज वह व्यक्ति दिख नहीं रहा है। कोई उनसे नहीं पूछ रहा है कि यह क्या किया? मैं इतिहास में नहीं जाना चाहता हूं। लीडर ऑफ दि हाउस नहीं हैं। पंडित जवाहरलाल नेहरू के खिलाफ साढ़े चार साल से बहुत खराब मौसम चल रहा है। हर कोई नेहरू जी पर टिप्पणी करके चला जाता है। नेहरू जी के कश्मीर पर क्या विचार थे, मैं समझता हूं कि नेहरू जी के लेटर्स पढ़ लिए जाएं और वे लेटर्स संकीर्ण दायरे में नहीं हैं।

सर, मैं बिहार के एक छोटे से कस्बे में पैदा हुआ। मैंने बचपन से पढ़ा कि कश्मीर भारत का अभिन्न हिस्सा है। सर, हम लोग तो इमोशनल होते थे इस सेंटेंस को सुनकर, लेकिन साढ़े चार सालों में यह दुख हुआ, अगर वह भिन्न हिस्सा है, तो इतना भिन्न व्यवहार क्यों हो रहा है? अभिन्न हिस्सें के साथ, अभिन्न व्यवहार कतई उचित नहीं है। आप क्या चाहते हैं? कश्मीर की जगह चाहिए या कश्मीरी अवाम चाहिए? आपको जगह चुननी थी, आप क्या चाहते हो कि बॉलीवुड की फिल्मों के लिए एक site हो, कितनी खूबसूरत यह तस्वीर है, यह कश्मीर है, यह कश्मीर है। सर, ये गाने बहुत गाये जाते हैं। कश्मीरी अवाम का दर्द-ओ-गम समझने के लिए एक ही बात कहूंगा, माननीय गृह मंत्री जी, आप चाहें तो कोशिश कर सकते हैं। शौक-ए-दीदार है, तो नज़र पैदा कर। सर, आपको वह नज़र पैदा करनी होगी, आपको dog whistle politics से ऊपर जाना होगा। कश्मीर demonise हो रहा है, मैं कश्मीर एक लैक्चर देने के लिए गया, वैसे मैं हर साल लैक्चर देने के लिए जाता हूं। मैं पहली बार बाबा साहेब, नेहरू एंड डेमोक्रेसी पर लैक्चर देने गया। सर, आप बार-बार घड़ी देखने लगते हैं, मुझे डर लगने लगता है।

श्री उपसभापति: समय सीमित है, इसलिए आप खत्म करिए।

प्रो. मनोज कुमार झा: सर, literally मेरी पहली बार hooting हुई है कश्मीर में। पहली बार hooting हुई, लोगों ने कहा आप हमें क्या बता रहे हो? आप शमशान में विवाह के गीत गा रहे हो। यह मैंने सुना वहां के लोगों से, जो लोग तथा कथित मुख्यधारा के लोग थे, आपके पक्ष में खड़े रहे, आपने उनको खो दिया, लीडर ऑफ दी हाउस alienation पर तकरीर करके गए। दो लोगों ने alienation पर लिखा, मैक्स वेबर और कार्ल मार्क्स ने लिखा, उनकी समझ का alienation न मैक्स वेबर का है और न कार्ल मार्क्स का। Alienation को समझने के लिए वह जज्बा पैदा करना होगा।

श्री उपसभापति: अब आपका समय खत्म हुआ, आप खत्म करिए।

प्रो. मनोज कुमार झा: सर, मुझे एक मिनट का समय दे दीजिए।

श्री उपसभापति: प्लीज़, आप खत्म करिए।

प्रो. मनोज कुमार झा: सर, एक मिनट का समय और दे दीजिए। सर, सिक्योरिटी इस्टेबलिश्मेंट के नज़रिए में कभी कोई खोट नहीं आयी। यह वही मुल्क है, जहां 1971 में हमने विश्व का नक्शा बदल दिया, हमारे जवानों ने एक नया देश दे दिया, तब की पोलिटिकल इस्टेबिलिश्मेंट ने, लेकिन वह किसी पोलिटिकल पार्टी के पोस्टर में नहीं गया। जब आप कोवर्ट ऑपरेशन को पोस्टर पर ले जायेंगे, तो alienation पैदा होगा। आप कोवर्ट ऑपरेशन को पोस्टर पर लेकर गए। माननीय गृह मंत्री जी, मैं बार-बार दोहरा रहा हूं कि आपकी संजीदगी में कहीं कोई खोट नहीं है, लेकिन अगर एनएसए पॉलिटिकल डिसीजन लेने लगेगी, तो बहुत दिक्कत है। अब वह दिन न आ जाए कि वाइस चांसलर को अप्वाइंटमेंट वहां से हो। मुझे तो डर है कि कहीं विश्वविद्यालयों में अप्वाइंटमेंट वहां से न होने लगें।

सर, मेरी यह आखिरी टिप्पणी है। सर, कल तक आप साथ रहते हो, अचानक जिस दिन राष्ट्रपति शासन लागू होता है, तो कहते हैं कि इनको सरहद पार से फोन आ रहे हैं। सर, हम सब राजनीतिक दल हैं। सर, आप patriotism में late comer हैं, आप बाद में आए और आप नये convert की तरह व्यवहार कर रहे हैं। नये convert के बारे में कहा जाता है कि पांच के बदले सात वक्त नमाज़ पढ़ता है। आप patriotism के नाम पर सात वक्त की नमाज़ कर रहे हैं। ...**(व्यवधान)**... अब वह भी नहीं है।

सर, यह आखिरी बात है। पंचायत चुनाव का बहुत ढिंढोरा पीटा गया, अनंतनाग में चुनाव क्यों नहीं हुआ? वहां पर लोक सभा का by poll क्यों नहीं हुआ? देश कागज पर बना नक्शा नहीं होता, यह बात समझ लीजिए। एक हिस्से के फट जाने, बाकी हिस्से उसी तरह साबुत बने रहें, नदियां, पर्वत, शहर, गांव वैसे ही अपनी-अपनी जगह दिखें। ...**(समय की घंटी)**... यदि यह तुम नहीं मानते, तो मुझे तुम्हारे साथ नहीं रहना। बहरहाल रिजॉल्यूशन तो पास होना ही है।

श्री उपसभापति: धन्यवाद। प्रो. मनोज कुमार झा जी, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। माननीय सदस्यों, यह बहस हमें 4.00 बजे तक खत्म करनी है। अभी सात वक्ता हैं और बीजेपी के भी एक वक्ता हैं, जिनके पास अभी पार्टी का लगभग 16 मिनट का समय बचा है। मैं चाहूंगा कि बाकी के जो अन्य सात वक्ता हैं, उन्हें एक-एक मिनट का समय बोलने के लिए हम सब दें। वे सुझाव के तौर

पर अपनी-अपनी बात कहें। ...**(व्यवधान)**... जो समय तय है, उसके अंतर्गत ही हम अपनी बात कहेंगे। अब मैं श्री डी. राजा साहब को बोलने के लिए आमंत्रित करता हूं। ...**(व्यवधान)**...

श्री सतीश चन्द्र मिश्रा (उत्तर प्रदेश): सर, आप इसका समय बढ़ा दीजिए। ...(व्यवधान)... सर, एक मिनट का समय बहुत कम है। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय सिंह (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली): सर, आप इसका समय बढ़ा दीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: श्री डी. राजा। ...**(व्यवधान)**... डी. राजा साहब, आप बोलिए। ...**(व्यवधान)**... डी. राजा साहब, आप बोलिए। ...**(व्यवधान)**...

संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री तथा सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विजय गोयल): चेयरमैन साहब, बीजेपी का जो टाइम है, मैं आपके ध्यान में लाना चाहता हूं कि बीजेपी उतना टाइम नहीं लेगी, क्योंकि आपने कहा है कि इस मद को 4.00 बजे समाप्त करना है। पहले आप अन्य माननीय सदस्यों को मौका दे दीजिए। बीजेपी अपना टाइम कम कर लेगी।

SHRI BHUBANESWAR KALITA (Assam): Sir, I would request you to extend some time. ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA (Tamil Nadu): Sir, at the outset, I make a request that you take the sense of the House. We are discussing Jammu and Kashmir and we should understand the problems of Jammu and Kashmir. It is a very sensitive and strategic State that we are discussing; you can't contain the discussion just like ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: You please come to the point. ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: My request is that you be liberal. Sir, I would like to begin my observations by referring to the use of Article 356. I do consider that it was unconstitutional and undemocratic act on the part of the Centre. Sir, when we look at Article 356, we should understand what Dr. Ambedkar said in the Constituent Assembly. It was Dr. Ambedkar who made it clear that "Ordinarily, Article 356 should remain as a dead letter." When you use Article 356, you admit that the situation is not ordinary; it is extraordinary. Who created that extraordinary situation in Jammu and Kashmir? What has your Government done in the past four-and-a-half years? Can you claim that your policies towards Jammu and Kashmir are correct, or is there any attempt to review your policies? Sir, the BJP was in the coalition Government. It was the BJP which withdrew from the Government. Then the three major parties, namely, the PDP, the National Conference and the Indian National Congress, tried to communicate to the Governor's Office, but it was said that fax machine was not working and hence they are not receiving the fax. But the Governor acted. The

[Shri D. Raja]

fax machine did not work, but the Governor acted and dissolved the Assembly. Now, there is the President's Rule. Sir, Kashmir is considered to be 'Paradise on Earth'. Now, whether we will retain this paradise or lose our paradise, this question is haunting all democrats, all secularists and all patriots of this country. We should answer this question. Look at the young people of Kashmir. Why is there unrest among the young people and students? They are extremely articulate; they are extremely well-informed. They are born in conflict zone; they live in conflict zone. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Raja, you have taken two minutes. Please conclude. ...*(Interruptions)*... Please conclude. ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: Let me finish. Now, my question is: Why is there a sense of alienation among the young people of Jammu and Kashmir? Why? The Home Minister should tell this to us why there is a sense of alienation among the young people of our country, the young people of Jammu and Kashmir. Since you have dissolved the Assembly and imposed the President's Rule, when are you going to hold the elections? Can you tell us? Can you indicate when the Centre is planning to hold the elections? Nobody knows. We are all worried about Jammu and Kashmir. How to integrate Jammu and Kashmir? ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: It is already three minutes, Mr. Raja. Please conclude. ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: Sir, I had the opportunity to go with the present Home Minister on a delegation. After that visit, there was a unanimous resolution by the All-Party Delegation that the Government should hold talks with all the stakeholders. ...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: Where was the talk? Talks were not held. Sir, it was Mr. Vajpayee who said, "We can choose friends but we cannot choose neighbours." With Pakistan, what is your attitude? What steps are we taking to promote people-to-people contacts to de-escalate the tension between our two countries?

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Mr. Raja, please conclude. It is already four minutes. ...*(Interruptions)*...

SHRI D. RAJA: In Jammu and Kashmir, what are the efforts of the Government to hold talks with all the stakeholders because we will have to win the confidence of the people of Jammu and Kashmir, particularly, the young people of Jammu and Kashmir?

Then, I want to raise only one issue, Sir. The Government is totally trusting on the use of Army, the military, the Forces, instead of talks, instead of reaching out to the people. Is the Government in a position to explain why this is the policy of the Government towards Jammu and Kashmir. Then, Sir, there are thousands of...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you, Mr. Raja.

SHRI D. RAJA: This is the last point, Sir. There are thousands of prisoners in prison. What are their conditions? Nobody knows. I am not talking about use of pellet guns...*(Interruptions)*...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you. Now, I invite Shri Rakesh Sinha.

श्री उपसभापति: माननीय राकेश सिन्हा जी, आपकी पार्टी के पास पंद्रह मिनट बचे हैं, लेकिन मैं आपको पांच मिनट का समय दे रहा हूं, ताकि हम लोग इस समय के अंदर बहस कर सकें। ...(**व्यवधान**)... माननीय राकेश सिन्हा जी, आप अपनी बात कहें। ...(**व्यवधान**)... अब आपकी बात ही रिकॉर्ड पर जाएगी। ...(**व्यवधान**)... आप अपनी बात कहें। ...(**व्यवधान**)... महज पाँच मिनट बोलें।

SHRI D. RAJA: Sir, that is why I urge upon the Government to respond to the issue before us. The Government policies have proved to be wrong policies.

श्री राकेश सिन्हा (नाम निर्देशित): उपसभापति महोदय, मैं आज विपक्ष के नेताओं को सुन रहा था। जब श्री गुलाम नबी आज़ाद जी बोल रहे थे और इतिहास की जो पिक्चर पेश कर रहे थे, वह पिक्चर पीढ़ियों को क्या इतिहास पढ़ाएगी और कश्मीर की कौन-सी स्थितियों को दिखाएगी? यह तो ऐसा है कि जैसे पीढ़ियों को यह बताना कि कश्मीर में सब बुरा ही बुरा है। सर, ऐसा नहीं है।

उपसभापति महोदय, विपक्ष ने बताया कि यह सरकार कश्मीर के लिए क्या कर रही है। अभी प्रधान मंत्री जी ने 80 हज़ार करोड़ रुपये का पैकेज जम्मू-कश्मीर राज्य को दिया है। स्वतंत्रता के बाद इतना पैकेज कभी भी किसी राज्य को नहीं दिया गया। वहां 1 हज़ार मेगावाट की विद्युत परियोजना शुरू की गई है, जिससे पूरे राज्य को बिजली मिलेगी। ...(**व्यवधान**)...

SHRI S.R. BALASUBRAMONIYAN (Tamil Nadu): Sir, we are not getting the translation.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please check the translation.

श्री राकेश सिन्हा: विकास के जो काम नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हो रहे हैं, उसके दो बड़े पैमाने हैं, जिसको विपक्ष को समझना होगा। मैं इतिहास की गहराइयों में नहीं जाना चाहता हूं, क्योंकि अगर मैं जाऊंगा तो कांग्रेस और वामपंथी मित्रों को बहुत परेशानी होगी। मैं सिर्फ एक बात कहना चाहता हूं। अभी गुलाम नबी आज़ाद जी ने जो कहा कि 80 प्रतिशत मुसलमान थे और वे भारत का हिस्सा बने, तो मैं उन्हें बता देना चाहता हूं कि जब द्वि राष्ट्रवाद की आंधी थी, जो Northwest Frontier Province थे, NWFP वहां पर श्री गफ्फार खान थे, रेड शर्ट की आर्मी थी और वे भारत में रहना चाहते थे, लेकिन वे पाकिस्तान क्यों गए, इसका कांग्रेस को जवाब देना पड़ेगा? हम 1947

[श्री राकेश सिन्हा]

के पार्टिशन के स्टेकहोल्डर नहीं थे, इसलिए आप बताइए कि NWFP, जो भारत में रहना चाहता था, श्री गफ्फार खान भारत के देशभक्त थे, रेड शर्ट आर्मी भारत में रहना चाहती थी, लेकिन आपने उसको पाकिस्तान भेज दिया। मैं उस इतिहास में नहीं जाना चाहता हूं, मैं दो बातें कहना चाहता हूं। सर, कश्मीर की समस्या का एक बहुत बड़ा कारण है, जिस कारण पर हम नहीं जा रहे हैं। 1947 से लेकर 1996 तक कश्मीर की पूरी राजनीति सामंती राजनीति रही है। लोकतंत्र को जनता तक पहुंचने नहीं दिया गया, जिसका परिणाम यह हुआ है कि उसके दो coalition partner होते थे। एक-स्टेट गवर्नमेंट में कठपुतली सरकार, दूसरी केंद्र की सरकार। ...**(व्यवधान)**...

SHRI S.R. BALASUBRAMONIYAN: Sir, we are not getting the translation.

श्री राकेश सिन्हा: 1984 में elected Government को किस प्रकार से किसने गिराया? उस वक्त माननीय राजनाथ जी गृह मंत्री नहीं थे, भारतीय जनता पार्टी सरकार में नहीं थी। 1986 में नेशनल कांफ्रेंस को तोड़कर सरकार बनाई गई थी, उसे गिरा दिया गया। यह क्यों किया गया, किसलिए किया गया? जम्मू-कश्मीर की पूरी राजनीति को कुछ परिवारों तक सीमित रखने की जो साजिश वहां के क्षेत्रीय दलों ने की, जिसका कांग्रेस सहयोगी बना रहा, उसको तोड़ने का काम भारतीय जनता पार्टी ने 2002 से किया। दुनिया में जम्मू-कश्मीर पर जो स्टडीज़ हुई हैं, आप उनको देखिए। Most credible elections की जो प्रक्रिया शुरू हुई, जिसमें भारत की जनता का, कश्मीर की जनता का, जम्मू-कश्मीर के नागरिकों का विश्वास जमा, वह 2002 से शुरू हुआ, जब माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार थी। 2008 में चुनाव हुए, 2014 में चुनाव हुए ...**(व्यवधान)**... और अभी जो पंचायतों के चुनाव हुए ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: माननीय मिस्री जी, आप वरिष्ठ सदस्य हैं, कृपया बीच में टीका-टिप्पणी न करें।

श्री राकेश सिन्हा: आप सुन तो लीजिए। ...**(व्यवधान)**... मोरारजी भाई देसाई की सरकार गिराने वाले आप ही थे। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: माननीय राकेश जी, आप इधर चेयर से बात करें।

श्री राकेश सिन्हा: देखिए, अभी 2018 में जब पंचायतों के चुनाव हुए, तो साढ़े चार हजार के करीब सरपंच और 32 हजार से अधिक पंच चुने गए। पहली बार वहां Block Development Council के 312 सदस्यों का चुनाव किया जा रहा है। पहले भी कांग्रेस ने कोशिश की, लेकिन Block Development Council के चुनाव पूरी तरह से नहीं हो पाए। लोकतंत्र पहली बार जनता के दरवाजे तक पहुंचा है। सामंती राजनीति कश्मीर से समाप्त हो रही है, उसका दर्द दिखाई पड़ रहा है। चाहे वह पीडीपी के रूप में हो, नेशनल कॉंफ्रेंस के रूप में हो, कांग्रेस के रूप में हो, यही दर्द दिखाई पड़ रहा है। इसलिए कश्मीर का इतिहास ये गलत तरीके से प्रस्तुत कर रहे हैं।

उपसभापति महोदय, मुझे बहुत दुख हुआ, जब यह कहा गया कि कश्मीर में आतंकवाद के लिए और आतंकवाद को बढ़ाने के लिए यह साढ़े चार साल की सरकार जिम्मेदार थी। विपक्ष के नेता गुलाम नबी आज़ाद जी ने जिस सामान्य तरीके से...

श्री उपसभापति: माननीय राकेश जी, आपका पाँच मिनट का समय पूरा हो रहा है, मैं आपसे आग्रह कर रहा हूँ कि आप अपनी बात खत्म करें।

श्री राकेश सिन्हा: मेरी पार्टी के पास इतना समय था, दो मिनट का समय तो मैं ले ही सकता हूं।

उपसभापति महोदय, गुलाम नबी आज़ाद जी ने जिस तरह से कश्मीरी पंडितों के वहां से छोड़ने के लिए एक सामान्य कारण बता दिया, वह बहुत ही असामान्य बात है। कश्मीर की घाटी में जिस प्रकार से radicalization की ताकतें सीमा के पार से नहीं, दुनिया के अन्य भागों से आकर कर रही हैं, जिसको patronage देने के लिए वहाँ हुर्रियत और दूसरी पार्टियां हैं, जिसके लिए आज विपक्ष के नेता ने हुर्रियत के प्रति अपना जो प्रेम दिखाया है, उसको जो एक वैधानिकता देने की कोशिश की है, वह साफ निंदनीय है। हम किसी भी ऐसी ताकत को legitimacy नहीं दे सकते हैं, जो कश्मीर में विभाजन की राजनीति के बीज बो रही है। यही कारण है कि कश्मीर में आतंकवाद की जो भी धाराएं हैं, उसके पीछे वह साजिश है, जेहादी ताकतों का हाथ है। उन जेहादी ताकतों को आपको identify करना पड़ेगा। सामान्य कश्मीरियों को उन जेहादी ताकतों से जोड़ने की गलती मत कीजिए।

अब में अंतिम बात कहना चाहता हूं। यदि जम्मू-कश्मीर को बदलना है, तो मैं एक बात बताना चाहता हूं कि जम्मू-कश्मीर को 2010 से लेकर 2016 तक जो पैकेज दिया गया है, वहां जम्मू-कश्मीर के प्रत्येक नागरिक को per head 93,000 दिया जा रहा है। पूरे हिन्दुस्तान में केन्द्र सरकार के जितने Central aids हैं, उनका 10 प्रतिशत एक प्रतिशत जनसंख्या को जा रहा है। इसलिए सरकारें जो भी हों, हमारे प्रयास रहे हैं, लेकिन इतिहास के उस बिन्दु को ठीक करके मैं अपनी बात समाप्त करता हूं कि कश्मीर में 1948 से लेकर लगातार पाकिस्तान की कोशिशें होती रही हैं और इसी सदन ने यह प्रस्ताव पारित किया है कि हम Pakistan Occupied Kashmir को लेकर रहेंगे, वह हमारा अभिन्न हिस्सा है। उपसभापति महोदय, 24 स्थान रिक्त पड़े हुए हैं, जो Pakistan Occupied Kashmir के नागरिकों के हैं। क्या यह सदन विचार करने के लिए तैयार है कि हम उन 24 लोगों को विधान सभा में nominate करके पाकिस्तान को संदेश दे दें कि हम लोकतांत्रिक प्रक्रिया को Pakistan Occupied Kashmir पहुंचाना चाहते हैं? यदि विपक्ष तैयार है, तो वह गृह मंत्री जी को सलाह दे ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: माननीय राकेश जी, आप अपनी बात समाप्त करें। ...**(व्यवधान)**... आप अपनी बात खत्म करें प्लीज़।

श्री राकेश सिन्हा: और हम 24 nomination करें ...**(व्यवधान)**... विधान सभा के चरित्र को बदलें। ...**(व्यवधान)**... मैं कांग्रेस के मित्रों को एक ही राय दूंगा। ...**(व्यवधान)**... मैं कांग्रेस के मित्रों को एक ही राय दूंगा कि आप श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी के बारे में चाहे तो कह लें, जोगमाया देवी जी का पत्र पढ़ लीजिए, जो श्यामा प्रसाद मुखर्जी की माँ थीं। उस पत्र को पढ़ने के बाद आप निर्णय लीजिए कि राष्ट्रवाद को आगे बढ़ाने का काम उनकी विरासत को लेकर बैठे हम कर रहे हैं या आप कर रहे हैं, कश्मीर में विभाजन आप पैदा कर रहे हैं कि हम पैदा कर रहे हैं। ...**(व्यवधान)**... जोगमाया देवी जी के पत्र को पढ़कर निर्णय लीजिए। धन्यवाद।

श्री उपसभापति: अब मैं माननीय मीर मोहम्मद फ़ैयाज जी को आमंत्रित करूंगा। कृपया बहुत संक्षेप में आप अपनी बात खत्म कीजिए।

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़ (जम्मू-कश्मीर): सर, आज मेरे कश्मीर पर बात हो रही है, ऐसे में आप मुझे अगर एक-दो मिनट का समय ही देंगे, तो उसमें मैं क्या बात कहूंगा?

†**جناب میر محمد فیّاض (جموں-کشمیر)** : سر آج میرے کشمیر پر بات ہو رہی ہے، ایسے میں آپ مجھے اگر ایک دو منٹ کا وقت ہی دیں گے، تو اس میں میں کیا بات کہوں گا؟

श्री उपसभापति: जो समय तय है, मैं उसका पालन कर रहा हूं।

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: सर, आज मुझे बड़ा अच्छा लगा कि कश्मीर के बारे में आज़ाद साहब से लेकर जेटली साहब तक बोले। आज इस सदन को पूरा देश देख रहा है। आज इन्होंने यहां पर कश्मीर के बारे में पूरा इतिहास सुनाया, लेकिन मुझे आज यह बात कहने में कोई हिचकिचाहट नहीं होगी कि कश्मीर में आज तक मासूम और निहत्थे लोगों का जो क़त्लेआम हुआ, आज यह बात साबित हो गई कि जो लोग दिल्ली में हैं, जो इक्तिदार में हैं, चाहे यहां से हों या वहां से, उन लोगों की वजह से ही वह सब कुछ हुआ था। कश्मीरियों ने अपने आप को पाकिस्तान के बजाय, जो एक मुस्लिम मेजॉरिटी स्टेट था, भारत के साथ जोड़ने का फैसला किया। कश्मीरियों ने यह फैसला लिया कि हम भारत के साथ जाएंगे। आज आज़ाद साहब ने भी एक बात कही और जेटली साहब ने भी कही। आज़ाद साहब ने कहा कि बीजेपी वाले यह कहेंगे, हमारे टाइम में 200 या 300 लोग मरे, हमने तो 1700 भी क्रॉस किए हैं। आज जो कश्मीरी वहां पर हैं, जिनके लिए आप यह कह रहे हैं, क्या आप आतंकवादी हैं? क्या आप दोनों में रेस लगी हुई है, कोई कॉम्पिटिशन हो रहा है कि हम किस साल में कितने कश्मीरियों को मारेंगे? आज जो कश्मीरी वहां पर पत्थर लेकर निकले हैं, वे क्यों निकले हैं? वह इतिहास आज यहां पर, पूरे देश ने और पूरे सदन ने सुना है। आज हमें पता चला कि इतिहास क्या है। चाहे वह D.C. Gul हो या कोई और हो, जो हुआ, वह इलेक्शन में हुआ या D.C. Gul ने किया, वास्तव में वह हुआ कहां से? वह यहां दिल्ली से हुआ। कश्मीरियों ने जो फैसला लिया था, उसके बदले में उनको क्या मिला? सिर्फ गोलियां मिलीं। आज यहां पर बात हो रही है कि वहां प्रेज़िडेंट रूल क्यों लगा? सर, हमारी पार्टी के लीडर, जनाब मुफ्ती मोहम्मद सईद साहब ने आज से साढ़े तीन साल पहले यह फैसला लिया। हमारे कश्मीर में जब भी कोई अच्छी बात आती है, तो हमारे जो कश्मीरी हैं, वे भरोसा करते हैं। श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने 2002 में, लाल किले से कहा कि हम कश्मीर में साफ-साफ इलेक्शन करवाएंगे, उनकी बात पर कश्मीरियों को भरोसा किया। देश की जनता ने मोदी जी को 300 सीटें दीं और हमारे लीडर, मुफ्ती मोहम्मद सईद साहब ने यह फैसला लिया कि देश की जनता ने वज़ीरे आज़म को मेंडेट दिया है, इसलिए कश्मीर का जो मसला है, जहां निहत्थे आम लोग मर रहे हैं। ...**(व्यवधान)**...

†Transliteration in Urdu script.

†**جناب میر محمد فیاض** : سر، آج مجھے بڑا اچھا لگا کہ کشمیر کے بارے میں آزاد صاحب سے لے کر جیٹلی صاحب تک بولے۔ آج اس سدن کو پورا دیش دیکھ رہا ہے۔ آج انہوں نے یہاں پر کشمیر کے بارے میں پورا اتہاس سنایا، لیکن مجھے آج یہ بات کہنے میں کوئی ہچکچاہٹ نہیں ہوگی کہ کشمیر میں آج تک معصوم اور نہتھے لوگوں کا جو قتل عام ہوا، آج یہ بات ثابت ہوگئی ہے جو لوگ دہلی میں ہیں، جو اقتدار میں ہیں، چاہے یہاں سے ہوں یا وہاں سے، ان لوگوں کی وجہ سے ہی وہ سب ہوا تھا۔ کشمیریوں نے اپنے آپ کو پاکستان کے بجائے، جو ایک مسلم میجورٹی اسٹیٹ تھا، بھارت کے ساتھ جوڑنے کا فیصلہ کیا۔ کشمیریوں نے یہ فیصلہ لیا کہ ہم بھارت کے ساتھ جائیں گے۔ آج آزاد صاحب نے بھی ایک بات کہیں اور جیٹلی صاحب نے بھی کہی۔ آزاد صاحب نے کہا کہ بی۔جے۔پی۔ والے یہ کہیں گے، ہمارے ٹائم میں 200 یا 300 لوگ مرے، ہم نے تو 1700 بھی کراس کئے ہیں۔ آج جو کشمیری وہاں پر ہیں، جن کے لئے آپ یہ کہہ رہے ہیں، کیا آپ آتنک وادی ہیں؟ کیا دونوں میں ریس لگی ہوئی ہے، کوئی کمپٹیشن ہو رہا ہے کہ ہم کس سال میں کتنے کشمیریوں کو ماریں گے؟ آج جو کشمیری وہاں پر پتھر لے کر نکلے ہیں، وہ کیوں نکلے ہیں؟ وہ اتہاس آج یہاں پر، پورے دیش نے اور پورے سدن نے سنا ہے۔ آج ہمیں پتہ چلا کہ اتہاس کیا ہے۔ چاہے وہ ڈی۔سی۔ گل ہو یا کوئی اور ہو، جو ہوا، وہ الیکشن میں ہوا یا ڈی۔سی۔ گل نے کیا۔ حقیقت میں وہ ہوا کہاں سے؟ وہ یہاں دہلی سے ہوا۔ کشمیریوں نے جو فیصلہ لیا تھا، اس کے بدلے میں ان کو کیا ملا؟ صرف گولیاں ملیں۔ آج یہاں پر بات ہو رہی ہے کہ وہاں پریزیڈینٹ رول کیوں لگا؟ سر، ہماری پارٹی کے لیڈر، جناب مفتی محمد سعید

†Transliteration in Urdu script.

[मीर मोहम्मद फ़ैयाज़]

صاحب نے آج سے ساڑھے تین سال پہلے یہ فیصلہ لیا۔ ہمارے کشمیر میں جب بھی کوئی اچھی بات آتی ہے، تو ہمارے جو کشمیری ہیں، وہ بھروسہ کرتے ہیں۔ شری اٹل بہاری واجپئی جی نے 2002 میں، لال قلعہ میں کہا کہ ہم کشمیر میں صاف صاف الیکشن کروائیں گے، ان کی بات پر کشمیریوں نے بھروسہ کیا۔ دیش کی جنتا نے مودی جی کو 300 سیٹیں دیں اور ہمارے لیڈر، مفتی محمد سعید صاحب نے یہ فیصلہ لیا کہ دیش کی جنتا نے وزیر اعظم کو مینڈیٹ دیا ہے، اس لئے کشمیر کا جو مسئلہ ہے، جہاں نہتھے عام لوگ مر رہے ہیں ---(مداخلت)---

श्री उपसभापति: फ़ैयाज़ जी, समाप्त करिए। ...**(व्यवधान)**...

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: सर, प्लीज़ ...**(व्यवधान)**...

†**جناب میر محمد فیّاض** : سر، پلیز ---(مداخلت)---

बहुत से माननीय सदस्य: सर, इनको बोलने दीजिए।

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: उसका कोई न कोई फैसला करेगा। लेकिन आज हमने देखा कि इस पर बात हो रही है कि किस महीने में कितने लोग मर रहे हैं। चौदह साल का बच्चा ...**(व्यवधान)**..

†**جناب میر محمد فیّاض** : اس کا کوئی نہ کوئی فیصلہ کرے گا۔ لیکن آج ہم نے دیکھا کہ اس پر بات ہو رہی ہے کہ کس مہینے میں کتنے لوگ مر رہے ہیں۔ چودہ سال کا بچّہ ---(مداخلت)---

श्री उपसभापति: समाप्त कीजिए। ...**(व्यवधान)**...

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: सर, मैं सिर्फ दो-तीन बातें कहूंगा, क्योंकि यह मेरे कश्मीर का मसला है। दो साल पहले इसी सदन में कश्मीर के विषय पर चार घंटे डिस्कशन चली। हमारे होम मिनिस्टर साहब All Party Delegation लेकर यहां से कश्मीर गए। ...**(व्यवधान)**...

†**جناب میر محمد فیّاض** : سر، میں صرف دو تین باتیں کہوں گا، کیوں کہ یہ میرے کشمیر کا مسئلہ ہے۔ دو سال پہلے اسی سدن میں کشمیر کے وشئے پر چار گھنٹے ڈسکشن چلی۔ ہمارے ہوم منسٹر صاحب، آل پارٹی ڈیلی گیشن لے کر یہاں سے کشمیر گئے ---(مداخلت)---

†Transliteration in Urdu script.

4.00 P.M.

श्री उपसभापति: फ़ैयाज़ जी, कन्क्लूड कीजिए, अदरवाइज़ मैं दूसरा नाम बुलाऊंगा। ...(**व्यवधान**)...

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: सर, सिर्फ तीन मिनट और दे दीजिए। ...(**व्यवधान**)...

†**جناب میر محمد فیّاض :** سر، صرف تین منٹ اور دے دیجئے ...(مداخلت)...

श्री उपसभापति: नहीं, ऑलरेडी आप चार मिनट बोल चुके हैं। आप अपनी बात जल्दी खत्म करें, ताकि मैं दूसरा नाम इन्वाइट करूं।

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: सर, दो ही मिनट दे दीजिए। वे वहां पर गए, उससे पहले कांग्रेस ने वर्किंग ग्रुप्स बनाए, लेकिन, सर, हुआ क्या? क्या आपने इस हाउस में कभी यह बात कही कि कश्मीर में जाकर हम कश्मीरियों से भी मिले और हमने वहां यह बात सुनी? ...(**व्यवधान**)...

†**جناب میر محمد فیّاض :** سر، دو ہی منٹ دے دیجئے۔ وہ وہاں پر گئے، اس سے پہلے کانگریس نے ورکنگ گروپس بنائے، لیکن سر، کیا ہوا، کیا آپ نے اس ہاؤس میں کبھی یہ بات کہی کہ کشمیر میں جاکر ہم کشمیریوں سے بھی ملے اور ہم نے وہاں یہ بات سنی؟...(مداخلت)...

श्री उपसभापति: फ़ैयाज़ जी, प्लीज़ कन्क्लूड करें। आप अब केवल अंतिम बात कहें। ...(**व्यवधान**)...

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: सर, मैं एक-दो मिनट और लूंगा। सर, कल आपने सुना होगा कि बीजेपी के एक दिग्गज नेता, श्री यशवंत सिन्हा जी ने कहा कि कश्मीर हमारे से दूर चला जा रहा है।

अगर यही बात मैं कहूंगा तो मुझे कहेंगे कि यह देशद्रोही है। जब यह बात बीजेपी के लोग कहते हैं, तो वे देशद्रोही नहीं हैं। ...(**व्यवधान**)...

†**جناب میر محمد فیّاض :** سر، میں ایک دو منٹ اور لوں گا۔ سر، کل آپ نے سنا ہوگا کہ بی۔جے۔پی۔ کے ایک دگّج نیتا، شری یشونت سنہا جی نے کہا کہ کشمیر ہمارے سے دور چلا جا رہا ہے۔ اگر یہی بات میں کہوں گا تو مجھے کہیں گے کہ یہ دیش دروہی ہے۔ جب یہ بات بی۔جے۔پی کے لوگ کہتے ہیں، تو وہ دیش دروہی نہیں ہیں ...(مداخلت)...

श्री उपसभापति: फ़ैयाज़ जी, आप खत्म कीजिए। ...(**व्यवधान**)...

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: जबकि सर, वह वसूख से कह रहा हूं कि कश्मीर भारत से दूर हो जा रहा है ...(**व्यवधान**)...

†Transliteration in Urdu script.

[मीर मोहम्मद फ़ैयाज]

†**جناب میر محمد فیّاض :** جبکہ سر، میں یہ وثوق سے کہہ رہا ہوں کہ کشمیر بھارت سے دور ہوتا جا رہا ہے ---(مداخلت)---

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. ...*(Interruptions)*...

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: यहां पर लोग उठते हैं और कहते हैं कि कश्मीर भारत का अटूट अंग है। ...(**व्यवधान**)...

†**جناب میر محمد فیّاض :** یہاں پر لوگ اٹھتے ہیں اور کہتے ہیں کہ کشمیر بھارت کا اٹوٹ انگ ہے ---(مداخلت)---

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. ...*(Interruptions)*...

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: जब तक आप कश्मीरियों को ...(**व्यवधान**)... कश्मीर दूर होता जा रहा है। ...(**व्यवधान**)...

†**جناب میر محمد فیّاض :** جب تک آپ کشمیریوں کو ---(مداخلت)--- کشمیر دور ہوتا جا رہا ہے ---(مداخلت)---

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. ...*(Interruptions)*... Now I will invite Shri V. Vijasai Reddy. ...*(Interruptions)*... Shri Majeed Memon. ...*(Interruptions)*...

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: सर, अब मैं एक ही बात बोलूंगा। ...(**व्यवधान**)...

†**جناب میر محمد فیّاض :** سر، اب میں ایک ہی بات بولوں گا ---(مداخلت)---

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Time is not there. ...*(Interruptions)*... Shri Majeed Memon. ...*(Interruptions)*...

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: सर, ...(**व्यवधान**)... एक बात बोलने दीजिए। ...(**व्यवधान**)...

†**جناب میر محمد فیّاض :** سر---(مداخلت)--- ایک بات بولنے دیجئے ---(مداخلت)---

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Last sentence. अब आप कन्क्लूड कीजिए।

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: सर, यहां पंचायत इलेक्शन की बात हुई। बात तो हुई, लेकिन मैं आज कहूंगा कि जो एक मुस्लिम मेजॉरिटी स्टेट है, आप सोचते हैं कि वह हमारे साथ ...(**व्यवधान**)...

†**جناب میر محمد فیّاض :** سر، یہاں پنچایت الیکشن کی بات ہوئی۔ بات تو ہوئی، لیکن میں اج کہوں گا کہ ایک مسلم میجورٹی اسٹیٹ ہے، آپ سوچتے ہیں کہ وہ ہمارے ساتھ ---(مداخلت)---

†Transliteration in Urdu script.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Majeed Memon. ...*(Interruptions)*... Otherwise, I will go ahead. ...*(Interruptions)*...

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: जहां आप मुसलमानों के नाम अगर किसी स्टेट में कोई ...(व्यवधान)... उसको कहते हैं कि हम यह करेंगे, तो हम भी कल कहेंगे कि श्रीनगर का नाम ...(व्यवधान)...

†**جناب میر محمد فیاض :** جہاں آپ مسلمانوں کے نام اگر کسی اسٹیٹ میں کوئی ---(مداخلت)--- اس کو کہتے ہیں کہ ہم یہ کریں گے، تو ہم بھی کل کہیں گے کہ سرینگر کا نام ---(مداخلت)---

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Shri Majeed Memon, please ...*(Interruptions)*... प्लीज़। ...**(व्यवधान)**... श्री माजीद मेमन, सिर्फ आपकी बात रिकॉर्ड पर जाएगी। ...(व्यवधान)...

मीर मोहम्मद फ़ैयाज़: *

جناب میر محمد فیاض : *

श्री उपसभापति: श्री माजीद मेमन, प्लीज़ आप शुरू करें। सिर्फ आपकी बात रिकॉर्ड पर जाएगी।

श्री माजीद मेमन (महाराष्ट्र): आदरणीय गृह मंत्री जी, आपने यह शेर सुना होगा

अगर फिरदौस बर रुये ज़मीं अस्त,
हमीं अस्तो, हमी अस्तो, हमी अस्ते। हमी अस्तो।

कश्मीर को जन्नत के साथ compare किया गया है। मगर बदकिस्मती से वह आज जल रहा है, खून से दहल रहा है।

श्री उपसभापति: माजीद जी, एक मिनट में आप कंक्रीट सुझाव दें कि आप क्या कहना चाहते हैं।

SHRI MAJEED MEMON: But, Sir, I will need at least a couple of minutes or a minute. Otherwise, I will sit down.

श्री उपसभापति: प्लीज़। आपमें इतनी क्षमता है, लियाकत है कि एक मिनट में आप बहुत कुछ कह सकते है।

श्री माजिद मेमन: सर, हमारी पार्टी के principles के मुताबिक मुझे सरकार को, भारत सरकार को और गृह मंत्री जी को दो चीज़ों की अपील करनी है। एक तो यह कि कश्मीर में अमन लाने के लिए मसस पावर के इस्तेमाल को कम किया जाए। सबसे पहली बात तो यह है। अगर आप मसल पावर का इस्तेमाल करके अपनी कामयाबी मिलिटेंट्स को मारने की संख्या के साथ नाप रहे हैं, तो आप सरासर गलत रास्ते पर जा रहे हैं, क्योंकि जब आप एक मिलिटेंट को मारते हैं, तो चार मिलिटेंट्स पैदा होते हैं। यह आतंकवाद से लड़ने का तरीका नहीं है कि हमने इतने मारे, इसलिए हमने सफलता प्राप्त की। इसलिए हमारी पहली अपील यह है कि आप वहां आतंक का इस्तेमाल

†Transliteration in Urdu script.
*Not recorded.

[श्री माजिद मेमन]

नहीं करें, फोर्स का इस्तेमाल नहीं करें, मिलिटरी की ताकत अपने ही कश्मीरी भाईयों के खिलाफ, जो भारत के साथ रहना चाहते हैं, उनके खिलाफ लड़ रहे हैं।

मुझे आपसे दूसरी अहम बात यह कहनी है कि जब पीडीपी-बीजेपी सरकार गिरी, उस वक्त वहाँ विकल्प बिल्कुल तैयार था और इतिहास हम सब जानते हैं, पूरा देश जानता है कि पीडीपी के साथ कांग्रेस, एनसी वगैरह ने गवर्नर साहब के सामने कहा कि हमें आमंत्रित किया जाए, तो उन्हें मौका क्यों नहीं दिया गया? वहां असेम्बली को भंग कर दिया गया और प्रेसिडेंट रूल लगा दिया। A popular Government has to be installed at the earliest hour, not day or week or month. Why is Kashmir having no Government? And every day people are being killed. Let me tell the hon. Home Minister this universal maxim that perpetual injustice breeds terrorism.

श्री उपसभापति: धन्यवाद, माजीद मेमन साहब। अब आप कन्क्लूड कीजिए।

SHRI MAJEED MEMON: And if Kashmiris feel that injustice is being inflicted upon them, they would take the gun and take the course of terrorism.

श्री उपसभापति: धन्यवाद। Please conclude.

श्री माजीद मेमन: तो मेरी इन दो चीज़ों का आग्रह माननीय मंत्री जी से है।

श्री राजाराम (उत्तर प्रदेश): उपसभापति महोदय, काफी लम्बे समय से मैं विद्वान साथियों को सुन रहा हूं। हिस्ट्री पर चर्चा हो रही है। मैं वर्तमान की दो-तीन बातें बोलना चाहूंगा।

महोदय, वर्तमान में जम्मू-कश्मीर की आज जो स्थिति है, वह मैं बताना चाहता हूं। मैं वहां जाता रहता हूं। जम्मू-कश्मीर में आज के जम्मू रीज़न की अगर हम बात करें, तो करीब 30-35 परसेंट वहां दलित समाज के लोग हैं। वहां दलित समाज के लोगों की तादाद 30-35 परसेंट है। वे लोग continuous आन्दोलन पर हैं कि हमें प्रमोशन में रिजर्वेशन चाहिए। इसी हाउस में बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष बहन कुमारी मायावती जी ने लम्बा संघर्ष किया और यह बिल यहां से पास हुआ। मैं माननीय सुप्रीम कोर्ट का आभार व्यक्त करूंगा, यह बिल यहां से पास हुआ, लेकिन वह लोक सभा में लटका हुआ है। माननीय सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद भी राज्य सरकारों ने उसको लटका कर रखा। सत्ता में जो लोग बैठे हैं, लम्बे समय तक जो वहां सत्ता में रहे, जो लोग वहां लम्बे समय से आन्दोलनरत हैं, आज तक उन्हें न्याय नहीं मिला है।

मैं दूसरी बात कहना चाहूंगा। वर्ष 1990 में देश में मंडल आयोग की रिपोर्ट लागू हो गई है। उसे करीब 28 साल बीत गए हैं लेकिन इन 28 सालों में, जम्मू एक ऐसा स्टेट है, जहां OBC को 2 परसेंट रिजर्वेशन मिलता है, क्या इस पर विचार नहीं होना चाहिए? जम्मू रीज़न में आप देखें, बहुत बड़ी तादाद OBC के लोगों की है।

मैं तीसरी बात कहना चाहूंगा क्योंकि आप एक मिनट में घंटी बजा देंगे। तीसरी बात करके खत्म करता हूं। ...**(व्यवधान)**... मैं आपके घंटी बजाने से पहले अपनी बात खत्म कर देता हूं कि सीज़फायर

का violation वहां हमेशा होता है, लगातार होता है। उसमें मवेशी भी मारे जाते हैं और हमारे तमाम लोग भी injure होते हैं लेकिन जब वे मुआवजे के लिए दौड़ते हैं तो उन्हें मुआवज़ा तक नहीं मिलता। उनकी जमीन acquire कर ली जाती है, उन्हें जमीन नहीं मिलती, उसका compensation नहीं मिलता। इसलिए मैं आपसे निवेदन करूंगा कि वहां की history पर बहुत चर्चा हो गई, वर्तमान में स्थिति यह है कि वहां से 6 लोक सभा की सीटें हैं, उन 6 सीटों पर आज तक इतिहास में कभी दलित चुनाव जीतकर नहीं आया। वहां रिज़र्वेशन नहीं है। रिज़र्वेशन न होने से, उसमें कोई बंधन नहीं होता है कि जनरल सीट पर किसी एस.टी. को नहीं लड़ा सकते। ...**(व्यवधान)**... आप लड़ा क्यों नहीं सकते हैं? ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: आप टिप्पणी न करें। ...**(व्यवधान)**...

श्री राजाराम: वहां राज्य सभा की 4 सीटें हैं। दलित प्रेम इधर भी दिखाई देता है, ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: कृपया आपस में बात न करें। ...**(व्यवधान)**... आप अपनी बात कहें।

श्री राजाराम: दलित प्रेम इधर भी दिखता है, दलितप्रेम उधर भी दिखता है। जब 4 राज्य सभा की सीटें हैं तो कम से कम इतिहास में एक तो दलित राज्य सभा में आ जाता। लोक सभा में भी एक सीट पर कोई दलित नहीं आया। यह इतिहास है, history है, इस पर कोई नहीं बोलेगा। इन शब्दों के साथ उपसभापति जी, मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बोलने का समय दिया। मैंने मुख्य पॉइंट्स बहुजन समाज पार्टी की तरफ से सदन के संज्ञान में लाए हैं। उम्मीद करता हूं कि सरकार इर पर विचार करेगी।

MR. DEPUTY CHAIRMAN: आपने समय-सीमा के तहत बहुत pointed चीजें सदन में रखीं, धन्यवाद। Now, I invite Shri T.K.S. Elangovan.

SHRI T.K.S. ELANGOVAN (Tamil Nadu): Hon. Deputy Chairman, Sir, I belong to a party which is demanding more powers and State autonomy. In fact, our leader, Dr. Kalaignar M. Karunanidhi, had conducted many conferences on State autonomy and we wish that if a provision like Article 370 is made use of in all States and is made applicable to all States, it will be a relief to the States.

Sir, I don't want to go out of the subject. I am quoting the Governor's statement while dissolving the Assembly. The Governor said that there was the impossibility of forming a stable Government by the coming together of political parties with opposing political ideologies. The second point was that there were reports of extensive horse-trading and possible exchange of money in order to secure the support of legislators. These are the two main reasons the Governor has quoted. Sir, there is the other scenario. There were two claimants to form a Government in the State. One was the erstwhile Chief Minister, Ms. Mufti. She claimed that she had the support of 12 Congress MLAs and 15 National Conference MLAs.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please be brief. You have only two minutes.

SHRI T. K. S. ELANGOVAN: Sir, I will take only one-and-a-half minutes. On the other side, Sajjad Lone claimed that he had his two MLAs, 26 BJP legislators and 18 other law makers. Ms. Mufti claimed that she had the support of two political parties but Mr. Lone claimed that he had the support of 18 other law-makers along with the support of BJP. Who are the other law-makers? It means, who was involved in horse trading is very much obvious. Sir, when the hon. Finance Minister was speaking, he represented the Government. If the Government has something to say as a reason, when they resort to past history, it means they do not have anything to say. They accept that they have erred. It is more or less a confessionary statement on the part of the Government.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. It is already two minutes. ...*(Interruptions)*...

SHRI T. K. S. ELANGOVAN: I have only two points to make, Sir. One, the Government has no defence on this Resolution.

Secondly, in a democracy, only the people should elect Governments and remove Governments. Ironically, in our country, we see fax machines and EVMs are removing Governments and electing Governments. I do not know where our democracy goes.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Thank you. श्री संजय सिंह जी। माननीय श्री संजय सिंह जी, चूंकि बहुत कम समय है, इसलिए आप अपनी प्वाइंटेड बात कहें।

श्री संजय सिंह: महोदय, आपको बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने इस महत्वपूर्ण विषय पर मुझे अपनी बात कहने का अवसर दिया। हम लोग बचपन से ही एक बात सुनते आ रहे हैं कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत एक है और हम लोग इस बात में पूरा भरोसा करते हैं, यकीन करते हैं कि कश्मीर से कन्याकुमारी तक भारत एक है, लेकिन अगर देश के किसी हिस्से के लोगों को यह महसूस होने लगेगा सरकार के व्यवहार के कारण, सरकार के आचरण के कारण कि उनके साथ सौतेला व्यवहार किया जा रहा है, तो निश्चित रूप से उनके मन में यह असंतोश पैदा होगा केन्द्र सरकार के प्रति, दिल्ली में बैठी हुई सत्ता के प्रति और यही पिछले सालों में हुआ है, जिसकी कहानी सत्ता पक्ष से भी और विपक्ष से भी हम लोगों ने सुनी है।

आपने चुनाव के बाद जम्मू-कश्मीर में एक गठबंधन किया और मैं उस गठबंधन के बारे में कहना चाहता हूं कि वह अनैतिक गठबंधन था, क्योंकि भारतीय जनता पार्टी की सरकार पूरे देश में प्रमाण पत्र मांगती है कि अफजल गुरु के साथ खड़े हो या अफजल गुरु के खिलाफ खड़े हो। हम लोग तो अफजल गुरु के खिलाफ खड़े हैं, लेकिन जो पार्टी, पीडीपी अफजल गुरु को शहीद मानती है, उसके साथ मिल कर आप जम्मू-कश्मीर में सरकार बनाते हैं। दो गलत विचाराधारओं का मिलन वहां पर होता है। आप इस सवाल को खड़ा करते हैं।

दूसरी बात यह है कि जम्मू-कश्मीर के लोगों के साथ आपका व्यवहार क्या है? आप वहां के लोगों का विश्वास किस प्रकार से जीत पाएंगे? मान्यवर, कठुआ के अंदर आठ साल की एक बच्ची का बलात्कार होता है, बेटी बेटी होती है, चाहे वह हिन्दू की हो, मुसलमान की हो, सिख की हो, ईसाई की हो, दलित की हो, सवर्ण की हो, लेकिन बहुत शर्म के साथ यह बात कहनी पड़ रही है, पता नहीं भारतीय जनता पार्टी के लोगों को शर्म आती है या नहीं आती है, लेकिन मुझे शर्म आती है, देश के लोगों को शर्म आती है कि उस आठ साल की बच्ची के बलात्कारियों के समर्थन में भारतीय जनता पार्टी के तीन-तीन मंत्री उसकी रैली करने जाते हैं, उसका समर्थन करने जाते हैं। ...**(व्यवधान)**... आप जम्मू-कश्मीर के लोगों के विश्वास कैसे जीत सकते हैं? ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: माननीय संजय सिंह जी, दो मिनट कंप्लीट हो गये, please conclude. ...*(Interruptions)*... Please conclude. ...*(Interruptions)*... कृपया आप बैठें। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय सिंह: मान्यवर, मैं सरकार से यह कहना चाहता हूं कि आप यह धमकीबाजी मत कीजिए। ...(व्यवधान)...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. ...*(Interruptions)*... आप already दो मिनट बोल चुके हैं, please conclude. ...*(Interruptions)*...

श्री संजय सिंह: सर, दिल्ली में एक सरकार चल रही है, उस सरकार को आप एल.जी. के माध्यम से चलाते हैं। ...**(व्यवधान)**... कश्मीर में एक सरकार चल रही है, उस सरकार को आप राजभवन से चलाते हैं। मणिपुर में, अरुणाचल प्रदेश में, उत्तराखंड में, पूरे देश में आप राजभवन से सरकार चला रहे हैं। यह राजभवन, राजभवन में तब्दील हो गया है। केन्द्र सरकार के इस मोदी जी की सरकार के दौरान, इसलिए अपना डंडा मत चलाइए, अपनी तानाशाही मत चलाइए, बल्कि कश्मीर के लोगों का विश्वास जीजिए, वहां की घटनाओं पर पूरी तरह से नज़र रखिए और वहां के लोगों का विश्वास जीतने का काम कीजिए। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: माननीय संजय जी, कृपया आप conclude करें। आप तीन मिनट का समय ले चुके हैं, अब आप conclude करें। ...**(व्यवधान)**...

श्री संजय सिंह: दुर्भावना से काम मत कीजिए। ...**(व्यवधान)**... राज्यों के प्रति आपकी दुर्भावा दिल्ली से लेकर कश्मीर, कश्मीर से लेकर अरुणाचल प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश से लेकर उत्तराखंड, गोवा, मणिपुर, पूरे हिन्दुस्तान में दिख रही है। ...**(व्यवधान)**...

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Please conclude. ...*(Interruptions)*... Sanjayji, please conclude. ...*(Interruptions)*...

श्री संजय सिंह: सर, इस देश के लोकतांत्रिक ढांचे को बचाने की जरूरत है। इस देश के संवैधानिक मूल्यों को बचाने की जरूरत है। ...**(व्यवधान)**...

श्री उपसभापति: संजय जी, आप अपनी बात को conclude करें। अब मैं अगले वक्ता को आमंत्रित करूंगा। कृपया आप समय का पालन करें।

श्री संजय सिंह: सर, बड़े अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि भारतीय जनता पार्टी के लोग, जो दूसरों से राष्ट्र भक्ति का प्रमाण पत्र मांगते हैं, ये लोग राष्ट्र धर्म को निभाने का काम नहीं करते हैं, राष्ट्र के साथ द्रोह करने का काम कर रहे हैं, राष्ट्र को तोड़ने का काम कर रहे हैं, बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री उपसभापति: अब इस बहस का जवाब माननीय गृह मंत्री जी देंगे।

गृह मंत्री (श्री राजनाथ सिंह): उपसभापति महोदय, सबसे पहले मैं लीडर ऑफ अपोज़िशन, डीएमके, एआईडीएमके, समाजवादी पार्टी, बहुजन समाज पार्टी, जनता दल (यू), आप, सीपीएम, सीपीआई, पीडीपी और सभी राजनीतिक पार्टियों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूंगा।

(**श्री सभापति** *पीठासीन हुए*)

श्री देरेक ओब्राईन: सर, हमारा नाम भी ले दीजिए।

श्री अनुभव मोहंती: सर, बीजेडी भी बोल दीजिए।

श्री राजनाथ सिंह: मैं टीएमसी, बीजेडी और सारी राजनीतिक पार्टियों के नेताओं के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहूंगा। मैंने all parties बोल दियाहै।

श्री सभापति: प्लीज़, प्लीज़ ...**(व्यवधान)**... आप सभी पोलिटिकल पार्टीज़ बोल दीजिए।

श्री राजनाथ सिंह: महोदय, सभी पार्टियों ने जम्मू-कश्मीर, जिसे एक बहुत ही संवेदनशील राज्य माना जाता है, उसे हम एक strategic State के रूप में मानते हैं, इस विषय पर चर्चा करने में अपनी सहमति दी है और सभी ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। उन विचारों से मैं सहमत भी हो सकता हूं, उन विचारों से मैं असहमत भी हो सकता हूं, लोकतंत्र में सहमति और असहमति यह एक स्वाभाविक प्रक्रिया होती है। मैं यह कहना चाहता हूं कि इस बार जो राज्यपाल शासन लागू हुआ और राष्ट्रपति शासन लागू किए जाने के लिए जो proclamation राष्ट्रपति महोदय द्वारा हुआ है, उसका अनुमोदन करने के लिए हम लोग जो यहां पर बहस कर रहे हैं, इस पर मैं आपको बताना चाहता हूं कि यह पहली बार नहीं हुआ है, इसके पहले भी कई बार हुआ है। वे सब आंकड़े, मैं यह नहीं बताना चाहता हूं कि यह कब-कब हुआ है, कितन-कितने महीने तक राज्यपार शासन रहा है या कितने महीने तक राष्ट्रपति शासन रहा है, लेकिन मैं इस बात की चर्चा जरूर करना चाहता हूं कि राज्यपाल शासन कई बार रहा है, वहां पर कांग्रेस पार्टी की भी लम्बे समय तक हुकूमत रही है, कांग्रेस पार्टी के शासन काल में कई बार राज्यपाल शासन और राष्ट्रपति शासन लगे हैं। एक बार ऐसे हालात पैदा हो गए थे कि लगातार छः वर्षों तक राष्ट्रपति शासन लगे हैं। एक बार ऐसे हालात पैदा हो गए थे कि लगातार छः वर्षों तक राष्ट्रपति शासन को जम्मू-कश्मीर में बनाए रखना मजबूरी हो गई थी। इस बार जो राज्यपाल शासन लागू हुआ है, उसमें हम लोगों के ऊपर इल्ज़ाम लगाया जा रहा है कि वहां पर हम लोगों की गलतियों के कारण इस तरह के हालात पैदा हुए हैं और वहां हमारी सरकार के द्वारा एक साजिश की गई, ताकि कोई दूसरी गवर्नमेंट न बन पाए, लेकिन मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि हम लोगों की intention पर डाउट नहीं किया जाना चाहिए। कहीं पर किसी प्रकार की कोई साजिश नहीं की गई है। मैं आपके माध्यम से यही जानकारी सदन को देना चाहता हूं कि जिस समय भारतीय जनता पार्टी का यह फैसला हुआ कि भारतीय जनता पार्टी उनसे अपना समर्थन वापस

लेगी, यह किन कारणों से समर्थन वापस लिया गया, इसके विस्तार में जाने का भी कोई औचित्य नहीं है और मैं जाना भी नहीं चाहता हूं, इसकी सूचना जब तत्कालीन गवर्नर को दी गई, तो गवर्नर ने भारतीय जनता पार्टी के नेताओं से, कांग्रेस के नेताओं से, पीडीपी और नेशनल कॉंफ्रेंस के नेताओं से भी बातचीत की और यह कहा कि यदि आप किसी प्रकार के alliance से गवर्नमेंट बनाना चाहते हो, तो आप अपना अभिमत दीजिए। सभापति महोदय, मैं आपको कुछ जानकारी देना चाहता हूं, उस समय की गवर्नर की पूरी रिपोर्ट यहां पर हमारे पास मौजूद है, उस समय सभी ने यह कहा कि यहां पर गवर्नमेंट बनने के हालात नहीं हैं। किसी भी राजनीतिक पार्टी के पास स्पष्ट बहुमत नहीं है और कोई भी राजनीतिक पार्टी एक-दूसरे से मिलने के लिए तैयार नहीं है, तो मजबूरी में वहां राज्यपाल शासन लागू करना पड़ा। राज्यपाल शासन लागू होने के बाद, जब छ: महीने समाप्त हो रहे थे, उस समय भी यह दावा किया गया कि एनसी, कांग्रेस और पीडीपी तीनों राजनीतिक पार्टियां मिलकर सरकार बनाना चाहती हैं। सभापति महोदय, मैं आपको बताना चाहता हूं कि हमारी स्वयं गवर्नर से बात हुई है, गवर्नर ने स्वयं यह कहा है कि मैंने अपनी तरफ से सभी से पहले भी बातचीत की है, ऐसी कोई पहल नहीं हुई है कि हम सभी मिलकर, तीनों राजनीतिक पार्टियां मिलकर सरकार बनाना चाहती हैं। उन्हें मजबूरी में अपनी रिकमंडेशंस राष्ट्रपति महोदय को भेजनी पड़ीं और राष्ट्रपति महोदय ने राष्ट्रपति शासन का proclamation करने का काम किया।

सभापति महोदय, मैं यह भी कहना चाहता हूं कि sense of alienation पैदा करने का जो आरोप लगाया जाता है, sense of alienation पैदा करने के लिए हम या हमारी पार्टी जिम्मेदार नहीं है। अगर हम यह चर्चा करना प्रारंभ करेंगे कि sense of alienation किसने पैदा किया, आज़ादी के पहले यह किसने पैदा किया, मैं कहना चाहता हूं कि यह डिटेलस में जाने का समय नहीं है। उसी sense of alienation के कारण ही भारत के दो टुकड़े हो गए, भारत और पाकिस्तान बन गया। उस समय तो हमारा वजूद भी नहीं था। मैं यह जानना चाहता हूं कि जब लम्बे समय तक भारत की राजनीति में हमारा कोई खास वजूद नहीं था, प्रभावी वजूद नहीं था, फिर भी आज़ादी के पहले लोगों के अंदर जो sense of alienation पैदा हुआ था, उस sense of alienation को minimise करने के लिए अथवा neutralise करने के लिए किसको पहल करनी चाहिए थी? लेकिन, कोई पहल नहीं हुई।

सभापति महोदय, मैं यह विश्वास के साथ कहना चाहता हूं कि हम किसी भी सूरत में भारत में sense of alienation नहीं चाहते हैं। Sense of alienation कैसे minimise हो, sense of alienation कैसे neutralise हो, इसके लिए जितने भी maximum efforts हो सकते हैं, हम लोगों ने अपनी तरफ से करने की कोशिश की है। हमारे नेता विपक्ष, जनाब गुलाम नबी आज़ाद साहब ने कहा कि कश्मीर में 80-90 फीसदी मुस्लिम थे, जिन्होंने पाकिस्तान के साथ जाना स्वीकार नहीं किया, बल्कि उन्होंने भारत के साथ ही बने रहना पसंद किया। जहां तक भारत के मुसलमानों का सवाल है, उसमें मैं जम्मू-कश्मीर की भी बात करता हूं, उसमें केवल कश्मीर और जम्मू के मुसलमान ही नहीं हैं, बल्कि सारे हिन्दुस्तान के बड़ी संख्या में ऐसे मुसलमान थे, जिनकी जनसंख्या पाकिस्तान की जनसंख्या से अधिक थी, उन्होंने पाकिस्तान के साथ जाना स्वीकार नहीं किया, बल्कि भारत के साथ ही रहना स्वीकार किया था। लेकिन, आज जिस तरीके से appeasement की पॉलिसी का एक सिलसिला चल पड़ा है, मैं समझता हूं कि उसके कारण यह संकट निरंतर गहरा होता चला जा रहा है। सभापति

[श्री राजनाथ सिंह]

महोदय, मेरा यह मानना है और हमारी पार्टी का भी यह मानना है कि यदि राजनीति की जानी चाहिए, तो इंसाफ और इंसानियत की राजनीति की जानी चाहिए, तुष्टीकरण की राजनीति नहीं की जानी चाहिए। इस संकट को minimise करने के लिए जो भी पहल हो सकती है, वह पहल करने के लिए हमारी पार्टी पूरी तरह से, बराबर प्रयत्न करती है और हम लोग भी अपनी तरफ से प्रयत्न करते हैं।

जहां तक कश्मीर की समस्या का सवाल है, नेता प्रतिपक्ष महोदय ने यह कहा कि हम लोगों के समय में इतना अधिक development हुआ था कि वह development के मामले में एक golden period था। यदि वह golden period था और जम्मू-कश्मीर के लोग development ही चाहे हैं, तो फिर आपके शासन-काल में इस प्रकार के हालात क्यों पैदा हुए थे? इतना ही नहीं, जहां तक development का सवाल है, यदि मैं सारे आंकड़े दूंगा, तो उसमें आधे घंटे-45 मिनट का समय लगेगा। सभापति महोदय, मैं दावे के साथ यह कह सकता हूं कि development के चार-साढ़े चार वर्षों के इस काल में प्रधान मंत्री ने स्वयं रुचि लेकर जितना fund allocation किया है, उतना fund allocation जम्मू-कश्मीर के लिए आज तक कभी नहीं हुआ था। मैं आंकड़े नहीं दूंगा, क्योंकि इसके पहले भी 80-81 हज़ार करोड़ के पैकेज की चर्चा भी हमारे राकेश सिन्हा जी ने की है, जो वहां दिया गया है।

आपने unemployment की बात की कि unemployment एक major problem है, major challenge है। उसको भी resolve करने के लिए जो efforts हमारी सरकार के शासन काल में हुए हैं, उनकी थोड़ी-सी चर्चा मैं यहां पर जरूर करना चाहूंगा। सभापति महोदय, 255 करोड़ रुपये की लागत से एक साथ पांच नई India Reserve Battalions पहली बार किसी सरकार ने जम्मू-कश्मीर को दी है और उनमें लगभग 5,000 लोगों की भर्ती हो चुकी है। हम लोगों ने दो Border Battalions की भी मंजूरी प्रदान की है और उनमें भी लगभग 2,500 नौजवानों की भर्ती होगी। इसी प्रकार, भारत सरकार द्वारा 150 करोड़ रुपये की धनराशि की सहायता दो महिला बटालियंस को स्वीकृत करने के लिए प्रदान की गई है और उनमें भी चयन का काम चल रहा है। "उड़ान योजना" कांग्रेस के शासन काल में ही प्रारम्भ हुई थी और उसमें भी लगभग 20,000 नौजवानों को रोज़गार का अवसर विभिन्न क्षेत्रों में मिल चुका है, चाहे वह organised retail sector हो, banking sector हो, financial services हों या IT sector हो। जम्मू-कश्मीर पुलिस विभाग में भी इन चार-साढ़े चार वर्षों के अंदर ही लगभग 10,000 नए SPOs की नियुक्ति के लिए भी हम लोगों ने आदेश केवल जारी ही नहीं किया है, बल्कि लगभग 7,000 SPOs की नियुक्ति हो चुकी है और आज जम्मू-कश्मीर में ऐसे SPOs की संख्या लगभग 35,474 हो गई है। कई प्रकार से केवल चार-साढ़े चार वर्षों के अंदर non-gazetted officers की लगभग 8,531 ऐसी पोस्ट्स क्रिएट करने का काम हमारी सरकार ने किया है। इतना ही नहीं, इसके अतिरिक्त भी वहां की ग्रास रूट डेमोक्रेसी को strengthen करने के लिए यहां पर श्री अरुण जेटली जी ने भी इसकी चर्चा की है और कई माननीय सदस्यों ने भी चर्चा की है। हो सकता है कोई यह कहे इस समय पंचायत इलेक्शन अथवा वहां के अर्बन लोकल बॉडीज़ के इलेक्शन कराने का माहौल नहीं था। यदि देखें तो ऐसे हालात 30-35 वर्षों के इतिहास में बराबर बने रहे हैं। क्या वहां पर पॉलिटिकल प्रॉसेस शुरू नहीं किया जाना चाहिए, क्या ग्रासरूट डेमोक्रेसी को ताकतवर बनाने के लिए सरकार द्वारा प्रयास नहीं किया जाना चाहिए। हम लोगों ने यह जोखिम उठाया और मुझे यह

कहते हुए बहुत खुशी हो रही है कि जितनी उम्मीद नहीं थी, उतनी कामयाबी हम लोगों ने इस बार पंचातय के चुनाव में और नगर निकाय के चुनावों में हासिल की है। हमको इतनी उम्मीद नहीं थी। हम लोगों ने आगे बढ़कर बेधड़क इस काम को किया है।

जहां तक रिलीफ़ और रीहैबिलिटेशन का सवाल है, इस संबंध में भी हम लोगों ने बहुत सारे कदम उठाए हैं और हम लोगों ने जम्मू-कश्मीर को अच्छी-खासी धनराशि मुहैया करायी है। मैं इसके भी विस्तार में नहीं जाना चाहता हूं। वहां के terror incidents की बात, जिसकी चर्चा बार-बार आयी है कि वहां पर terror incidents बहुत हो रहे हैं। Terror incidents कोई पहली बार चार-साढ़े 4 वर्षों के शासनकाल में हो रहे हों, ऐसा नहीं है। Terror incidents इससे पहले भी होते रहे हैं, हमारे नेता प्रतिपक्ष ने भी इस सच्चाई को स्वीकार किया है और एक बार तो ऐसे हालात हो गए थे कि वर्ष 1995 में वहां पर 5,938 आतंकवादी घटनाएं हुईं थीं। जहां तक वर्ष 2017 का सवाल है, केवल 342 आतंकवादी घटनाएं हुई हैं, लेकिन हम आतंकवादी घटनाओं के आधार पर अपने को जस्टिफाई नहीं करना चाहते कि हमने कमाल कर दिया है। हमारी कोशिश तो यह है कि जम्मू-कश्मीर, जिसे हमारे हिन्दुस्तान का एक स्वर्ग माना जाता है, जन्नत माना जाता है, वहां पर एक भी आतंकवादी घटना न होने पाए। यह हम लोगों की कोशिश है। कहा यह जाता है कि हम लोगों ने अपनी तरफ से कोई पॉलिटिकल प्रोसेस शुरू करने की पहल नहीं की है। हमने क्या-क्या पहल की है, यदि उसकी भी मैं चर्चा करूं तो कम से कम आधे घंटे का समय लगेगा इसलिए उस डिटेल में भी मैं नहीं जाना चाहता हूं। जब-जब मैं गया हूं और मैं कह सकता हूं कि आज तक जितनी बार 4 वर्षों के अंदर वहां पर कोई होम मिनिस्टर गया है और बार-बार लोगों के साथ बातचीत की है और अन्य लोगा, जो दूसरे स्टेकहोल्डर्स हैं, उनसे भी अपनी तरफ से बातचीत करने की अपील की है। मैं कह सकता हूं कि शायद विगत 25-30 वर्षों के इतिहास में नहीं हुआ है। इतनी बार मैं स्वयं वहां गया हूं। ऑल पार्टी डेलिगेशन लेकर आया हूं, जिसमें हमारे कई नेता मौजूद थे। हमारे गुलाम नबी आज़ाद साहब प्रमुख रूप से मौजूद थे, पूरी कोशिश हुई। डी. राजा साहब भी थे, शरद यादव जी भी इस समय इस सदन के सदस्य थे, वे भी थे, सीताराम येचुरी साहब भी उस समय एक सदस्य थे। शायद राम गोपाल जी, आप नहीं गए थे। इन लोगों ने आकर मुझसे कहा कि हम लोग वहां के हुर्रियत के नेताओं से भी मिलना चाहते हैं। यह एक धारणा बनी हुई थी कि भारतीय जनता पार्टी के लोग हुर्रियत के नेताओं से बात नहीं करना चाहते हैं, इसी कारण इस प्रकार की एक ठहराव की स्थिति जम्मू-कश्मीर में बनी हुई है। जब इन लोगों ने हमसे पूछा तो मैंने कहा कि जब आप लोगों ने फैसला किया है तो आप लोग जाकर बात कीजिए। महोदय, मैं आपको जानकारी देना चाहता हूं कि जब ये लोग बात करने के लिए उनके दरवाज़े पर गए तो उन लोगों ने अपना दरवाज़ा बन्द कर लिया था। इन लोगों से भी उन लोगों ने बातचीत नहीं की। वे वहां पर बात करने गए थे, उन लोगों ने यदि बात कर ली होती तो शायद कुछ न कुछ एक रास्ता और खुल गया होता। इतना ही नहीं, अपनी तरफ से उस समय वहां की मुख्य मंत्री महबूबा मुफ्ती साहब से स्वयं मैंने कहा था कि अपनी तरफ से आप पूरी कोशिश कीजिए कि यदि वे हम लोगों से बात करना चाहते हैं तो हम उनसे बात करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। हमारा दरवाज़ा बात करने के लिए खुला हुआ है। हम अनकंडीशनल बात करने के लिए तैयार थे, लेकिन उसके बावजूद भी उधर से जो इनीशिएटिव लिया जाना चाहिए था, कोई इनिशिएटिव नहीं लिया गया। जिस तरह से उन्हें हमारे इनीशिएटिव पर response करना चाहिए था, उन्होंने response नहीं किया। फिर भी जब-जब हमारी इन लोगों से भेंट होती है, हमारे विपक्ष

[श्री राजनाथ सिंह]

के नेताओं से भी, गुलाम नबी आज़ाद साहब हों या कोई अन्य हों, मैं बार-बार यही आग्रह करता हूं। आज़ाद साहब बैठे हैं, मैंने इनसे पूछा है। इनसे मैंने पूछा है और जम्मू-कश्मीर के सारे लीडर्स से मैं पूछता हूं कि आप मुझे यह बतलाओ कि यहां के हालात को बेहतर बनाने के लिए और यहां पर एक अच्छा-खासा माहौल पैदा करने के लिए क्या पहल की जानी चाहिए? वन, टू, थ्री, फोर, फाइव। यह चीज़ बतलाइए। हम वे सब करने के लिए तैयार हैं और ऐसा नहीं है कि वहां पर शांति का माहौल पैदा हो जाए। हम किसी का कोई सहयोग नहीं लेना चाहते हैं। सारा का सारा श्रेय हम लेना चाहते हैं। यह सवाल केवल जम्मू-कश्मीर का नहीं है। यह भारत की एकता, अखंडता और संप्रभुता का कमाल है, उसमें हम सभी का सहयोग लेकर अपने कदम आगे बढ़ाना चाहते हैं।

सभापति महोदय, वैसे बहुत सारी बातें हमारे सम्माननीय सदस्यों ने की हैं और मैं यहां पर बहुत विस्तार में जाकर चर्चा नहीं करूंगा। लेकिन एक बात यह आई है कि वहां के गवर्नर ने एक्ट्स में बहुत सारे amendments कर दिए हैं। मैं यह जानना चाहता हूं कि कौन-सा amendment वहां के गवर्नर ने किया है या राज्यपाल शासन में किया गया है, जिसके कारण जम्मू-कश्मीर का नुकसान हुआ है। ठीक है, जो पंचायत राज एक्ट है, उसमें जो भी संशोधन किया गया है, उसके बारे में मैं यह बताना चाहता हूं कि उसमें जो भी हम लोगों ने किया है, वह अपने में बेमिसाल है। वह क्यों किया गया है? यह मैं जानकारी देना चाहता हूं। यह क्यों किया गया है? हम लोगों ने इसमें amendment क्यों किया है? पहले पंचायतों के पास जितने financial powers थे, हम लोगों ने उसको 10 गुना बढ़ाया है। अब यह अपराध है। क्या हमें अपनी लोकल बॉडीज़ या स्थानीय इकाइयों को मजबूत नहीं करना चाहिए। Healthy Democracy तो वही कही जाती है। नीचे की इकाई मजबूत होनी चाहिए। गवर्नेन्स यानी ठीक तरीके से चलाई जा सकती है, जनता के सेंटीमेंट्स को ध्यान में रखकर भी चलाई जा सकती है। जो हमारी सबसे निचली गवर्नमेंट होती है, धरातल की जो गवर्नमेंट होती है, उसके मजबूत रहने पर ही यह काम संभव हो पाता है। कई अधिकार भी जैसे कि प्राइमरी हेल्थ सेंटर, प्राइमरी स्कूल्स, आंगनवाड़ी सेंटर्स इत्यादि को भी हम लोगों ने उनके हवाले सौंप दिया है और आज जिस प्रकार का संशोधन हुआ है, आज जम्मू-कश्मीर राज्य का यह पंचायती राज मॉडल आज देश का सर्वश्रेष्ठ मॉडल बन गया है मैं यह बात विश्वास के साथ कह सकता हूं। तो इस प्रकार की कुछ पहल, जो भी हम लोगों ने की है, वह जम्मू-कश्मीर के interest में की है, उसके हितों को ध्यान में रखकर अपनी तरफ से की है।

सभापति महोदय, इसलिए मैं सारे सम्माननीय सदस्यों से अनुरोध करना चाहता हूं कि जम्मू-कश्मीर में शांति की बहाली के लिए जो भी इनके सुझाव होंगे, वे सारे सुझाव मैं स्वीकार करने के लिए भी तैयार हूं, उसके आधार पर आगे बढ़ने के लिए तैयार हूं और हमारी सरकार भी उसके लिए पूरी तरह से तैयार है। इसलिए यह कहना कि वहां पर इस प्रकार के जो हालात बने हुए हैं, उसके लिए हम लोग जिम्मेदार हैं, वह उचित नहीं होगा। विशेष परिस्थितियों में यह सब कुछ हुआ है। कुछ लोगों ने यह जानना चाहा कि क्या इसके बाद आप वहां पर चुनाव कराने के लिए तैयार हैं या नहीं हैं। चुनाव कराना तो इलेक्शन कमीशन का काम होता है, लेकिन मैं सदन को आश्वस्त करना चाहता हूं कि हम लोगों की तरफ से कहीं पर कोई बाधा नहीं है। वहां पर इलेक्शन कमीशन को चुनाव संपन्न कराने के लिए जितनी भी सिक्योरिटी फोर्सेज़ की आवश्यकता होगी, यदि वह मांगेगा तो हम

सारी सिक्योरिटी फोर्सेज़ भी उसको मुहैया कराने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। मैं पुन: इन्हीं शब्दों के साथ जिन महानुभावों ने इस चर्चा में अपने विचार व्यक्त किए हैं, उन सबके प्रति अपना आभार व्यक्त करते हुए अपना निवेदन समाप्त करता हूं। इस अनुरोध के साथ जो statutory motion हमने मूव किया है, जम्मू-कश्मीर में राष्ट्रपति के proclamation को, उनकी उद्घोषणा को अप्रवू करने के लिए, कृपया उसे अप्रूव करने की कृपा करें।

MR. CHAIRMAN: I shall now put the Statutory Resolution moved by the Minister to vote. The question is put. ...*(Interruptions)*...

SHRI GHULAM NABI AZAD: Just one clarification. We are supporting this, everybody is supporting this. जम्मू-कश्मीर हो या इस तरह से जहां आतंकवाद हो या सिक्योरिटी का प्रॉब्लम हो, उसके बारे में हमेशा इलेक्शन कमीशन सरकार से पूछता है, वह साधारण स्टेट की तरफ से अपने आप में नहीं करता, मैं माननीय गृह मंत्री जी से यह पूछना चाहता हूं कि पार्लियामेंट के इलेक्शन अभी दो महीने के बाद हो रहे हैं, क्या यह सरकार इलेक्शन कमीशन को पार्लियामेंट के साथ इलेक्शन करने के लिए अपनी तरफ से यह करेगी कि पार्लियामेंट और विधानसभा इलेक्शन साथ-साथ हों?

†**جناب غلام نبی آزاد :** Just one clarification. We are supporting this, everybody is supporting this. جموں وکشمیر ہو یا اس طرح سے جہاں آتنک واد ہو یا سکیورٹی کا پرابلم ہو، اس کے بارے میں ہمیشہ الیکشن کمیشن سرکار سے پوچھتا ہے۔ وہ اپنے آپ سے نہیں کرتا، سادھارن اسٹیٹ کی طرف سے۔ میں مانیئے گرہ منتری جی سے یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ پارلیمنٹ کے الیکشن ابھی دو مہینے کے بعد ہورہے ہیں، کیا یہ سرکار الیکشن کمیشن کو پارلیمنٹ کے ساتھ الیکشن کرنے کے لیے اپنی طرف سے یہ کہے گی کہ پارلیمنٹ اور ودھان سبھا الیکشن ساتھ ساتھ ہوں۔

श्री राजनाथ सिंह: सभापति महोदय, यदि इलेक्शन कमीशन चाहता है तो हमारी सरकार को कोई आपत्ति नहीं होगी।

MR. CHAIRMAN: The question is:

"That this House approves the Proclamation issued by the President on 19th December, 2018 under article 356 of the Constitution of India in relation to the State of Jammu and Kashmir".

The motion was adopted.

---

†Transliteration in Urdu script.

MR. CHAIRMAN: We have taken 35 minutes extra than scheduled. But, anyhow, सभी सदस्यों का धन्यवाद कि आप सभी सदस्यों ने समय का पालन करने का प्रयास किया।

GOVERNMENT BILLS — *Contd.*

The National Council for Teacher Education (Amendment) Bill, 2018

MR. CHAIRMAN: Further consideration of the following motion moved by Shri Prakash Javadekar on 26th July, 2018. On that day on 26th July, 2013, Dr. D.P. Vats had concluded his speech while participating in the discussion. Any other Member desiring to speak may do so, and after that the Minister will reply. ...*(Interruptions)*... Hon. Members, please. ...*(Interruptions)*... Now Prof. M.V. Rajeev Gowda. ...*(Interruptions)*...आपके पास टोटल 25 मिनट का समय है। आपकी पार्टी के तीन सदस्य बोलने वाले हैं। आप इस बात का ध्यान रखें और फिर जितना समय आप लेना चाहें, उतना लें। ...(व्यवधान)... वही बेहतर होगा। हमारे सामने दो बिल्स हैं, बहुत छोटे बिल्स हैं। Please bear with me. Do something good, at least, on this day. ...*(Interruptions)*...

PROF. M. V. RAJEEV GOWDA (Karnataka): Thank you, Mr. Chairman. Happy to do something good. I rise to speak on the National Council for Teacher Education (Amendment) Bill. Sir, the ordinal purpose of this Act was to establish a National Council for Teacher Education with a view to achieve planned and coordinated development of the teacher education system around the country. What does this Bill do? It grants retrospective recognition to various institutions and universities which started teacher education programme. ...*(Interruptions)*...

MR. CHAIRMAN: Hon. Members, What is this? ...*(Interruptions)*... You should sit in your seats or withdraw quietly if you want to go, we nave no problem, if you want to come back, you can come back afterwards; if you don't want to return to the House, that is a different matter. Please take your respective seats. The hon. Member is speaking.

PROF. M. V. RAJEEV GOWDA: It basically grants retrospective recognition to various teacher training programmes that are not recognized by the NCTE. Now this is a band-aid measure, a stop-gap measure which is aimed at ensuring that students who have gone through this programme are not penalised. But this is an opportunity wasted. Here you are taking the time of the House to bring in an amendment to the NCTE. There is much more that could have been done at this point to actually improve the functioning of the NCTE. One of the major concerns that I have is that NCTE is a very empowered organisation which has been functioning according to its full potential.